

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180884

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—67—11-1-68—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 82

Accession No. H 4079

Author

V 29 K .
वररकर, भा. वि.

Title

कोरी करामाँ १.

This book should be returned on or before the date last marked below

कोरी करामात

हमारा रोचक नाट्य-साहित्य

विष-पान (ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.००
स्वप्न-भंग (ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.५०
उद्धार (ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.५०
शपथ (सांस्कृतिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.५०
छाया (सामाजिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.००
शतरंज के खिलाड़ी (ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.५०
समर्पण (सामाजिक)	जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'	१.७५
शक-विजय (ऐतिहासिक)	उदयशंकर भट्ट	१.७५
विश्वामित्र और दो भाव नाट्य	उदयशंकर भट्ट	३.००
उर्मिला (ऐतिहासिक)	पृथ्वीनाथ शर्मा	१.००
सुभद्रा-परिणय (पौराणिक)	वीरेन्द्रकुमार गुप्त	२.००
शक्ति-पूजा (पौराणिक)	वी० मुखर्जी 'गुंजन'	१.२५
शान्ति-दूत (समस्यात्मक पौराणिक)	देवदत्त 'अटल'	१.२५
मानव प्रताप (ऐतिहासिक)	देवराज 'दिनेश'	२.००
यज्ञस्वी भोज (ऐतिहासिक)	देवराज 'दिनेश'	१.५०
हर्षवर्धन (ऐतिहासिक)	वेकुण्ठनाथ दुग्गल	१.००
रेडियो-नाटक (विभिन्न प्रकार के नाटक)	हरिश्चन्द्र खन्ना	६.००
पग-ध्वनि (गांधी आदर्शों पर आधारित)	आचार्य चतुरसेन शास्त्री	१.५०
वितस्ता की लहरें (ऐतिहासिक)	लक्ष्मीनारायण मिश्र	१.५०
समाज के स्तम्भ (इब्सन) (सामाजिक)	सीता चरण दीक्षित	२.००
आनन्द का राजपथ	सीताचरण दीक्षित	२.००
गधे (सचित्र बालोपयोगी प्रहसन)	हबीब तनवीर	१.००
भमि कन्या सीता (ऐतिहासिक)	भा० वि० वरेरकर	१.२५
कला के लिए (कलात्मक)	भा० वि० वरेरकर	१.२५
अ-पूर्व बंगाल (सामाजिक)	भा० वि० वरेरकर	१.२५
कोरी करामात (सामाजिक)	भा० वि० वरेरकर	१.५०
गार्गी के बाल-नाटक	पारितोष गार्गी	१.२५
रेलगाड़ी के डिब्बे (एकांकी-संग्रह)	अरुण एम० ए०	२.००
बादलों के पार (एकांकी)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	३.००
आदिम-युग (एकांकी-संग्रह)	उदयशंकर भट्ट	४.००
सफ़र की साथिन (हास्य रस एकांकी)	रामसरण शर्मा	१.७५
एकांकी समुच्चय	जयनाथ 'नलिन'	३.००
ऐतिहासिक दृश्य (सचित्र)	श्यामलाल	१.५०
मनु तथा अन्य एकांकी	लक्ष्मीनारायण मिश्र	प्रेस में

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

कोरी करामात

लेखक

भा० वि० वरेरकर

“अपूर्व बंगाल”, “भूमि कन्या सीता”, “कला के लिए”
इत्यादि नाटकों के लेखक

अनुवादक

र० श० केलकर, एम. ए.

१९५७

आत्माराम एण्ड संस

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता

काश्मीरी गेट

दिल्ली-६

प्रकाशक

रामलाल पुरी

आत्माराम एण्ड संस

काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

[सर्वाधिकार सुरक्षित]

मूल्य रु० १.५०

मुद्रक

सूची प्रेस

चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

प्रस्तावना

काँग्रेस द्वारा शासनाधिकार ग्रहण करते ही अब तक वर्जित विषय को लेकर लिखने का जो मैंने संकल्प किया था उसी के परिणाम स्वरूप यह नाटक लिखा गया है ।

इस विषय को लेकर सब से पहले सिनेमा के लिए कहानी लिखी गई थी । कहानी का विषय यही था पर कथानक भिन्न था । तथापि वह कहानी लेने का साहस चल-चित्र निर्माताओं में न था । आज की ही भाँति उस समय भी सिनेमा निर्माता इस विषय के विरोधी थे, अतः वह कहानी रूपहरे पदों पर न आ सकी ! उसी समय यानी १९३७ के अन्त में यह नाटक लिखा गया तथा १९३९ में अभिनीत भी होने जा रहा था । रिहर्सलें हो चुकी थीं पर नाटक की प्रमुख अभिनेत्री के चले जाने के कारण यह नाटक अभिनीत नहीं हो सका । सब बातें ठीक ठीक होतीं तो यह नाटक जनवरी १९३९ में रंगमंच पर आ जाता ।

१ अगस्त १९३९ को बम्बई शहर में पूर्ण रूप से शराबबन्दी हो गई । अच्छा होता यदि यह नाटक शराबबन्दी होने के पहले अभिनीत होता । शराबबन्दी होने के बाद उपस्थित होनेवाली समस्याओं को लेकर जो घटनायें इस नाटक में आई हैं वे आज शराबबन्दी हो जाने के बाद भी ठीक ठीक उतर रही हैं । इसीलिए आज इस नाटक का अनुवाद होते समय उस में कुछ भी फेरफार नहीं किया गया है । मेरी हादिक इच्छा है कि दिल्ली में पूर्ण रूप से शराबबन्दी होने के पहले यह नाटक अभिनीत हो और ऐसा होना अब असम्भव भी नहीं ।

नाटक के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है वह बोल-चाल की भाषा हुआ करती है, विद्वान साहित्यिकों की साहित्यिक भाषा नहीं । मेरी हादिक इच्छा है कि ऐसी अभिनयानुकूल भाषा जिस प्रकार मराठी में प्रयोग में लाई गई है उसी प्रकार हिन्दी में भी लाई जाय ।

इस नाटक के अनुवादक श्री २० श० केलकर ने—जो महाराष्ट्रीय होने के साथ साथ हिन्दी भाषी भी हैं—मेरी कसौटी पर खरी उतरनेवाली भाषा को लेकर इस नाटक का अनुवाद किया है। अतः मुझे पूरी आशा है कि इस नाटक का सफल अभिनय हो सकेगा।

जिस लगन से श्री रामलाल पुरी मेरे नाटकों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने में जुटे हुए हैं उसके लिए उन्हें धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

हाजी कासम वाड़ी, बम्बई }
२६ जनवरी, १९५७ }

—मामा घरेरकर

पात्र परिचय

पुरुष-पात्र

दीवान	... प्रभास का पिता
प्रभास	... दीवान का बेटा
प्रकाश	... इन्स्पेक्टर
मालिक	... बॉर का मालिक
वैटर	
मजदूर, स्वयंसेवक आदि	

स्त्री-पात्र

फिरोज	... दीवान की बेटी तथा प्रभास की बहन
मणि	... प्रभास की भावी पत्नी
स्वयंसेविकाएँ	

कोरी करामात

पहला अंक

[शराब की दुकान का भीतरी भाग—प्रेक्षागृह के सामने काउंटर है—उसके पीछे वेटरों के आने जाने भर की जगह है—सबसे पीछे दोनों ओर बोतलों से भरी हुई अलमारियाँ हैं—दोनों ओर की अलमारियों के ठीक बीचों बीच अन्दर जाने के लिए दरवाजा है, जो बन्द है । काउंटर की दाहिनी ओर अन्दर आने के लिए दरवाजा है । बोतलों से भरी हुई अलमारियों के ऊपर एक बड़ी-सी घड़ी है—पर्दा उठते समय एक वेटर काउंटर साफ कर रहा है, घड़ी में ८-४० बजे हैं । क्षण भर बाद घंटी बजती है तथा भीतरी दरवाजे से मालिक आता है । वेटर चौककर सलाम करता है तथा पुनः सफाई करने लगता है, काउंटर के मध्य भाग का तख्ता उठाकर मालिक बाहर आता है तथा क्षण भर के लिए घड़ी की ओर देखता है ।]

मालिक—क्या बज गया ? आठ इकतालीस—ठीक । उन्नीस मिनट के बाद आज दिन दहाड़े कतल की रात शुरू हो जायगी ! हं—आखिर यह हुआ ! सुना ? आखिर यह हुआ ! कोई फायदा न हुआ । एक-एक शहर में प्रयत्न करते-करते इन लोगों को विश्वास हो गया है ! धोखा है, धोखा ! शराब-बन्दी करने चले हैं ! जहाँ अमरीका ने इतनी कोशिश कर ली वहाँ ये लोग—जाने दो—हम क्यों अपने मुंह से कहें ? जो होगा वह आप ही दिखाई पड़ेगा ! देखो—आज आखिरी दिन है । जो चाहो कीमत ले लो ! समझे ?—आज की आमदनी में से दो आने २० तुम्हारा—समझे ? दो आने तुम्हारे ! बेधड़क कीमत बतलाओ—मुंह देखो—कपड़े देखो—ज़रा अकल इस्तेमाल करो और जो ज़बान पर आंकड़ा आए माँग लो—हाँ !—क्या समझे ? एक के

सौ बना लो तो भी आज कोई पूछने वाला नहीं !—सुन लिया ? आज अकेले से काम न चलेगा—और चार आदमी मदद के लिए रख लो—दस रख लो—पन्द्रह रख लो—पर एक क्षण भी कोई खाली न रहने पाए !

बेटर—आज मिलेगा कौन ? सब अपनी-अपनी जगह आज जल्दी में होंगे ।

मालिक—मुँह माँगी मजदूरी दो—दूसरे से दुगुनी दो—तिगुनी दो—मेरी इजाजत का इन्तज़ार न करो । मैं तुम्हें आज सारे अधिकार दे रहा हूँ ! समझे ?—आज तुम मालिक हो । मुझे तो आज कहीं छिपकर बैठना चाहिए । लोग गिला करेंगे—सुन लो—(भीतर शोरगुल सुनाई पड़ता है) मैं जाता हूँ । सोच विचार में न पड़ो । ज़िन्दगी भर की दरिद्रता आज दूर हो जानी चाहिए—तुम्हारी और मेरी भी—गुड डे—(जल्दी-जल्दी दाहिनी ओर से जाता है । बेटर हँसता है ।)

[स्थान—समय—परिवर्तन । स्वयंसेवकों की पलटन मार्च करती हुई आती है । प्रभास उसका कप्तान है । सब एक ओर से गुज़र जाते हैं । दूसरी ओर से कॅप्टन फ़िरोज़ स्वयंसेविकाओं की टुकड़ी को ले जाती है ।]

[पुनः—स्थान—काल—परिवर्तन]

[पहले दृश्य की ही भाँति—दाहिनी ओर के बाहरी दरवाज़े की ओर से मालिक आता है तथा बाईं ओर के दरवाज़े से भीतर मदिरालय से बेटर आता है । मध्य स्थान में दोनों मिलते हैं । उस समय बन्द कमरे में से शराबियों का शोरगुल सुनाई पड़ रहा है । घड़ी में ग्यारह बज रहे हैं । मालिक और बेटर बात-चीत के दौरान में बराबर घड़ी की ओर देख रहे हैं ।]

मालिक—सब ठीक ठाक चल रहा है न ?" (बेटर हँसता है) ठीक । अब ऐसा करो तुम लोग । समय पूरा होने वाला है—बाहर पुलिस घूम रही है—स्वयंसेवक भी चक्कर लगा रहे हैं—यही सावधान रहने का समय है ! सुनो—ऐसा करो—(मालिक नौकर का भेदभाव भूलकर उसके गले में हाथ डाले कानाफूँसी करता है तभी दाहिनी ओर का दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ आती है) कौन है ? दरवाज़ा क्यों पीट रहे हो ?

आवाज—(बाहर से) दरवाजा खोलो—दरवाजा किसने बन्द किया ?
(मालिक दरवाजा खोलता है तथा अन्दर आने वाले की ओर हँसकर देखता है । तभी वेटर अन्दर जाता है । रह रह कर भीतरी शोरगुल सुनाई पड़ रहा है । प्रभास प्रवेश करता है)

प्रभास—यह बाँर है या कोई मन्दिर ? दरवाजा क्यों बन्द किया था ?
जान जा रही है हमारी और यहाँ दरवाजा बन्द करके क्या षड्यन्त्र चल रहे हैं ? बोलो—हँसते क्या हो—बोलो—क्यों बन्द किया था दरवाजा ?

मालिक—(हँसते हुए) धमा कीजिएगा—मैं भी क्या करूँ ? आदमियों के बैठने के लिए भी तो जगह चाहिए । चींटी गुजरने तक की जगह नहीं !—मैं भी क्या करूँ ? मैं पैसा नहीं चाहता ! यह कमाई का दिन !—(ठंडी साँस भरकर) आखिरी दिन ! हाँ !—आखिरी दिन !—अच्छा—आप हैं—हम हैं—सरकार है और 'वह' भी है । मुर्गा छिपा देने से सवेरा हुए बिना न रहेगा—क्या चाहिए ?

प्रभास—चाहिए क्या । यहाँ आने वाला क्या चाहता है ? यहाँ आने वाला भी क्या कहीं फूल तुलसी माँगता है—

मालिक—ठीक है पर कौनसी ?

प्रभास—कौनसी ? (हँसता है) क्या आज भी पसन्द नापसन्द के लिए गुंजाइश है ? आज जो भी मिल जाय—जितनी मिल जाय—जब मिल जाय—

मालिक—जी नहीं, बारह के पहले ! अच्छा—क्या लाऊँ ?

प्रभास—जो चाहो ले आओ—समझे ? जो चाहो—न हो तो सभी प्रकार की एक पीपे में उँड़ेल दो—टोटी को खबर की नली लगाओ और मुझे पकड़ा दो—देख लेना मरते दम तक पीता हूँ या नहीं ! (मालिक घंटी बजाता है । वेटर आता है—वह उसके कान में कुछ कहता है) कानाफूसी न करो—समझे ? साफ-साफ कहो—मुझे ठगना चाहते हो—मैं नशे में गाफिल नहीं हूँ—धोखा न खाऊँगा—क्या समझे ? सुबह से पी रहा हूँ पर चढ़ी नहीं । चढ़ ही नहीं सकती ! लबों तक जान आई है और कहते हैं चढ़ेगी !—जोर से बोलो—(वेटर जाता है)

मालिक—इधर अन्दर आइए—

प्रभास—अन्दर ? नहीं ! यहाँ—यहीं ले आओ । मैं उन शराबियों में बैठूँ ! हूँ ! शराबियों में बैठा रहा है मुझे ! देखो—सूँघकर देखो—पर मेरी ज़वान तो नहीं लड़खड़ा रही है ? मैं उन शराबियों में बैठूँ ? घड़ी की ओर क्या देख रहे हो ?—बन्द कर दो उस घड़ी को—कह रहा हूँ न बन्द कर दो ! हँसते क्या हो ? बन्द करो उस घड़ी को ! कहते हैं शराबबन्दी करेंगे ! मानो पूमीकुट जॉन्सन के ही अवतार हों ! क्या हुआ अमरीका में ? कितने दिन चली शराबबन्दी ? और अमरीका से भी आगे बढ़े ये अकलमन्द, शराबबन्दी करने जा रहे हैं ! (हँसता है) लाओ—लाओ—कितनी देर कर रहे हो—जान निकल रही है मेरी ! तुमने कभी पी है ? नहीं ? और तुम शराब की दुकान—चला रहे हो ! (हँसता है) ठीक भी है—तुम्हीं पीने लगे तो हमारे लिए क्या बचेगा !—तुम पीते नहीं यही अच्छा है ! कितनी देर !—कितनी देर ! (उसकी गर्दन पकड़कर) कुछ दया आती है या नहीं तुम्हें ?

मालिक—लो आ गया—वह भी क्या करे बिचारा ? पन्द्रह नये आदमी रखे हैं आज—पर किसी को साँस लेने तक की फुरसत नहीं ?

प्रभास—कहो साँस बन्द करके पिलाएँ ! कम्बख्त साँस ले रहे हैं—हमारी जान निकल रही है और ये साँस ले रहे हैं !—चलो—जल्दी करो । (स्वयं बेल बजाता है—) चलो—चलो जल्दी—(बेटर आता है)

बेटर—यही न ? (गिलास पकड़ाता है—सोडा डालने लगता है)

प्रभास—ठहरो—ठहरो—सोडा नहीं—बिना सोडे की, एकदम शुद्ध—अन्दर तक जलाती चली जाय—पानी मिलाओगे तो चढ़ेगी ! समझे ? पानी ठीक नहीं—सोडा ठीक नहीं—नशा चढ़ता है पानी से, शराब से नहीं ! (पीते पीते) तुम ये शास्त्र नहीं जानते !—(ठण्डी साँस लेकर) समाप्त हुआ सारा शास्त्र—आज से कुछ भी न मिलेगा—आकाश गंगा की ओर ताकते रहना पड़ेगा !—मरने को जी करता है—पीते पीते मर जाने को ! लाओ—और लाओ ! (बेटर बोतल में से शराब उँडेलने लगता है—मालिक उसे आँख से इशारा करता है)

आवाज—(बाहर दाहिनी ओर से) ठहरो—(दोनों चौंकते हैं—मालिक हँसता हुआ दरवाजे की ओर जाता है—)

मालिक—आइये—आइये—अभी काफी मिनट बाकी हैं—(बेटर उँडेलता है, प्रभास पीने लगता है)

आवाज—ठहरो—रखो वह गिलास नीचे !

प्रभास—आ गई यह देवयानी !—

फिरोज—(अन्दर आती हुई) हाँ !—देवयानी ही !—वह माना हुआ भाई था—यह सगा भाई है ! दादा, क्या चल रहा है यह सब ?

प्रभास—दिखाई नहीं देता ? शराब चल रही है—हलक के नीचे जा रही है !

फिरोज—रखो यह गिलास नीचे ?—शरम नहीं आती ? किसके बेटे हो तुम ! यह क्या कर रहे हो ?

प्रभास—बदला ले रहा हूँ बाप से ! समझीं—वह नहीं जानते थे कि उन्हीं का बेटा इतना शराबी है ! इसीलिए न उन्होंने ये सब किया ? देखो—एक बार पीकर देखो—दुबारा नहीं आएगा ऐसा मौका ! तुम पीओ और मिताजी से कहो कि वह भी पीकर देखें, फिर करें शराबबन्दी ! सुनो—सुनो—देखो कितना शोरगुल हो रहा है अन्दर ! क्या मैं कर रहा हूँ वैसा शोरगुल—देखलो, कैसा चुपचाप पी रहा हूँ ! लगातार पी रहा हूँ सुबह से ! थोड़ी पीओ न फिरोज !—अरे हाँ, भूल गया था, (मालिक से) यह मेरी बहन है फिरोज ! (मालिक सिर झुकाता है) शराबबन्दी करने वाली पुलिस की मुखिया—(हँसता है) ये औरतें करेंगी पुलिस का काम !—औरतें !—हं हं हं : ! औरतें ! लड़कियाँ !—कल फ्राक पहनने वाली लड़कियाँ आज साड़ियाँ पहन कर पुलिस का काम करेंगी !—

फिरोज—दादा !

प्रभास—लड़कियाँ करेंगी पुलिस का काम ! शराबबन्दी करेंगी ? शराब भी कभी बन्द हुई है ? कल सूरज से भी कहोगी कि न निकले !—

फिरोज—दादा !

प्रभास—चुप रहो !

फिरोज—मरिण आ रही है—

प्रभास—मरिण आ रही है ?—कहाँ ? यहाँ ?

फिरोज—पुलिस के नाते !

प्रभास—कहती हो मरिण पुलिस बनी है । कैसे आश्चर्य की बात है—मरिण पुलिस बन गई ! फिरोज पुलिस बन गई ! और हम लोग क्या कर रहे हैं ?—शराब पी रहे हैं !—क्या करें ? न पी कर करें भी क्या ! कितने मिनट बाकी हैं ?—

फिरोज—रक्खो वह गिलास नीचे !

प्रभास—पाँच मिनट के बाद मौत आयी चाहती है और यह है जो मेरे मुँह में गंगा जल भी नहीं पडने देती ! कहावत है कि औरतें निष्ठुर होती हैं, वह बात झुठ नहीं ! अन्नतं साहसं माया मूर्खत्वं अतिलोभता, अशौचत्वं निर्दयत्वं—

फिरोज—चुप रहो !—

प्रभास—यह संस्कृत है ! बन्दी शराब की है, संस्कृत की नहीं, शराब बन्द कीजिए—हम सोमपान करेंगे—यज्ञ करेंगे—यज्ञ देवताओं को सोमपान का हविर्भाग देकर हम यज्ञदेवताओं का प्रसाद सेवन करेंगे ! मरिण पुलिस बन गई, ऐं !—वेटर, और लाओ—जल्दी लाओ—मरिण के आने से पहले—जल्दी—जल्दी—मरिण पुलिस बन गई !

फिरोज—दादा, मरिण का पुलिस बन जाना तुम्हें चुभ रहा है—और यदि मरिण तुम्हें यहाँ इस हालत में देख ले तो !—आज तक मैंने तुम्हारा यह रहस्य छुपाए रक्खा—

प्रभास—क्यों छुपाए रक्खा ? उसे पहले ही क्यों नहीं बता दिया ? क्यों नहीं बता दिया, बोलो ?

फिरोज—तुमने खुद क्यों नहीं बताया ?

प्रभास—मैंने खुद क्यों नहीं बताया ! मुझे शरम लगी !—सुन लिया ? मुझे शरम लगी । मैं शराबी हूँ पर बेशर्म नहीं, इसी लिए मैंने उसे नहीं बताया ।

तुम बता दो—अब बता दो—यह आखिरी घड़ी है—अब बता दो—बुलाओ उसे यहाँ और बता दो, कि प्रभास पक्का शराबी है—

फिरोज़—आज तक था—आज शराबबन्दी होने जा रही है—

प्रभास—तो भी प्रभास शराब पीएगा ! पिता के चलाए हुए शराबबन्दी के कानून को बगल में दबाए शराब पीएगा ! समझ गयी ! —मरिण पुलिस बन गई, ऐं ! सुना मालिक, ये लड़कियाँ पागल हैं ! आज तक हम लोगों ने इन्हें घर में बन्द रक्खा था ! १९३० में उस महात्मा ने इन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया, तभी से ये बछड़े की भाँति बहकी-बहकी छलांगें मारने लगीं हैं ! लड़कियाँ पुलिस बनने लगीं, ऐं !

फिरोज़—दादा, घड़ी की ओर देखो !—

प्रभास—यह काम तुम लोगों का है । देखने के लिए गर्दन घुमाने से मेरा उतना समय व्यर्थ जायगा ! तुम्हीं देखो, और एक दो मिनट बाकी रहते ही मुझे सेकण्ड बताने लगे !

फिरोज़—पिताजी आते होंगे—

प्रभास—सुना—सेकण्ड बताने लगे !—

फिरोज़—स्वयंसेवक की पोशाक में तुम्हें उन्होंने पीते हुए देख लिया तो—

प्रभास—मालिक, दरवाजे की ओर ध्यान रखिए—

मालिक—जी !—

प्रभास—अच्छी तरह ध्यान रखिए । और यहाँ एक आदमी रहने दीजिए । इन बर्तनों को उसे फौरन उठाना होगा !—(पीने लगता है)

फिरोज़—यदि अब पीना बन्द ही कर दो तो ?

प्रभास—(हँसता है) पगली हो ! (पीता है)

फिरोज़—पिताजी की मुझे चिन्ता नहीं—पर दादा, यदि मरिण आ जाय तो !—(प्रभास उसकी ओर देखते हुए पीते-पीते रुक जाता है) पिताजी की आँखों में धूल भोंकोगे ! ठीक है, मैं भी तुम्हारी मदद करूँगी—पर मरिण ? उसे मैं धोखा नहीं दूँगी !—अब तो बिल्कुल नहीं दूँगी ! समझे ? साफ-साफ कह दूँगी—

प्रभास—चुप रहो !

फिरोज—मरिण आ रही है—

प्रभास—मरिण आ रही है ?—कहाँ ? यहाँ ?

फिरोज—पुलिस के नाते !

प्रभास—कहती हो मरिण पुलिस बनी है । कैसे आश्चर्य की बात है—मरिण पुलिस बन गई ! फिरोज पुलिस बन गई ! और हम लोग क्या कर रहे हैं ?—शराब पी रहे हैं ।—क्या करें ? न पी कर करें भी क्या ! कितने मिनट बाकी है ?—

फिरोज—रक्खो वह गिलास नीचे !

प्रभास—पाँच मिनट के बाद मौत आयी चाहती है और यह है जो मेरे मुँह में गंगा जल भी नहीं पड़ने देती । कहावत है कि औरतें निष्ठुर होती हैं, वह बात झुठ नहीं । अन्नन्तं साहसं माया मूर्खत्वं अतिलोभता, अशौचत्वं निर्दयत्वं—

फिरोज—चुप रहो !—

प्रभास—यह संस्कृत है ! बन्दी शराब की है, संस्कृत की नहीं, शराब बन्द कीजिए—हम सोमपान करेंगे—यज्ञ करेंगे—यज्ञ देवताओं को सोमपान का हविर्भाग देकर हम यज्ञदेवताओं का प्रसाद सेवन करेंगे ! मरिण पुलिस बन गई, ऐं !—वैटर, और लाओ—जल्दी लाओ—मरिण के आने से पहले—जल्दी—जल्दी—मरिण पुलिस बन गई !

फिरोज—दादा, मरिण का पुलिस बन जाना तुम्हें चुभ रहा है—और यदि मरिण तुम्हें यहाँ इस हालत में देख ले तो !—आज तक मैंने तुम्हारा यह रहस्य छुपाए रक्खा—

प्रभास—क्यों छुपाए रक्खा ? उसे पहले ही क्यों नहीं बता दिया ? क्यों नहीं बता दिया, बोलो ?

फिरोज—तुमने खुद क्यों नहीं बताया ?

प्रभास—मैंने खुद क्यों नहीं बताया ! मुझे शरम लगी !—सुन लिया ? मुझे शरम लगी । मैं शराबी हूँ पर बेशर्म नहीं, इसी लिए मैंने उसे नहीं बताया ।

तुम बता दो—अब बता दो—यह आखिरी घड़ी है—अब बता दो—बुलाओ उसे
यहाँ और बता दो, कि प्रभास पक्का शराबी है—

फिरोज—आज तक था—आज शराबबन्दी होने जा रही है—

प्रभास—तो भी प्रभास शराब पीएगा ! पिता के चलाए हुए शराबबन्दी
के कानून को बगल में दबाए शराब पीएगा ! समझ गयी ! —मणि पुलिस
बन गई, ऐं ! सुना मालिक, ये लड़कियाँ पागल हैं ! आज तक हम लोगों ने
इन्हें घर में बन्द रक्खा था ! १९३० में उस महात्मा ने इन्हें बाहर का रास्ता
दिखा दिया, तभी से ये बछड़े की भाँति बहकी-बहकी छलांगें मारने लगीं
हैं ! लड़कियाँ पुलिस बनने लगीं, ऐं !

फिरोज—दादा, घड़ी की ओर देखो !—

प्रभास—यह काम तुम लोगों का है । देखने के लिए गर्दन घुमाने से मेरा
उतना समय व्यर्थ जायगा ! तुम्हीं देखो, और एक दो मिनट बाकी रहते ही
मुझे सैकण्ड बताने लगे !

फिरोज—पिताजी आते होंगे—

प्रभास—सुना—सैकण्ड बताने लगे !—

फिरोज—स्वयंसेवक की पोशाक में तुम्हें उन्होंने पीते हुए देख लिया तो—

प्रभास—मालिक, दरवाजे की ओर ध्यान रखिए—

मालिक—जी !—

प्रभास—अच्छी तरह ध्यान रखिए । और यहाँ एक आदमी रहने दीजिए ।
इन बर्तनों को उसे फौरन उठाना होगा !—(पीने लगता है)

फिरोज—यदि अब पीना बन्द ही कर दो तो ?

प्रभास—(हँसता है) पगली हो ! (पीता है)

फिरोज—पिताजी की मुझे चिन्ता नहीं—पर दादा, यदि मणि आ जाय
तो !—(प्रभास उसकी ओर देखते हुए पीते-पीते रुक जाता है) पिताजी की
आँखों में धूल भोंकोगे ! ठीक है, मैं भी तुम्हारी मदद करूँगी—पर मणि ?
उसे मैं धोखा नहीं दूँगी !—अब तो बिल्कुल नहीं दूँगी ! समझे ? साफ-
साफ कह दूँगी—

प्रभास—वेटर—वेटर—(वेटर आता है) उठाओ—उठाओ—जल्दी उठाओ ! समय पूरा हो रहा है। घड़ी देखी ? अन्दर के लोगों को सम्भालो। कह दो बहुत हुआ अब ! (वेटर जाता है, अन्दर शोरगुल बढ़ता है) अब कह दो मरिण से कि आ जाय । (जेब से कागज में लपेटा हुआ पान निकाल कर खाता है) काफी खुशबू डाली है—और पिपरमिट भी !—(हँसता है) (मालिक से) पान अच्छा रंगा है न ?—मरिण आने वाली है, क्यों ?—कब ? या यों ही मुझे घुड़की दे रही हो ?—

फिरोज—इसके पहले ही वह आ गई होती—पर मैं जानती थी—मैंने ही भेज दिया था उसे दूसरी ओर !—(बाहर जयघोष होता है)—कौन आया ? (मालिक और फिरोज बाहर के और प्रभास अन्दर के दरवाजे की ओर जाता है) कौन ?—(दो-तीन शराबी आते हैं)

एक—(जेब की बोतल मुँह से लगाकर) शराबबन्दी की जय ! शराब पीना हराम है ! (पीता है)

दोनों—शराब पीना हराम है—(उसके हाथ से बोतल लेकर पीते हैं)

एक—लाओ—और लाओ—गिलास नहीं—सालम बोतल !—देखते क्या हो ?—लूट लो—लूट लो—बहुत पैसे कमाए है सांलो ने आज तक !—दरवाजे की ओर जाकर)—आ जाओ—आ जाओ—यहाँ का दरवाजा खुला है—प्याऊ है—(समूह आता है) देखते क्या हो ? डाका डालो—लूट लो—दशहरे के दिन सोना लूटते हैं उस तरह लूटो ! विजयादशमी है आज—विजयादशमी है आज—विजय दीवान साहब की और शराब हमारी !

प्रभास—खामोश !—क्या शोर मचा रखा है ?

एक—हं—तुम ? क्यों जी यही पी रहा था अपने साथ अभी ?—देखते क्या हो ? लूटो, लूटो—बिल-बिल कुछ नहीं ! समझा—मालिक साब !—अब बिल जहन्नुम में !—चलो हमारे साथ ! (गाता है—चलो हमारे साथ साजन—)

[सब अन्दर जाते हैं]

फिरोज—देख लिया ? कैसा लग रहा है यह दृश्य ?

प्रभास—अशिक्षित हूँ !—

फिरोज—और सुशिक्षित ?

प्रभास—वे तरीके से काम करते हैं । इस तरह हुल्लड़ नहीं मचाते । 'बिल नहीं देंगे' यह बातें वे जुबान से नहीं निकाल सकते । चुपचाप चले जाते हैं ! क्यों मालिक ! यों देख क्या रहे हो ?

मालिक—तो क्या करूँ ? (अन्दर शोर बढ़ता है) सुनो ? जो तकदीर में होगा सो होगा ! जब सभी कमाई पर पानी फिर गया तब सौ पचास बोतलों के लिए दुख क्यों करूँ ?

प्रभास—इसे कहते हैं स्थितप्रज्ञ ! लोगों को ऐसा त्यागी होना चाहिए !—

फिरोज—दादा ! ! !

प्रभास—कार्य को सफल बनाते हैं ऐसे लोग ! एक वे हुल्लड़ वाले हैं, तुम लोग भी उन्हीं में से हो ! एक पीने के लिए चिल्लाता है—दूसरा शराब-बन्दी के लिए शोर मचाए हुए है ! दोनों ही हुल्लड़ मचाने वाले हैं ! हुल्लड़ मचाने से काम नहीं होता ! दिमाग शान्त होना चाहिए—स्थितप्रज्ञता चाहिए—इस तरह—इस मालिक की भाँति ! समझी ? मरिण आखिर नहीं आई !

फिरोज—आयेगी !

प्रभास—कब ?—तुमने नाहक जल्दी की । और दो घूँट पी लेता !—मालिक, वेटर को आवाज़ दीजिए—

फिरोज—ठहरो—सुनो—(बाहर जयघोष सुनाई पड़ता है) देखो—देखो, कौन आ रहा है देखो !—

मालिक—शराब का महाकाल !

फिरोज—हाँ—शराब के महाकाल ! भारत माता के रक्षक—(बीवान साहब आते हैं) पिताजी !—

बीवान—कैप्टन फिरोज,—(फिरोज सेल्यूट करती है—प्रभास भी करता है) समय पूरा हो रहा है ! (मालिक से) तैयार हो ? दुकान खाली हो जानी चाहिए । सरकारी आदमियों को ज़रा भी अड़चन न होने पाए । पहले

से ही तैयार रहिए—बारह बजते ही दुकान खाली हो जानी चाहिए—
समझे !—समझे कैप्टन ?—

फिरोज तथा प्रभास—जी !—

दीवान—किसी को जरा भी तकलीफ न होने पाए । मार पीट की जरूरत नहीं—एक दम चुपचाप—बिल्कुल शान्ति से !—यदि कोई बोतलें छिपाने लगे तो छीन लो—पर हाथापाई न होने पाए—यह काम औरतों का है, पुरुषों का नहीं । पुरुषों के हाथों में इन्तजाम गया और हाथापाई हुई, समझी, कैप्टन फिरोज ?

फिरोज—जी !

दीवान—ठीक । (इधर उधर देखता है । कलाई पर बन्धी हुई घड़ी की ओर फिर दुकान की घड़ी की ओर देखते हुए) यह घड़ी एक मिनट पीछे है । कितने ही अर्न्तथ होंगे एक मिनट में ? (प्रभास दौड़कर जाता है और घड़ी को एक मिनट आगे करता है) ठीक । समझी कैप्टन, एक दम चुपचाप—शान्ति से—माँ की भाषा में बातें करनी हैं—माँ की तरह समझाना है—माँ के हाथों की ही भाँति बोतलें ले लेनी हैं—(मालिक से) तैयार रहो ।—ठीक ! (इधर उधर देखकर जाता है)

मालिक—(ठंडी साँस लेकर) जान बची !

फिरोज—नहीं, फँसनी शुरू हुई है ।

प्रभास—वेटर !—

फिरोज—नहीं ।

प्रभास—वेटर—(वेटर आता है) जाओ ले आओ । (वेटर जाता है)

फिरोज—दादा—

प्रभास—नहीं—अब तुम्हारे बाप की भी नहीं सुनूँगा—यह एक क्षण—सारी जिन्दगी का नुकसान पूरा कर लेना होगा । (मालिक हँसता है) हँसते हो ? क्यों ?

मालिक—मुझे अमरीका की याद आ गई थी ।

प्रभास—मुझे भी याद आ रही है अमरीका—पर कोई कितने साल तक

इन्तज़ार करे ? फिर हँस रहे हो ? क्यों ?

मालिक—इसलिए कि पागल हूँ । पागल होने का यही अवसर है । दिमाग ठिकाने पर रखना चाहता हूँ इसीलिए हँस रहा हूँ !

प्रभास—ठीक—(वेटर आता है) लाओ—डालो—(मणि तथा स्वयंसेविकाएँ आती हैं—(प्रभास चौकता है) तोड़ दो वह बोतल—तोड़ दो—(वेटर रुकता है)

मणि—सब ठीक ठाक है !

फिरोज़—सब टुकड़ियाँ बाँट दी ? हर दुकान में ?—ठीक ।

प्रभास—ठीक ! बोतलें फोड़ो, देखते क्या हो ? इस तरह (उसके हाथ से बोतल लेकर फोड़ता है) यह मुहूर्त हुआ !

मालिक—अभी समय बाकी है—

प्रभास—मेरे पास अब समय नहीं—

फिरोज़—नहीं—यह कायदे के खिलाफ काम है । मणि, ले जाओ इस गुनहगार को ।

मणि—जी—(प्रभास से) चलिए ।

[प्रभास देखता रहता है]

फिरोज़—ले जाओ—देख क्या रही हो ?

मणि—जी । (आगे-आगे प्रभास और पीछे स्वयंसेविकाएँ जाती हैं)

मालिक—आप यहीं रहेंगी कैप्टन ?

फिरोज़—हुकुम ही ऐसा है ।

मालिक—अच्छा ? मेरी तो जान सी निकल रही है । इतने वर्षों पीढ़ियों से चला आ रहा काम धन्धा—आज से बन्द हो जायगा ! सारी उमर शराबियों को देखता आया हूँ इसलिए सारा संसार मुझे शराबी दिखाई पड़ रहा था, पर आज समझा शराब बन्द होकर भी लोग जिन्दा रहेंगे !—हूँ ! मैं समझता था कि बाँर और भोजनालय एक से ही होते हैं । वहाँ जिस प्रकार भोजन करते हैं उसी प्रकार यहाँ पीते हैं । भोजनालय भी क्या कभी बन्द हो सकते हैं ? उसी तरह इसे समझा था, यही भूल हुई !—समय पूरा हो रहा

है—कितने मिनट शेष हैं ?—कहते थे घड़ी एक मिनट पीछे है—क्या हो जाता एक मिनट से ?

फिरोज—कितनी बोटलें खाली होंगी एक मिनट में !

मालिक—यह बात भी ठीक है—मुसीबत आई है पूरी—अब कोई दूसरा काम धन्धा देखना चाहिए । (क्षण भर चुप रहता है) आप बोलती क्यों नहीं ?

फिरोज—क्या बोलूँ ? मैं ड्यूटी पर हूँ ।

मालिक—देखा नहीं जाता इसीलिए यहाँ रुका हुआ हूँ (भीतर शोरगुल बढ़ता है) क्या शोर हो रहा है ! (ठंडी साँस लेकर) ओर क्षण भर बाद खामोशी छा जायगी—हमेशा के लिए खामोशी !—मरघट बन जायगी यह दुकान !—हं ! संसार का भला होगा ! संसार के भले के लिए एक दो मर भी जायें तो क्या हुआ ? लड़ाई में नहीं मरते लोग ? यही समझ कर चुप बैठना है !

फिरोज—उधर देखो—

मालिक—चार ही मिनट, ऐं ! (अन्दर शोर होता है) वेटर ! वेटर ! (वेटर आता है) घड़ी की ओर देखा ? अब निबटना शुरू कर दो । बाहर निकालो एक एक को । बोटलें ले जायेंगे लोग—ध्यान रखना । (वेटर जाता है) जान निकली जा रही है—लगता है जैसे मौत आ रही है (चार पाँच वेटर, नशे में चूर एक एक व्यक्ति को पकड़ कर बरबाजे के बाहर करते हैं । कई शराब पीना हराम है, कहकर चिल्लाते हैं । कई 'मदिराक्षसी का नाश करो' कहकर बाहर से आने वाली आवाज़ में आवाज़ मिलाते हैं । किसी की जब में बोटल देखते ही मालिक तथा फिरोज उसे छीन लेते हैं । बाहर समझ गान गाते हुए स्वयंसेवकों के जाने की आवाज़ आती है ।)

मालिक—हो गया ? चले गए सब ? देखो—ठीक से देखो—कोई नज़र बचाकर छुपा बँठा होगा !—(वेटर जाता है) हे भगवान, यह कैसी मुसीबत खड़ी कर दी ! ज़िन्दगी भर की रोटी जाती रही—

फिरोज—एक की रोटी गई पर अब हज़ारों को रोटी मिलेगी । लाखों के

लिए एक मिट भी जाय तो हर्ज क्या है ?

मालिक—सच है—सच है । न जाने क्यों भूल जाता हूँ ! घर बार में आग-सी लगी जान पड़ती है—(बेटर एक आदमी को उठाकर ले आते हैं) मैं जानता था—फिर देखो—और भी कोई होगा ।

बेटर—नहीं । कोना-कोना छान डाला है । ये हज़रत टेबल के नीचे छिपे बैठे थे ।

मालिक—अलमारियाँ हो गई खाली ?

फिरोज़—देखिए—उधर देखिए—(घड़ी के घंटे बजने लगते हैं । बाहर रेलगाड़ी की सीटियाँ, जहाज़ों-मिलों के भोंपू, घंटे, मोटरों के हार्न एकदम बजने लगते हैं)

मालिक—हो गया सब समाप्त ! (चट से नीचे बैठ जाता है । गर्दन झुकाए, सिर थामे क्षणभर चुपचाप बैठा रहता है) हो गया समाप्त उन्नीस सौ उनतालीसवाँ साल । आज चालीसवें साल का उदय हुआ—ठीक आधी रात से चालीसवें साल का उदय हुआ—

फिरोज़—(सीटी बजाती है । पुरुष और स्त्री स्वयंसेवक आते हैं) तुम जाओ जी !—तुम्हारा काम नहीं है यहाँ । (औरतें जाती हैं) हाँ—ये अलमारियाँ बाहर निकालो । भरी खाली कुछ न देखो । बाहर फेंक दो—तोड़ डालो । अन्दर कोना-कोना तलाश करो । (स्वयंसेवक काम में लग जाते हैं) सचमुच मुझे बड़ा दुःख हो रहा है । हिन्दुस्तान का पैसा लगा है इस काम में—

मालिक—मेरा पैसा—पाई पाई जाती रही मेरी—

फिरोज़—हिन्दुस्तान की ! पर उसका कोई इलाज नहीं । पैसा खर्च किया है इसलिए कोई ज़हर का प्याला नहीं गटक जाता । अब क्या करेंगे आप ? यह दुकान खाली करेंगे ? (बहु साकारात्मक गर्दन हिलाता है) कब ?

मालिक—अभी इसी समय नहीं—किराया दिया हुआ है अगले तीन महीनों का । उस समय इस बात का कहाँ पता था ?

फिरोज़—अब दुकान को ताला लगाइये । बाहर लगा हुआ बोर्ड उतारिए—समझे ?

[स्वयंसेवक बक्से और अल्मारियाँ बाहर ले जाते हैं]

१ स्वयंसेवक—समाप्त !

फिरोज—और कुछ भी नहीं ?

१ स्वयंसेवक—कुछ नहीं ।

फिरोज—चलो—मार्च—

[सब जाते हैं]

मालिक—सब ले गए ?

बेटर—जी हाँ—(हँसता है) जो दिखाई पड़ा, सब ले गए ।

मालिक—चुप—धीरे से बोलो—वह बला कहीं छिपी सुन रही होगी । बड़ी तेज लड़की है—बाप की बेटी जो ठहरी ! पर वह लड़का लाख में एक है !

बेटर—लाख में एक ! चुप चाप खिड़की में से सौ का नोट दे गया !

मालिक—अच्छा ! खूब ! कितना कमाया आज ?

बेटर—सौ गुना ! अब चाहे जितनी बोतलें फोड़ दें ! (बाहर बोतलें फोड़ने की आवाज सुनाई पड़ रही है । जय जय कार होता है । खिड़की में से बाहर सुलगी हुई आग दिखाई पड़ती है)

मालिक—यह आग काहे की है ?

बेटर—(देखकर) मदिरा देवी की मूर्ति जला रहे हैं शराब की बोतलें उड़ेलकर—

मालिक—जला लेने दो मूर्तियाँ ! मूर्तियाँ जलाने से शराब नहीं जलेगी—बत्ती बुझाओ, चलो !

[बेटर बत्ती बुझाता है । दो मिनट ब्लैक आउट रहकर जब फिर से उजाला होता है तब सारा सामान जा चुका है । दो तीन कुर्सियाँ और दीवार के बीचोबीच एक आईना है । उजाला होते समय वहाँ कोई भी नहीं होता । क्षण भर बाद बेटर आता है, चारों ओर देखता है और दूसरे दरवाजे से जाता है । मालिक आता है ।]

मालिक—(घंटी बजाता है और बाहरी दरवाजा बन्द करते करते)

दरवाजा खुला ही छोड़ दिया बेवकूफ ने ! (बेटर आता है) दरवाजा क्यों नहीं बन्द कर लिया ?

बेटर—भूल हुई । रोज़ की आदत के अनुसार—

मालिक—अब रोज़ की सारी आदतें छोड़ दो । दरवाजा दूसरा बनाना होगा । बाहर ताला लगा देना चाहिए । बन्द जो हो गया है यह बॉर ?

बेटर—जी !

मालिक—यहाँ कोई नहीं आता अब । कैसे आए कोई ? अब है क्या यहाँ ? यह बात है ! अब चाय की दुकानों में भीड़ होने लगी है ! हुँ: चाय की दुकानों में ! चाय पीकर क्या कभी शराब की तलब मिट सकती है ? सुना है दूध पिलाते हैं ! जैसे शराबी मानो कोई दुधमुहाँ बच्चा हो !!

बेटर—पर आज तो जा ही रहे हैं न सब उसी ओर ?

मालिक—कितने दिन ? ऐं ? कितने दिन ? देख लोगे—देख लोगे । कोई भी नहीं रह पाएगा बिना शराब के ! कभी शराब भी छूट पाई है ? (दरवाजे पर टिक-टिक की आवाज़ होती है) कौन ? देखो, इशारे की आवाज़ लगती है । (बेटर जाता है और प्रभास को लिए आता है) आइए—बैठिये । वैसे खाली बैठकर भी क्या फायदा । सिगरेट ही तो पीएँगे दो चार—

प्रभास—हुँ: ! यह किसे बता रहे हैं ? मुझे ? फिरोज़ को धोखा दीजिए, पिताजी को धोखा दीजिए—आबकारी के दीवान जी को ! पर इस प्रभास को ?—

मालिक—ठीक है—पर हमारा दाँव ही चूक गया ! बड़ी नटखट है आपकी बहन—ठीक जगह ढूँढ निकाली और तोड़ दी सारी बोटलें—कल मेरी हज़ारों की कमाई पर पानी फिर गया—आँखों सामने बोटलें तोड़ रहे थे और मैं चुपचाप बैठा देख रहा था ।

प्रभास—यह बात है ? और मुझे यकीन हो जायगा ? फिरोज़ नटखट है यह मैं मानता हूँ—कल आखिरी समय किस प्रकार उसने मुझे भगा दिया—स्वयं ही ज़ामिन रही और मुझसे माफी मँगवाई । पर मालिक साहब इस प्रकार मेरी तसल्ली नहीं होने की । इतने सीधे नहीं हैं आप ? प्रश्न केवल पैसे

[स्वयंसेवक बक्से और अलमारियाँ बाहर ले जाते हैं]

१ स्वयंसेवक—समाप्त !

फिरोज—और कुछ भी नहीं ?

१ स्वयंसेवक—कुछ नहीं ।

फिरोज—चलो—मार्च—

[सब जाते हैं]

मालिक—सब ले गए ?

बेटर—जी हाँ—(हँसता है) जो दिखाई पड़ा, सब ले गए ।

मालिक—चुप—धीरे से बोलो—वह बला कहीं छिपी सुन रही होगी । बड़ी तेज लड़की है—बाप की बेटी जो ठहरी ! पर वह लड़का लाख में एक है !

बेटर—लाख में एक ! चुप चाप खिड़की में से सौ का नोट दे गया !

मालिक—अच्छा ! खूब ! कितना कमाया आज ?

बेटर—सौ गुना ! अब चाहे जितनी बोतलें फोड़ दें ! (बाहर बोतलें फोड़ने की आवाज सुनाई पड़ रही है । जय जय कार होता है । खिड़की में से बाहर सुलगी हुई आग दिखाई पड़ती है)

मालिक—यह आग काहे की है ?

बेटर—(देखकर) मदिरा देवी की मूर्ति जला रहे हैं शराब की बोतलें उँडेलकर—

मालिक—जला लेने दो मूर्तियाँ ! मूर्तियाँ जलाने से शराब नहीं जलेगी—बत्ती बुझाओ, चलो !

[बेटर बत्ती बुझाता है । दो मिनट ब्लैक आउट रहकर जब फिर से उजाला होता है तब सारा सामान जा चुका है । दो तीन कुर्सियाँ और दीवार के बीचोबीच एक आईना है । उजाला होते समय वहाँ कोई भी नहीं होता । क्षण भर बाद बेटर आता है, चारों ओर देखता है और दूसरे दरवाजे से जाता है । मालिक आता है ।]

मालिक—(घंटी बजाता है और बाहरी दरवाजा बन्द करते करते)

दरवाजा खुला ही छोड़ दिया बेवकूफ ने ! (बेटर आता है) दरवाजा क्यों नहीं बन्द कर लिया ?

बेटर—भूल हुई । रोज़ की आदत के अनुसार—

मालिक—अब रोज़ की सारी आदतें छोड़ दो । दरवाजा दूसरा बनाना होगा । बाहर ताला लगा देना चाहिए । बन्द जो हो गया है यह बॉर ?

बेटर—जी !

मालिक—यहाँ कोई नहीं आता अब । कैसे आए कोई ? अब है क्या यहाँ ? यह बात है ! अब चाय की दुकानों में भीड़ होने लगी है ! हुँ: चाय की दुकानों में ! चाय पीकर क्या कभी शराब की तलब मिट सकती है ? सुना है दूध पिलाते हैं ! जैसे शराबी मानो कोई दुधमुहाँ बच्चा हो !!

बेटर—पर आज तो जा ही रहे हैं न सब उसी ओर ?

मालिक—कितने दिन ? ऐं ? कितने दिन ? देख लोगे—देख लोगे । कोई भी नहीं रह पाएगा बिना शराब के ! कभी शराब भी छूट पाई है ? (दरवाजे पर टिक-टिक की आवाज़ होती है) कौन ? देखो, इशारे की आवाज़ लगती है । (बेटर जाता है और प्रभास को लिए आता है) आइए—बैठिये । वैसे खाली बैठकर भी क्या फायदा । सिगरेट ही तो पीएँगे दो चार—

प्रभास—हुँ: ! यह किसे बता रहे हैं ? मुझे ? फिरोज़ को धोखा दीजिए, पिताजी को धोखा दीजिए—आबकारी के दीवान जी को ! पर इस प्रभास को ?—

मालिक—ठीक है—पर हमारा दाँव ही चूक गया ! बड़ी नटखट है आपकी बहन—ठीक जगह ढूँढ निकाली और तोड़ दी सारी बोतलें—कल मेरी हज़ारों की कमाई पर पानी फिर गया—आँखों सामने बोतलें तोड़ रहे थे और मैं चुपचाप बैठा देख रहा था ।

प्रभास—यह बात है ? और मुझे यकीन हो जायगा ? फिरोज़ नटखट है यह मैं मानता हूँ—कल आखिरी समय किस प्रकार उसने मुझे भगा दिया—स्वयं ही ज़ामिन रही और मुझसे माफी मँगवाई । पर मालिक साहब इस प्रकार मेरी तसल्ली नहीं होने की । इतने सीधे नहीं हैं आप ? प्रश्न केवल पैसे

का ही है न ? पैसे देने में पीछे कौन हटता है ? (बटुआ निकालकर) ये लीजिए, जितना चाहें ले लीजिए और शेष वापिस दे दीजिए । देख क्या रहे हैं ? संदेह ! संदेह क्यों करते हो ? इसीलिए न कि मैं दीवान जी का बेटा हूँ ? पगले, शराबी के भी कभी माँ-बाप होते हैं !

वेटर—सच है !

प्रभास—देख लो । यह वेटर इस बात को समझता है ! क्यों ? बारह महीने शराबियों में जो रहता है यह ! काउन्टर पर बैठकर आदमी को पहचान नहीं हुआ करती । खरी खोटी रेज़गारी पहचान लेने से आदमी की पहचान नहीं होती । चलो—जान निकल रही है मेरी । ज़वान सूखी जा रही है !—आज के हिन्दुस्तान की भाँति ! (वेटर के गले में हाथ डालते हुए) चलो, भई, चलो । तुम इन्सानियत जानते हो । ये हज़रत केवल पैसा जानते हैं । इनसे कहो पैसा लेकर बैठें !—(सब चुप हैं । मालिक कुछ नोट लेता है—बाकी बटुए में रखकर बटुआ प्रभास को देता है तथा वेटर को इशारा करता है)

वेटर—चलिए । (वेटर बत्ती बुझाता है—बत्ती जलाकर मालिक आकर कुर्सी पर बैठता है, अकेला ।)

[मालिक टहलता है—दरवाज़ा खड़खड़ाया जाता है । वह खोलता है ।]

मालिक—आइए—आइए—

मणि—(प्रवेश करके) अभी यहाँ कोई आया था ?

मालिक—कौन आया अब इस शमशान में ?

मणि—सच कह रहे हैं ?

मालिक—ईश्वर की कसम !

मणि—पक्की खबर मिली है मुझे—कैप्टन को भी । अब आया ही चाहती हैं वे ! (चारों ओर देखती है)

मालिक—देख लीजिए न । आइए, इधर अन्दर की तरफ देख लीजिए । आइए न—ज़रा भी संकोच न कीजिए ।

[दरवाज़ा खोलकर दिखाता है तथा आप बाहर रहता है]

मणि—(अन्दर जाते जाते) दरवाज़ा खुला रखिए—इसी प्रकार—

(जाती है) ।

[मालिक आप ही आप हँसता है और सिगरेट निकालकर सुलगाता है ।]

फिरोज—(प्रवेश करके) यहाँ कोई आया था ?

मालिक—जी हाँ,

फिरोज—जी हाँ ? कौन ?

मालिक—मणि बहन ।

फिरोज—मणि !—मणि नहीं—कोई पुरुष ?

मालिक—हाँ ।

फिरोज—कौन ?

मालिक—मैं खुद !

फिरोज—हँसी की बात नहीं । कौन आया था यहाँ ? प्रभास आया था ?

(मणि आती है) हैं ?

मणि—कोई भी नहीं है अन्दर ।

फिरोज—यह कैसे हो सकता है ? प्रत्यक्ष देखकर मुझे बताया गया है ।

वेटर कहाँ है ?

मालिक—वह क्यों आने लगा अब !

मणि—कोई परिदा भी नहीं है भीतर । डरावना-सा लगा अन्दर जाते समय ।

फिरोज—मुझे विश्वास नहीं होता ।

मालिक—अब यही होगा । किसी को भी विश्वास नहीं होगा । इसी प्रकार सताया जायगा !

मणि—जन्म भर सताया बिचारी अबलाओं को—

मालिक—हमने नहीं—ताड़ी वालों ने !

मणि—अमीरों के बीबी बच्चे नहीं होते ! और नशा क्या ताड़ी से ही होता है ? शायद ब्हिस्की से नहीं होता ! जानते हो मेरी माँ कैसे मरी ? मेरे पिता लखपति हैं । ताड़ी नहीं पीया करते थे वह—शराब के नशे में ही उन्होंने मेरी माँ के प्राण लिए—और अब रखा है उन्हें—पागलखाने में !

फिरोज—ऊँ हूँ—मणि, स्वयंसेविका को इतना नहीं बोलना चाहिए ।

मणि—जी ।

फिरोज—ठीक कहते हो यहाँ कोई नहीं है !

मालिक—भगवान कसम ! श्मशान के वृतालों की भाँति पुरानी बातें याद करता हुआ बैठा हूँ—कौन आएगा अब यहाँ ? भाग्य जो रुठ गया मेरा ! कितनी रौनक रहती थी यहाँ पर अब तो—(प्रभास आता है) कौन प्रभास ?

फिरोज—दादा !

मणि—आप !

प्रभास—अरे तुम लोग पागल तो नहीं हो रही हो ! बाहर से तुम्हें देखा इसलिए मैं अन्दर चला आया । सोचा इस खाली मदिरालय में न जाने ये कौन मधुबालाएँ घुस आई हैं ?—और देखा तो आप हैं ।

फिरोज—माफ़ कीजिए—

मणि—माफ़ कीजिए—(दोनों मालिक को नमस्कार करती हैं)

फिरोज—चलो दादा—

प्रभास—कहाँ ?

फिरोज—ड्यूटी पर । हमारी मदद करो ज़रा । पान थूक दो न मुँह में का । (प्रभास चौंकता है) मणि को पान खाना नहीं भाता । क्यों मणि ? चलिए—(तीनों जाते हैं)

[मालिक घंटी बजाता है—सामने लगा हुआ आईना धीरे-धीरे आगे सरकता है और उसके पीछे से बेंटर आता है ।]

मालिक—अभी और कौन-कौन आने वाला है ?

बेंटर—तीनों आने हैं ।

मालिक—यहीं रहो तुम । मैं अन्दर जाता हूँ । (मालिक के आईने के दरवाजे से अन्दर जाते समय पटाक्षेप ।)

दूसरा अंक

[दीवान साहब का डाइंगरूम । आधुनिक फर्नीचर—पोछे अन्दर की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ दिखाई पड़ रही हैं । परदा उठते समय वहाँ कोई भी नहीं है । तत्पश्चात् वेटर आता है—कोने के दरवाजे से बाहर भाँककर देखता है—भीतर किसी के ग्रामोफोन बजाते बजाते आधा रिकार्ड बन्द करने का आभास होता है । बाएँ दरवाजे से फिरोज आती है ।]

फिरोज—पिताजी नहीं आए अभी तक ?

वेटर—शायद नहीं,—पर क्या कहा जा सकता है, शायद आ भी गए हों । मैं काफी देर से यहाँ नहीं था—

फिरोज—अच्छा—जाओ—

[वेटर उसकी ओर देखता है तथा हल्के से मुस्कराता हुआ जाता है तभी दूसरे दरवाजे से मणि आती है ।]

मणि—फिरोज—

फिरोज—आओ—आ गई ?—कहीं पिताजी को देखा तुमने ?

मणि—नहीं । क्यों ?

फिरोज—आजकल कुछ ऐसा ही हो रहा है । पिताजी के बाहर जाने पर उनके लौट आने तक मेरा जी परेशान रहता है । कुछ ऐसा डर बैठ गया है मन में—

मणि—पर क्यों ?

फिरोज—(हँस कर) तुम कैसे समझ सकती हो ?—कैसे बताऊँ ?

मणि—तो फिर न बताओ !

फिरोज—नाराज न हो ! अपने घर में स्वयं ही चोर बन गई हूँ । किस पर विश्वास करूँ ? दरवाजे और खिड़कियों से भी डरती हूँ !—

मणि—और प्रभास ?

फिरोज—हां—प्रभास ! प्रभास है—पर तुम जानती ही हो—कोई बात वह कभी गम्भीरता से देखता है ? बात करते ही उसका मजाक शुरू हो जाता है !

मणि—नहीं जी !—

फिरोज—मजाक का मतलब कुछ और ही न समझो ! उसका स्वभाव ही वैसा है । कोई गर्दन पर छुरी रख दे तो भी हँसता ही रहेगा !—मैं गुस्से में मजाक कह रही हूँ, पर कभी कभी मैं भी सोचती हूँ, मनुष्य की तबीयत हो तो ऐसी !—पर मुझसे वैसा नहीं बन पड़ता ।

मणि—मुझसे भी नहीं बन पड़ता—पर चाहती हूँ अवश्य ।

फिरोज—पिताजी अभी तक नहीं आये ?

मणि—देख लो !

फिरोज—देखने में भी डर लगता है, उन्हें ये पसन्द नहीं । मेरा मन नहीं मानता इसलिए पूछती हूँ—पर पूछती हूँ तो नाराज होते हैं । तीन महीने हो गए इस शराबबन्दी को—पर जैसे सभी बातों की बन्दी हो गई है ! बात करना तक मना है ! वातावरण जैसे गहन-सा हो उठा है—

मणि—हमें अपनी ड्यूटी बजानी चाहिए । हमारे ऊपर जिसने इस काम का भार सौंपा है उसकी बेइज्जती नहीं होनी चाहिए । और बातों पर विचार करने से कैसे काम चलेगा ?

फिरोज—कर कौन रहा है और बातों का विचार । इस एक ही विचार से जान जैसे ढीली पड़ गई है । जहाँ देखो संदेह दिखाई देता है—विश्वासघात दिखाई देता है—बेईमानी दिखाई देती है । ऐसा भी क्या पैसे का मोह ! (बेटर आता है) क्या है ?

बेटर—साहब को आये हुए मैंने देखा नहीं कहीं ।

फिरोज—अच्छा । जाओ । (बेटर जाता है) कौन जाने कब आएँगे ! कहाँ गए हैं ?

मणि—इस तरह घबरा क्यों रही हो ? ऐसी घबराने की कौन-सी

बात है ?

फिरोज—यही तो नहीं समझ पाती मैं, और इसीलिए यों डर रही हूँ (इधर उधर देखती हुई धीमी आवाज़ में) ये नए लोग आए हैं घर में ! न जाने क्यों लाए गए हैं ! अच्छा खासा शराब बेचने वाला, और उसे अपना वैयक्तिक कर्मचारी बना रक्खा है । परछाईं-सा घूमता रहता है पिताजी के साथ साथ !—

मणि—उसी से डरती हो ?

फिरोज—नहीं जी, पर मुझे ये पसन्द नहीं । और नहीं मिला कोई आदमी ? (चौकती है) कौन है ?

मणि—कोई नहीं । कितनी शंकालु हो गई हो तुम ?

फिरोज—मैं इस बेटर से डरती हूँ ! किसी भूत की भाँति घूमता रहता है घर में । कब कहाँ से आता है और कहाँ जाता है—कुछ पता नहीं लगता, काम बिल्कुल मशीन की तरह करता है । एक बार बता दो, फिर दुबारा कहने की जरूरत नहीं । पर उसकी ओर देखते ही—

[बेटर आता है]

बेटर—मुझे पुकारा ?

मणि—किसने ? कब ?

बेटर—(फिरोज से) मुझे पुकारा ?

फिरोज—नहीं, सुना ? ये मुझे पसन्द नहीं । नाहक झुठे कारण ढूँढकर इस तरह चालक बनना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं । समझे ? जाओ । (बेटर जाता है) देख लो । जी क्यों न उकता जाए ? जैसे टोह में लगा रहता है ।

मणि—तो निकाल क्यों नहीं देते इसे ?

फिरोज—कौन निकाले ? पिताजी उस पर खुश हैं—दादा का एक शब्द भी वह खाली नहीं जाने देता—शिकायत करने के लिए मुझे भी कब मौका देता है ?—पर—नहीं—तुम यह सब नहीं समझ सकतीं ।

मणि—बड़ा विचित्र बन गया है तुम्हारा स्वभाव ! शराबबन्दी हो जाने के कारण उधर दुनिया आनन्द से हँस रही है, और तुम यहाँ इस तरह उदास

हो रही हो ! तुम्हें गर्व होना चाहिए अपने पिताजी पर !

फिरोज़—गर्व करे दुनिया—मैं तो चिन्तित हूँ उनके लिए । कहती हो सारी दुनिया हँस रही है ! दाँत पीसकर पिताजी को गालियाँ देने वाला उस दुनिया का छोटा-सा हिस्सा तुम्हें नहीं दिखाई देता—पर मेरी आँखों के सामने वह दहक रहा है । (पोछे सीढ़ियों पर पैरों की आवाज़ सुनते ही चौंकती है) कौन ?

मरिण—कौन ?

[सीढ़ियों पर से दीवान साहब 'बाँय्' कह कर पुकारते हैं । वेटर 'जी' कहता हुआ बाएँ दरवाजे से आता है । दीवान साहब उतर कर नीचे आते हैं ।]

दीवान—बाँय्, सेक्रेटरी कहाँ है ?

वेटर—मालूम नहीं साहब ।

दीवान—देखो । (मालिक दाहिने दरवाजे से आता है)

मालिक—फरमाइए ।

दीवान—अच्छा, पत्र तैयार है ?

मालिक—जी हाँ ।

दीवान—यहीं ले आइए—(मालिक जाता है) बाँय्, कॉफी । (वेटर 'जी' कह कर जाता है)

फिरोज़—आप बाहर गए थे न पिताजी ?—कब आए आप ?—

दीवान—तुम्हारी ड्यूटी कब है ? (मरिण से) और तुम्हारी ?

फिरोज़—ड्यूटी बजाकर ही आई हैं हम ।

दीवान—रिपोर्ट दी ?

फिरोज़—जी हाँ ।

दीवान—ठीक,—तुम काफी लोगी फिरू ?—और तुम मरिण ?

[फिरोज़ मरिण को हाँ कहने का इशारा करती है ।]

दीवान—बाँय्—(वेटर आता है) और दो कॉप । (वेटर जाता है) वह फिल्म देखी डायमंड थियेटर की ! युद्ध विरोधी कहानी जान पड़ती है । किसी को नहीं जँचती । लड़ाई की बातें करने के लिए अच्छी लगती हैं, पढ़ने के लिए

तो और भी मज्जेदार होती हैं—अनुभव कौन जाने कैसा होता होगा ! चाहता हूँ, कभी यहाँ भी लड़ाई हो और संसार देखे कि शराबविहीन देश के योद्धा किस प्रकार लड़ते हैं ।

फिरोज़—सचमुच ।

दीवान—पिछली लड़ाई जब अमरीका ने जीती तब वे लोग शराबी न थे । शराबी न थे इसीलिए अमरीका ने यूरोप की इज्जत बचा ली । शराबी यूरोप सर्वनाश के किनारे खड़ा था—(बेटर कॉफी लेकर आता है और चला जाता है) कहते हैं सख्ती से सुधार नहीं होता ! हैं :—अमरीका ने कर दिखाया—

फिरोज़—पर रह नहीं पाया ।

दीवान—चारों ओर सभी शराबी थे । शराबियों की बस्तियाँ जो थीं पास !—प्रलोभन आँखों के सामने नहीं होना चाहिए—पास होना भी ठीक नहीं, उसका पास होना ही हानिकारक साबित हुआ । हम लोग अच्छे हैं, जो हमारे ऐसे पड़ोसी नहीं हैं । सारा हिन्दुस्तान खुश्क हो गया है अब ! रियासतें भी खुश्क हो गई हैं !—इसी लिए आशा है ।

मणि—फिर भी सावधानी बरती ही जा रही है ।

फिरोज़—वह जरूरी है । कहीं बीज बचा हुआ है—वर्षा होगी और वह फुट निकलेगा ।

दीवान—अच्छा । वह फिल्म देखी तुमने ? (फिरोज़ मणि को आँख से इशारा करती है) नहीं ? एक बार देख आओ । तुम भी जाओ जी । चीनी चाहिए ? नहीं कड़वी कॉफी मुझे बहुत पसन्द है । कड़वी कॉफी देनी चाहिए उन लोगों को । जिन्हें यह पिलायी गयी उनकी प्यास बुझ गयी । इसलिए मुझे कड़वी कॉफी पसन्द है । (हँसता है । गम्भीर हो जाता है) प्रभास कहाँ है ?

फिरोज़—मुझे नहीं मालूम ।

दीवान—(मणि से) और तुम्हें ? शर्माओ नहीं । माँविहीन बच्चा है वह । तुम्हारा भी कोई नहीं है । इसका बाप तो है—पर उस बिचारे का बाप रहते हुए भी नहीं के बराबर है । तुमने किसी का भी सुख नहीं पाया है—इसी लिए बिना माँ-बाप के बच्चे पर तुम्हीं को दया आएगी । इसका बाप जीवित

है ! इतना गुस्सा आता है इसपर ! अपना बाप जीवित है यह साबित करने के लिए जी जान से प्रयत्न करती रहती है ! प्रभास समझदार है, वह इन भ्रमों में नहीं पड़ता । (हँसता है) उसका ध्यान रखो । और है भी कौन उसका ? यह उसकी बहन है—पर बाप के आगे भाई को कुछ नहीं समझती । आगे क्या करेगी कौन जाने !

मरिण—अब मैं जाती हूँ घर ।

दीवान—जल्दी क्या है ? देखो मरिण, मैं यों ही नहीं कह रहा हूँ—ठीक सोच समझ कर तुमसे कह रहा हूँ, प्रभास की देखभाल करो । मैं बड़ा चिन्तित हूँ उसके भाग्य के बारे में । तुम इस काम में लगी हो,—देश सेवा में जुटी हो—नहीं तो इसी समय तुम दोनों का विवाह करके आश्वस्त हो जाता, लेकिन सेवा करने वाले प्रपंच के मोह में न फँसे तो अच्छा । उनके लिए चारों दिशाएँ खुली रहनी चाहिए । फिर भी उस पर नज़र रखो—यह फिरोज़ यदि मेरी अपेक्षा अपने कर्तव्य की ओर अधिक ध्यान दे तो—

फिरोज़—कब ढिलाई की मैंने ? कब भूल की ? कब देर की ?

दीवान—नहीं । लेकिन ज्यादा ध्यान देती हो मेरी ओर । किस बात का डर है तुम्हें ?

फिरोज़—किस बात का डर है मुझे ! पूसीफुट का चरित्र मेरी आँखों के सामने है । शत्रुओं का जाल फैला है चारों ओर—ऐसा घात मैं बैठा है एक-एक—(दीवान हँसता है) आपको हँसी आती है ! बेफिक्री रहती है ! मैं क्या भीरू हूँ ? अपने बाप की बेटी हूँ मैं—पर मैं जो डरती हूँ वह अपने बाप के लिए नहीं—डरती हूँ हिन्दुस्तान के भविष्य के लिए, डरती हूँ इसलिए कि शराबबन्दी की टेक पर कुठाराघात न हो जाय । कौन है दूसरा रक्षक ? घात लगाए बैठा है हर कोई—शत्रु और मित्र—दोनों जैसे खिल्ली उड़ाने के लिए तैयार बैठे हैं । उनसे डरती हूँ मैं ! तीन महीनों में कितनी उथल-पुथल हो गई है ! मेरे साथ चलिए—गरीबों के घर चलिए वहाँ देखिए—तीन महीने पहले वहाँ नरक का दृश्य था लेकिन आज वहाँ दिवाली जगमगा रही है । चेहरे बदल गए हैं सबके । मैं डर रही हूँ उनकी इस दिवाली से । वह दिवाली

बारह महीने रहनी चाहिए—संसार में उजाला होना चाहिए उससे !

दीवान—सुन लिया मणि ?—

फिरोज—हँसी न उड़ाइए पिताजी । यह समय हँसी उड़ाने का नहीं है दीवान साहब ।

दीवान—(काँफी का प्याला एक ओर सरका कर उठता है) पगली, हिन्दुस्तान के भविष्य की चिंता करने वाले बहुतेरे लोग हैं । उसकी ज़िम्मेदारी तुम न लो अपने सिर पर, समझीं ? (एकदम कोठे पर जाता है—क्षण भर स्तब्धता रहती है)

मणि—पुरुषों की जात !

फिरोज—सच है । प्रत्येक बलवान यही समझता है । मैं भी यही समझती हूँ । उन्हें क्योंकर दोष दूँ ? पर मन ही तो है न—नहीं मानता । इधर यह बारूद की सुरंग है—और ये दोनों मशालें लिए इस तरह घूम रहे हैं—अखाड़े बाजी की बेमुरव्वत—साफ दिखाई दे रही है, संदेह की बात ही नहीं, कितनी साफ साफ दिखाई दे रही है, पर यह खेल आसानी से खेलना बड़ा कठिन है । तार पर का नाच दर्शकों के लिए सुन्दर होता है—पर जो तार पर चलता है वही जानता है । खून गाढ़ा होता जा रहा है सोचते सोचते—

[कठोर मुखाकृति करके नीचे बैठ जाती है क्षण भर स्तब्धता रहती है ।]

मणि—मैं जाऊँ अब ?—

फिरोज—जाओगी ?

मणि—न जाऊँ ?

फिरोज—(उसके गले में बाँहें डाल कर) यह कैसे कहूँ ? यह सच है कि वहाँ तुम्हारा कोई नहीं है पर वह तुम्हारा घर है । यहाँ मेरे पिता हैं—भाई है—पर मैं अकेली ही हूँ । वहाँ तुम्हारा कोई नहीं है पर यहाँ कोई है इस लिए तुम वहाँ अकेली नहीं हो । मेरा यहाँ कौन है ?—बताओ, सुन लिया न अभी ? अब बताओ, मेरा कौन है ?

मणि—तुम्हारा कर्तव्य—तुम्हारा ध्येय ! तुम्हारी ओर देखकर ही तो

हमें प्रेरणा मिलती है ? हाथ में लाठी लिए औरतें जो पुलिस का काम कर रहीं हैं वह तुम्हारे ही शब्द के जोर पर ! गरीब के बीबी-बच्चे आज जो आनन्द से उछल कूद रहे हैं वह तुम्हारे ही मुख की ओर देखकर ! कहती हो मेरा कौन है ? कितनी बड़ी गृहस्थी है तुम्हारी—कितनी व्यापक—कितना वैभव है तुम्हारा ! मुझे तो तुमसे ईर्ष्या होती है ।

फिरोज—मेरे हृदय में भाँक कर देखती तो तुम्हें ईर्ष्या न होती । किस की है यह गृहस्थी ? किसके लिए यह भंभट है ? किसके लिए है ? बताओ न, किसके लिए इतनी परेशानी उठा रही हूँ मैं ?—ठहरो—देश का कल्याण—देश की सेवा—ऐसे मीठे मीठे शब्द न कहो । संसार की आंखों में धूल भोंकने के लिए चाहे जितनी बातें की जायें—पर मैं सच सच बता रही हूँ—एक ही विचार मेरे सामने है—मेरे पिता की सफलता ! देश की चिंता वह करें—मैं तो केवल उनकी चिंता की सेविका हूँ । देश को मैं क्या जानूँ ?—कहाँ देखा है मैंने यह देश ? किसने देखा है ? ढोंग—ढोंग—सब ढोंग है !—पर इस ढोंग से ही संसार का कल्याण होना हो तो !—पिताजी की भाँति कर्तव्य निष्ठ ईमानदार कितने लोग हैं इस देश में ? कभी दिखाया है अभिमान ? इसलिए मैं भी यों डर रही हूँ—इसीलिए काँप उठती हूँ—ऐसे सच्चे देशसेवक की रक्षा करना आवश्यक है । जान दे देनी चाहिए उनके लिए । समझीं ?—प्राणों पर खेल जाना चाहिए !

[फिरोज थकी-सी चुपचाप बैठ जाती है । मरिण उसके सिर पर हाथ फेरती हुई धीरे धीरे गाने लगती है । मरिण के गाते समय फिरोज शून्य दृष्टि से सामने देखती रहती है—इतने में बेटर आकर प्याला ले जाता है । जब वह जा रहा होता है तभी पिछली ओर से हाथ में कागज़ लिए मालिक आता है । बेटर हाथ से जीने की ओर इशारा करता है । गाना जारी है । प्रभास आकर उन दोनों के पीछे खड़ा हो जाता है । फिरोज चौंककर पीछे देखती है । गाना बन्द होता है ।]

फिरोज—कब आए दादा ?

प्रभास—चलने दो—चलने दो यह गीत । संसार बड़ा खुश हो रहा है,

क्यों मणि ? चारों ओर केवल आनन्द ही आनन्द की धूम है । लोग बुरा कह रहे थे पिताजी को—अब नहीं—पहले—शराबबन्दी के पहले, पर अब चारों ओर से दआओं की वर्षा हो रही है बार बार । गरीबों के घरों में रोज़ दाल रोटी बनने लगी है । भूखें मर रहे थे पहले । रोज़ शाम को भट्टी पर तुलसी पत्र चढ़ता था और घर वाले रोते पीटते थे । अब दूध पीते हैं, कॉफी पीते हैं—मजे कर रहे हैं भाई, इसीलिइ तुम्हें यह गाना सूझ रहा है । घर की चहार-दीवारों में ही रहती हो न !—

फिरोज़—अब जाओ दादा !

प्रभास—क्यों ? क्या हुआ ? क्या बिगड़ गया ? क्या भूल हुई मुझसे ? बोलो न मणि—मैंने क्या झूठ कहा है ? संसार हँस रहा है !—नहीं हँस रहा है संसार ?—फिर यह क्यों नाराज़ हुई मुझ पर !

फिरोज़—संसार हँस रहा है पर तुम हँसते हो ?

प्रभास—वाह ! मैं कब नहीं हँसा हूँ ? बराबर हँसता रहता हूँ, इसीलिए न तुम मेरी बराबर तारीफ़ करती रहती हो ?

फिरोज़—अब पश्चाताप होता है मुझे ।

प्रभास—क्यों ?

फिरोज़—तुम्हें एक बार रोते हुए देखने की आज इच्छा हो रही है मुझे ! सारा संसार ही हँसने लगे तो रोये कौन ?

प्रभास—रो भी रहे हैं कोई कोई ! जिनकी दुकानें बन्द हो गईं, जिनका रोज़गार जाता रहा वे रो रहे हैं । पिताजी के सेक्रेटरी को देखो—वह नहीं रोता । फौरन नौकरी मिल गई भाई को । कितनी ईर्ष्या हो रही है इससे औरों को । अब वह क्योंकर रोये ?—ऐश कर रहा है भाई—

फिरोज़—इसीलिए मुझे लगता है—वह नहीं रोता तो तुम एक बार रोओ ।

मणि—यह कैसा अशुभ मज़ाक कर रही हो जी ?

प्रभास—यह मज़ाक नहीं है मणि । ये जो कह रही है मैं समझता हूँ, मैं भी कभी-कभी महसूस करता हूँ कि रोऊँ । माँ मरी तब भी मैं नहीं रोया

—पिताजी की आँखे भी उस समय गीली नहीं हुई थीं । उन्हीं का बेटा हूँ न मैं ?—इससे पूछ लो—

फिरोज—वया मौत ही के लिए रोना होता है ?

प्रभास—सच है । मरे नहीं कि सब समाप्त । जीना होता है इसलिए रोना पड़ता है । पर तुम नहीं जानती फिरोज, जो लोग अधिक हँसते हैं वे अन्दर ही अन्दर रोते रहते हैं । बराबर आँसू ढालते रहते हैं दिल में से ! (बेटर आता है) क्या है ?

बेटर—चाय लाऊँ या कॉफी ?

प्रभास—देखो, एक चम्मच दूध ले आओ मेरे लिए । ये छोकियाँ बड़ा ध्यान रखती हैं मेरा । कहता है 'चाय लाऊँ या कॉफी' ! जाओ—आरेंज जूस ले आओ । (बेटर जाता है) कितना ख्याल रखता है यह मेरा !—नौकर हो तो ऐसा हो !

फिरोज—सच है ।

प्रभास—बिल्कुल बेफिकर हो गया हूँ मैं इसकी वजह से । मुझे क्या चाहिये यह मेरी अपेक्षा वही अधिक समझता है ! पिताजी भी कितनी तारीफ करते हैं इसकी !—(बेटर गिजास लाकर देता है और चला जाता है । वह पीते पीते कहता है) तुम्हारा काम कैसा चल रहा है मणि ? औरतों से डरने लगे हैं न सब लोग ? स्टेशन पर तुम्हें देखा—और वह तुम्हारा पुलिस का भुँड—आबकारी साड़ी-पलटन !—

फिरोज—दादा !

प्रभास—सारी दुनिया कह रही है फिर मैंने ही क्या अपराध किया है ?—इननी नाकाबन्दी कर रखी है फिर भी रोज एक न एक बोटल मिल ही जाती है—उधर गोआ है—दीव है—दमन है !—वहाँ पाण्डीचेरी में न जाने क्या हो रहा होगा, भगवान ही जाने ! फिर भी कहते हैं, हिन्दुस्तान खुशक हो गया है ! साहब लोग यहाँ हैं या नहीं ? क्या उनका इन्तज़ाम नहीं होना चाहिए !—वे बिचारे ताड़ी नहीं पीते—ठर्रा वे जानते भी नहीं—

फिरोज—अब जाओगे यहाँ से ?

प्रभास—यह है मुझ पर स्नेह करने वाली बहन ! देख लिया मणि ? यह है मेरी अत्यन्त प्रिय रक्षक ! इसके भरोसे मैं जी रहा हूँ !— (फिरोज जाती है) रूठ गई ! तुम इसके रूठने की ओर ध्यान न दो । यह प्रेम का गुस्सा है । जब वह रूठ कर चली जाती है तब मुझे चैन मिलता है । मेरे हिस्से में इतना ही सुख है । अभी से तुम्हें इस बात की आदत डाल लेनी चाहिए । प्रेमी जनों का रूठना देखे बिना मेरी तसल्ली नहीं होती । (सीढ़ियों पर पैरों की आवाज आती है) पिताजी आ गये शायद ?—

मणि—मैं अब जाती हूँ—

प्रभास—क्यों ? तुम भी रूठ गई ?—ये क्या बात है मणि ! रूठने के लिए काफी समय है अभी । अभी से उसका अभ्यास न करो । पिताजी आ रहे हैं, उनके सामने मुझे किसी का सहारा चाहिए, ठहरो ।

दीवान—(जीने पर से उतरते समय मालिक से) इन्स्पेक्टर बदलना पड़ेगा । संदेह के लिए ज़रा भी गुँजाइश न रहे । उसका जुर्म साबित न हो रहा हो तो खाली नोटिस देकर निकाल दो—पर संदेह के लिए जगह न रहे । जाइए । (मालिक जाता है) आ गए ? मैं जानता था—फिरोज कहाँ है ?

प्रभास—(पीते-पीते) वह मुझ पर रूठ गई है ।

दीवान—क्यों ?

प्रभास—मज़ाक नहीं समझ पानी—चाहती नहीं । मुझ से ही भूल हुई ।

दीवान—(बैठ जाता है) है कोई तुम्हारे भरोसे का आदमी ? अभी-अभी चार व्यक्तियों को पदच्युत करना पड़ा है—पैसे का लोभ बड़ा विकट होता है—पैसे के लोभ का शिकार न बन पाए ऐसा कोई व्यक्ति—

मणि—है ।

दीवान—कौन ?

मणि—एक विद्यार्थी—मेरा ममेरा भाई ।

दीवान—विश्वासपात्र है ?

मणि—मुझ जैसा ही ।

दीवान—ठीक है । अभी तुरन्त ले आओ । जाओ । (मणि जाती है)

प्रभास—कौंसिल में झड़ी लग जायगी प्रश्नों की ।

दीवान—मैं दूढ़ हूँ उत्तर देने के लिए । एडवर्टाइज करके विश्वासपात्र लोग नहीं मिला करते । काम अच्छा होना चाहिए । कौन्सिल को क्या, प्रश्न पूछना आसान होता है लेकिन आदमी पाना बड़ा कठिन । मुझे आदमी चाहिए है । अच्छे आदमी हासिल करते समय यदि कोई मेरी ओर अँगुली उठाए तो मैं किसी की भी पर्वाह नहीं करूँगा । उत्तरदायित्व से अनभिज्ञ लोगों के फालतू प्रश्नों को मैं ज़रा भी महत्त्व नहीं दूँगा । (फिरोज़ आती है) गुस्सा दूर हो गया ?

फिरोज़—(प्रभास से) क्या बताया तुमने पिताजी को ?

दीवान—यह तो चलता ही रहेगा । दूसरा है ही कौन ? तुम दोनों इस प्रकार भगड़ने लगे तो तुम्हें समझाएगा कौन ?— तुम्हें स्वयं ही निबटारा कर लेना चाहिए—

फिरोज़—पर भगड़ा कौन ?

प्रभास—तुम रूठ नहीं गई थी ?

फिरोज़—अब मैं नहीं तो हूँ नहीं ?

प्रभास—कौन कहता है कि तुम नहीं हो ? पर रूठने के लिए क्या नन्हा होना जरूरी है ? बयस्क लोग क्या नहीं रूठते ? पिताजी भी तो रूठ जाते हैं कभी-कभी !

दीवान—प्रभास !—

प्रभास—(पीते पीते) स्वीकार न कीजिए—पर कौन नहीं रूठता ? बच्चे से लेकर बूढ़े तक, प्रत्येक व्यक्ति रूठा करता है । कितना सुख होता है रूठने में कितना आनन्द होता है ! उसी आनन्द के सहारे तो गृहस्थी सुखी हुआ करती है—

फिरोज़—गृहस्थी हो तब तो ? अधूरी गृहस्थी मिटाकर संसार की गृहस्थी का भ्रंश सम्भालने वाले का रूठने-बूठने से काम नहीं चला करता दादा !—

[मालिक आता है और सलाम करके चुपचाप खड़ा हो जाता है ।]

दीवान—क्या है ?

मालिक—सरकारी काम—यहीं बताऊँ ?

दीवान—चलिए । (उठकर जाने लगता है—मालिक उसके पीछे-पीछे जाता है) मणि के आते ही मुझे सूचना दो । सुना फिरोज ? (जाता है)

फिरोज—मणि का क्या काम है पिताजी से ?

प्रभास—क्यों, ईर्ष्या हुई उससे ?—हँस क्या रही हो ? तुम नहीं जानती फिरोज, वह बड़ी शैतान है । अवसर से लाभ उठा गई ।

फिरोज—कैसा लाभ ?

प्रभास—देखो फिरोज, तुम्हारी अपेक्षा मुझे मणि से अधिक प्रेम है । यदि उसका प्रभाव बढ़ जाए तो मुझे उस बात से आनन्द होगा—उसके लिए यदि क्षण भर तुम्हारी मान हानि हो जाय तो भी मुझे खुशी ही होगी ।

फिरोज—न बताओ !

प्रभास—रूठ गई ?—अब यही देख लो, कितना आनन्द है रूठने में ! नहीं बोलोगी ?—लो अब मैं भी रूठ जाता है । (एक ओर जाकर बैठ जाता है । क्षण भर स्तब्धता रहती है । फिरोज उठकर कोठे की ओर जाती है, कठड़े के सहारे खड़ी होकर इन्तजार करती है—थोड़ी देर विचार करती है और ऊपर जाती है) (बेटर आता है)

प्रभास—देखो—जूस खतम हो गया—बड़ा मीठा था ! फल ताजे थे शायद । और ले आओ । (गिलास लेकर बेटर शरारती भाव से हँसता हुआ जाता है ।)

[प्रभास ड्राईंगरूम में की कुर्सी के पास आकर खड़ा हो जाता है—उस पर बैठ जाता है—फिर से उठकर कुर्सी ठोंक कर देखता और हँसता है तभी बेटर आता है ।]

प्रभास—साबुत है न यह कुर्सी ? हँसते क्या हो ? पिताजी बैठते हैं इसलिए पूछ रहा हूँ ! साबुत है न ?

बेटर—वैसी ही साबुत है यह—इसे किसी भी बात का डर नहीं ! कैसी

गुलगुली-सी गदियाँ हैं ! जी चाहता है उस पर बैठूँ कुछ देर पर—

प्रभास—पर क्या ?

बेटर—पर हिम्मत नहीं होती । हुजूर की कुर्सी है—हम नौकर लोग—
किसी ने देख लिया तो नौकरी ही जाती रहेगी ।

प्रभास—आओ बैठो ।

बेटर—यह क्या साहब !—

प्रभास—कह रहा हूँ न बैठो ? तुम्हारी नेकी पर ही यह सिंहासन कायम है । तुम्हारे ईमान की वदौलत ही पिताजी आज इस कुर्सी पर बैठते हैं । तुम्हें अधिकार है यहाँ बैठने का । बैठो । (उत्ते जबर्बस्ती बैठाता है तभी मणि और प्रकाश प्रवेश करते हैं) आ गई—आओ । (बेटर उठकर चला जाता है) यही है शायद वह तुम्हारा चचेरा भाई ?

मणि—चचेरा भाई नहीं—ममेरा भाई ।

प्रकाश—नमस्ते !

प्रभास—यह कित्त लिए ? आप घर ही के लोग हैं—यहाँ इस 'नमस्ते' की क्या ज़रूरत है ?—पिताजी ने आपको ठहरने के लिए कहा है—बैठिए—
नाम क्या है इनका ?

मणि—प्रकाश ।

प्रभास—बैठिए प्रकाश जी । मैं दीवान साहब का लड़का हूँ—मेरा नाम—

प्रकाश—श्री प्रभास । मैं जानता हूँ । मणि मुझे सब कुछ बताया करता है ।

प्रभास—अच्छा ? बड़े भाग्यवान् हैं आप । यह जो हमारा आपस में है यह भी इसने—

प्रकाश—जी हाँ—बता दिया है ।

प्रभास—हूँ—(बैठकर धीरे धीरे पीता है)

[सीढ़ियों पर फिरोज आती है]

फिरोज—आ गए ? भेज दो इन्हें ऊपर । तुम न जाना । (कहती हुई नीचे आती है । प्रकाश धीरे धीरे उरता उरता ऊपर जाता है । तब तक सब

उसकी ओर देखते रहते हैं ।)

प्रभास—होशियार आदमी जान पड़ता है ।

फिरोज—कम से कम अभी नहीं जान पड़ता ।

प्रभास—मैं जो भी कहूँ तुम्हें नहीं जंचता ।

फिरोज—मुँह देखी बात करना मुझे पसन्द नहीं । मुझे मणि को खुश नहीं करना है । जिरा काम के लिए यह आदमी चाहिए हैं उस योग्य इसे कम से कम मैं नहीं समझती ।

मणि—जरा घबरा गया है वह !

फिरोज—तुम तो जानती ही हो पिताजी को !—कितना डरता डरता जा रहा था ! साहस का है वह काम—जान की पर्वाह न करने वाले आदमी की ही जरूरत है उस काम के लिए ।

मणि—प्रकाश वैसा ही है ।

प्रभास—सुन लो—वैसा ही है ! कैसा मदं दिखाई देता है । यों ही मणि ने सिफारिश नहीं की है ! (फिरोज पीछे जाती है, बेटर आ रहा है, उसके हाथ से पान जबर्दस्ती छीन लेती है, तब तक प्रभास बोलता रहता है) इसकी आदत ही दूसरे को बुरा कहने की है । इसकी बात पर ध्यान न दो मणि । बड़ी जिद्दी है यह—

फिरोज—यह लो । (पान देती है, प्रभास चौकता है और पान लेता है)

प्रभास—थैंक यू ! बॉय ! बॉय !! (बेटर आता है । गिलास पकड़ते समय वह उसकी ओर आँखें निकाल कर देखता है । बेटर गर्दन झुकाए चला जाता है) दुबारा ऐसी गलती न करना ! यदि घर के लोग ऐसे छोटे छोटे काम करने लगे तो नौकरों की जरूरत क्या है ?

मणि—क्या हो गया ?

फिरोज—कुछ नहीं—(ऊपर देखकर) अभी तक कोई भी क्यों नहीं आया ?

मणि—मुझे भी फिकर होने लगी है । प्रकाश कहीं घबरा तो नहीं गया ? (मालिक नीचे आता है । मणि उसकी ओर दौड़ती हुई जाकर) क्या हुआ ?

फिरोज—मरिण, इधर आओ ।

मरिण—क्या हुआ ?

फिरोज—तुम्हें इतना भी धैर्य नहीं ? कितनी भावुक हो । क्या इसी प्रकार जिम्मेदारी वाले काम पूरे करोगी ?

मालिक—(फिरोज से) बड़ा उमदा आदमी है । साहब को पसन्द है—काम की बातें समझा रहे हैं उसे ।

प्रभास—सुन लो । देख लिया मरिण, यह है इसकी परीक्षा ! किसने किया मरिण को खुश अब ? मैंने या पिताजी ने ? नालायक था न वह—फिर नलायक आदमी चुनने के लिए पिताजी भोले हैं या सिफारिशी हैं ? बताओ न ।

मालिक—बहुत खुश हुए साहब । बड़ा तेज आदमी है ! दनादन जवाब दे रहा था ! एम० ए० है, तालीम याफ़ता है, नौजवान है—और विश्वसनीय लोगों का विश्वासपात्र है ।

फिरोज—कहाँ कहाँ पीटोगे डिढोरा यह ?

मालिक—पूछा था इसलिए—

फिरोज—जाइए, अपना काम कीजिए ।

प्रभास—जैसे यही दीवान हो ! (प्रकाश तथा दीवान आते हैं)

दीवान—(मरिण से) शाबास मरिण—

प्रभास—सुन लो फिरोज ।

दीवान—क्या है ?—मि० प्रकाश, कल से आप अपनी ड्यूटी पर हाज़िर हो जाइए । समझे !

प्रकाश—जी । (इधर उधर देखता है—और सलाम करके जाता है)

दीवान—एक विन्ता दूर हुई । ईमानदार आदमी चाहिए था । चलो मरिण तुम्हें घर पहुँचा देता हूँ । (दोनों जाते हैं । मालिक भी जाता है)

प्रभास—तुम्हारी ओर देखा भी नहीं पिताजी ने !

फिरोज—हूँ—पर तुम्हारी ओर भी नहीं देखा ।

प्रभास—क्यों ? उन्होंने कहा तो था 'क्या है' ।

फिरोज—इतने से ही खुश ! हँ : !—आखिर मैं ही बेबकूफ साबित हुई !

प्रभास—तुम्हें कौन बेवकफ कहेगा ? पिताजी का कितना विश्वास है तुम पर ! मैं हूँ ऐसा—कोई भी मेरी ओर ठीक नज़र से नहीं देखता । मरिण है—जिसके लिए मैं इतना तड़पता रहता हूँ—पर देखता हूँ वह भी तुम्हारे ही चारों ओर घूमती रहती है । और तुम तो पिताजी की Confidential Adviser !—क्यों ? फूल क्यों उठी ? मुझे तुमसे ईर्ष्या नहीं—मैं तो वास्तविकता बयान कर रहा हूँ—

फिरोज़—बस करो, कितना बकबक करोगे ! पान खाने का परिणाम दिखाई दे रहा है !

प्रभास—इस तरह छोड़ो मत मुझे ! हाँ—मैंने पान माँगा था ? क्यों ? बोलती क्यों नहीं ?—

फिरोज़—तुम्हीं जानो !

प्रभास—इस प्रकार नाराज़ न हो । तुम्हारे भरोसे ही तो मेरे सारे चोंचले चल रहे हैं ?—अभी मैंने पी—प्रत्यक्ष पिताजी के सामने पी रहा था—मरिण के सामने पी रहा था—ज़रा भी नहीं हिचकिचाया—क्यों ?—तुम थीं इसी लिए न ?—मुझे विश्वास था—तुम मुझसे विश्वासघात नहीं करोगी—इसी लिए मैंने इतनी हिम्मत की ?—

फिरोज़—और मैं बता दूँ तो ?

प्रभास—तुम नहीं बताओगी !

फिरोज़—यह कैसे कह सकते हो ?

प्रभास—मैं तुम्हें पहचानता हूँ—अच्छी तरह पहचानता हूँ—X-Ray की भाँति मेरी दृष्टि—मैं यों तुम्हारी आँखों में से तुम्हारा अन्तरतम देखा करता हूँ—ठीक नबज़ पर अँगुली रखकर देखा जाता है उसी तरह देखता रहता हूँ—और जो चाहता हूँ करता हूँ—

फिरोज़—मेरी बुद्धि पलट जाय—

प्रभास—नहीं पलटेगी । मेरे लिए नहीं—पिताजी के लिए नहीं—शराब-बन्दी के तत्व के लिए भी नहीं । तुम किसके लिए अपना दम घुटा रही हो यह शायद तुम भी नहीं जानती हो—तुम अपने साथ धोखा कर रही हो ! यह

वात्सल्य नहीं है—बन्धु प्रेम नहीं है—तत्त्वनिष्ठा नहीं है—फिरोज, यह तुम्हारा मातृ प्रेम है—मणि के कारण तुम मुँह पर ताला लगाए बैठी हो—डर रही हो, इसलिए कि मणि को सदमा पहुँचेगा—मेरी बदनामी हुई तो तुम्हें दुख होगा—नहीं यह बात नहीं—पर मणि को सदमा पहुँचेगा इस बात का तुम्हें अधिक डर है। क्यों ? बोलो न फिर।

फिरोज—बस ?—कह चुके ?

प्रभास—नहीं—यों टाल मटोल न करो। सीधी तरह से स्वीकार करो। हाँ कहते हुए क्या डर लगता है ? इतनी हिम्मत वाली औरत होकर मेरे सामने स्वीकार करने से डरती हो ? बोलो ?

[फिरोज चुपचाप चली जाती है ।]

प्रभास—औरत जान ! हूँ : !! (इधर उधर टहलता है । कुर्सी के पास आकर उसे ठोंकता है—इधर उधर से कुर्सी पर हाथ रखकर टटोलता है तभी मालिक आता है ।)

मालिक—(धीरे से) जरा ठहरिए—आवाज होगी !

प्रभास—अच्छा ?—अच्छा—बड़ा अच्छा स्वाँग रचा ?

मालिक—कैसे ?

प्रभास—प्रकाश के बारे में ।

मालिक—विल्कुल नहीं। सचमुच वह आदमी बड़ा निडर जान पड़ता है। यहाँ आते ही क्यों ऐसा हो जाता है, ईश्वर ही जाने ! साहब के सामने इस तरह बोल रहा था—इतनी जानकारी इकट्ठा कर रखी है पट्टे ने—सुनते ही मैं हैरान रह गया। डरने लगा हूँ मैं। वह औरों-सा नहीं जान पड़ता ! पिघलना कठिन है—मामूली आँच से काम नहीं चलेगा। रूपहरी आँच से परे जाना होगा !—

प्रभास—केवल अन्दाज़ा—

मालिक—नहीं—मुझे विश्वास है। आपकी अपेक्षा—नहीं आपके पिताजी की अपेक्षा मेरी मनुष्य की पहचान अधिक अच्छी है। ऐसे वैसे नहीं हैं ये हज़ारत—कौन कह सकता है, यह काँटा उखाड़ भी फेंकना पड़े—

प्रभास—हैं हैं !—

मालिक—दया पहले अपने पर की जाती है—बाद में दुनिया पर—सबसे बाद में दुश्मन पर । और फिर ऐसा खतरनाक दुश्मन मिलते ही उसके गले में हाथ डालना चाहिए—दोस्ती के लिए नहीं—गर्दन मरोड़ने के लिए !—चौक उठे ? और कहते हैं प्याला चाहिए !—शराबबन्दी के बाद जो प्याला चाहता है उसे मन मारे मरियल बन जाना चाहिए । मैं पैसे के लिए मर रहा हूँ—आप तलब के लिए मर रहे हैं—पैसा क्या और तलब क्या, दोनों एक ही है । दोनों मनुष्य को निडर बना देते हैं । इस प्रकार हिम्मत हार कर कैसे काम चलेगा ! 'मैं' चाहिए है न, फिर मनुष्य की गर्दन मरोड़ने में डरने से कैसे काम चलेगा ?

प्रभास— निर्लज्ज हो ।

मालिक—हूँ—और कहता हूँ, आप भी अब ऐसे ही बन जाइए—'मैं' चाहिए है न ?

प्रभास—'मैं' चाहिए है न !—'मैं' चाहिए है—प्राण व्याकुल हो उठते हैं उसके बिना, पर क्या उसके लिए निर्लज्ज बन जाना चाहिए ?

मालिक—तो छोड़ दीजिए 'मैं' !

प्रभास—छोड़ देता—पर मौका है—गुँजाइश है,—फिर क्यों छोड़ूँ ?

मालिक—तो फिर दया ममता छोड़िए—इन्सानियत छोड़िए ।

प्रभास—यही मुश्किल है । मुझे इन्सानियत का बड़ा अभिमान है । 'मैं' छोड़ दूँगा पर इन्सानियत छोड़ना मेरे लिए मुश्किल होगा । पिताजी का बेटा हूँ न ? हम लोगों को इन्सानियत का बड़ा ख्याल है । मेरी बहन को देख लिया है न ?—ऐसे विचित्र लोग हैं हम—एकदम संसार से अनोखे लोग हैं हम । इसी लिए दुनियादार लोगों से हमारी नहीं बनती ।

मालिक—बड़ी समझदार है आपकी बहन ।

प्रभास—मानते हो न ? तो फिर सावधान रहो । लड़की समझ कर असावधान रहोगे तो मेरे और अपने दोनों के गले में फाँसी लगवाओगे । बेटा-बेटा कुछ नहीं समझेंगे पिताजी—राक्षस हैं—ऐसे काम में दया ममता नहीं बर्तेंगे ।

मालिक—एकदम अक्षरशः सच है। इसीलिए न मैंने यह नौकरी स्वीकार की ? एकदम निडर-सा हो गया हूँ इस नौकरी के कारण—कुछ चोरी-छिपाव नहीं करना पड़ता—नहीं तो तहखाना खोदकर काम धन्धा चलाना पड़ता। अमरीका में भी क्या ऐसे तहखाने नहीं बने थे उस समय ?

प्रभास—अब पिताजी आते होंगे। और वह कमबख्त भी यहीं कहीं छुप कर सुन रही होगी।

मालिक—उसे तो कहीं शक नहीं हुआ है ?

प्रभास—शक ही करने की क्या जरूरत है। वह बड़ी चालाक है, स्वयं पिताजी पर शक करने में भी कमी नहीं करेगी। इस काम में सच्ची लगन है उसकी—और उस मरिण की। पिताजी से भी बढ़कर है वे दोनों—और आज उस टॉरभून को ले आई है मरिण—आदमी बड़ा विकट जान पड़ता है। कहीं लालच दिखाने का प्रयत्न न कर बैठना, समझे ?—

मालिक—नहीं जी ! क्या मैं इतना मूर्ख हूँ ?

प्रभास—पैसों के भूखे आदमी की मूर्खता असीम होती है। यही असंतोष कभी न कभी उसका गला कटवाता है। इन अमीरों के जो दीवाले पिट जाते हैं वे इसी अदमनीय लालच के कारण, इस लिए कहता हूँ—कौन आया ?—चले जाओ अब। और सुनो ! ध्यान रखना, यह कुर्सी भरी रहनी चाहिए।

मालिक—जी—(मालिक हँसता हुआ जाता है, प्रभास दोनों दरवाजों में से भाँक कर वापस आता है। प्रकाश आता है।)

प्रभास—आइए इन्स्पेक्टर साहब—

प्रकाश—साहब है ?

प्रभास—मैं क्या जानूँ ? मैं उनका चपरासी तो हूँ नहीं।

प्रकाश—क्षमा कीजिए—बहुत जरूरी काम है—

प्रभास—मुझे बता दीजिए।

प्रकाश—मुझे हुकुम नहीं है।

प्रभास—तो दूँड निकालिए अपने साहब को जहाँ हों। (जाने लगता है)

प्रकाश—(उसके पीछे जाते हुए) कृपा कीजिए, बड़ा जरूरी काम है—

साहब से भेंट अभी होनी ही चाहिए । नहीं तो कम से कम सेक्रेटरी से ही—

प्रभास—दीवान जी के बेटे की अपेक्षा दीवान जी का सेक्रेटरी अधिक विश्वसनीय है, क्यों ?

प्रकाश—धमा कीजिए—यह सरकारी काम है ।

प्रभास—तो फिर उन नायब दीवान साहब को बुला लाऊँ ?

प्रभास—नायब दीवान कौन ?

प्रभास—मेरी बहन—कैप्टन फिरोज—प्रथम साड़ी पलटन की कमांडर-इन्-चीफ ।

प्रकाश—मुझे ऐसा हुक्म नहीं है ।

प्रभास—बड़े कड़े जान पड़ते हैं ये हुकुम । देखिए ऐसे हुकमी हुकम संसार में मैं नहीं रहा हूँ । मैं एक अवारा लडका हूँ । बैठ जाइए यहाँ चुपचाप और पिताजी आने का इन्तज़ार कीजिए, (जाने लगता है, दरवाजे में फिरोज आती है, वह आते ही उसके साथ लौट पड़ता है)

फिरोज—क्या है ?

प्रकाश—दीवान साहब से मिलना चाहता हूँ मैं—अभी—अभी इसी समय । बड़ा ज़रूरी काम है ।

फिरोज—काम पर तो कल से आएँगे आप ?

प्रकाश—जी हाँ—पर—

फिरोज—मैं समझती हूँ, आप कल आइए ।

प्रकाश—नहीं नौकर के नाते नहीं—एक नागरिक के नाते मुझे उनसे मिलना है । बड़ी महत्वपूर्ण खबर मिली है मुझे ।

प्रभास—मुझे नहीं बताते—सेक्रेटरी से काम चल जायगा पर बेटे से नहीं ।

फिरोज—ज़रा चुप रहोगे दादा । क्या खबर है ?

प्रकाश—मैं साहब से ही मिलना चाहता हूँ ।

फिरोज—शाबास !—यहीं बैठिए । अभी आए जाते हैं साहब ।

प्रकाश—चिड़िया को पर फूट निकले हैं, कब उड़ जाए कोई भरोसा नहीं ।

[दीवान बाहर से आता है, प्रकाश सलाम करता है ।]

दीवान—क्या है ?

प्रकाश—एक खबर है—

दीवान—आप तो कल से नौकरी पर आएँगे ?

प्रकाश—नागरिक के नाते—इन्स्पेक्टर के नाते नहीं—शराबबन्दी पर नाज करने वाले के नाते—

दीवान—अच्छा । आइए । (दीवान तथा प्रकाश कोठे पर जाते हैं)

प्रभास—तुम भी पराई हो गई, ऐं ? मैं तो अप्रिय था ही—तुम त्रिलकुल भंतरंगी—पर तुम भी—

फिरोज—चुप रहो !

प्रभास—और 'दादा' कहती हो मुझे !

फिरोज—यह ढोंग क्यों करते हो ? क्या तुम्हें कोई चिन्ता है ही नहीं ? इतनी-सी बात कैसे नहीं समझते ! पिताजी का दायित्व पिताजी जानते हैं—उसमें हस्तक्षेप करने का अधिकार न तुम्हें है न मुझे ।

प्रभास—ऊब गया हूँ इस आँख मिचौनी से । प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे पर अविश्वास रखता है । जिधर देखो चोरी चोरी—छिपना छिपाना, प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखता है । बाप बेटे को, बेटा बहन को—पत्नी पति को—पति पड़ोसी को—सभी आँखें चुरा कर देख रहे हैं एक दूसरे की ओर !

फिरोज—और तुम ?

प्रभास—मैं बहुत छिपाऊँ, पर तुम्हारी आँखें हैं न तेज ?

फिरोज—यानी तुम स्वयं कुछ नहीं बताते । ढूँढना पड़ता है दूसरे को ? क्यों ?

[प्रभास कुछ न कहकर सीढ़ियों के पास जाकर ऊपर देखता रहता है, फिरोज उसके पास जाकर खड़ी हो जाती है ।]

फिरोज—क्या देख रहे हो ?

प्रभास—देख रहा हूँ, आकाश के तारे क्या फँसला सुनाते हैं ।

फिरोज़—सेक्रेटरी कहाँ है ?

प्रभास—अपनी गुफा में !—कागज रंग रहा है वच्चा—कलम घिस रहा है !—स्याही बर्बाद कर रहा है व्यर्थ—(ठहर कर) क्या पता कुछ और भी कर रहा होगा । मैं भी कहाँ ठीक से जानता हूँ ? यही तो हूँ इतनी देर से !—बाँय्—बाँय्—(बेटर आता है) सन्त्रे का रस ले आओ थोड़ा—(बाँय् जाने लगता है)

फिरोज़—ठहरो ।—(प्रभास से) अब बस करो । उतने से सन्तोष नहीं हुआ ?

प्रभास—(बेटर से) अच्छा—तो पानी ले आओ थोड़ा, गरम—एकदम गरम !—

बेटर—चाय ले आऊँ ?

प्रभास—नहीं—पानी—सादा नल का पानी—एकदम गरम—हलक जल जाए इतना गरम, जाओ । (बेटर जाता है) इस तरह तरस भरी नज़र से क्यों देख रही हो मेरी ओर ? हर व्यक्ति को कुछ न कुछ व्यसन होता है—तुम्हें नहीं है यह व्यसन ?

फिरोज़—काहे का ?

प्रभास—आकाश छूने का ? कहते हैं शराबबन्दी करेंगे । कभी बन्द हुई है शराब ?—अरी यज्ञ करेंगे लोग—वेदों की दुहाई देंगे—आर्य संस्कृति को पुनर्जीवित करते समय सोमपान करेंगे । फिर धर्म में हस्तक्षेप कैसे करोगे तुम लोग ? किसी के धर्म पर आक्रमण कर सकते हैं हम लोग ?—

फिरोज़—चुप रहो—चुप रहो—कह रही हूँ न कि चुप रहो ? एक शब्द भी मुँह से न निकालो ।

प्रभास—यह है धर्म की मात्रा ! कैसे बोल पड़ीं ! पागल हो उठीं—बौखला उठीं—उबल पड़ीं ! यह है धर्म का प्रभाव ! तो तय रहा—कल से बन्दा याज्ञिक होगा—(मणि घबराई घबराई-सी आती है) सुना मणि, कल से मैं याज्ञिक हूँगा—अग्निहोत्र धारण करूँगा—

मणि—ठहरिए—(फिरोज़ से) प्रकाश आया है यहाँ ?

फिरोज़—हां । ऊपर पिताजी से बातें कर रहा है ! इधर आओ—
(दोनों एक ओर जाती हैं)

प्रभास—तो मैं ही चोर हूँ ! और यह मुझसे प्रेम करती है !—कहती है मेरे साथ विवाह करेगी ! कैसे निर्वाह होगा मेरा ? हे यज्ञ देवता, वेदो-
नारायण, क्यों किसी को भी मुझ पर दया नहीं आती ? (बेटर पानी लिए आता है) देवता की भाँति मेरी पुकार सुन कर दौड़े आए ! दो ।

बेटर—पानी—सिर्फ पानी ! समझे ! (निःश्वास छोड़ता है) निसर्ग का निर्मल पानी—जमीन में से निकला हुआ पानी ! आकाश गंगा का जीवन नहीं—
सादा पानी—हर हर !—

प्रभास—जाओ अपना काम देखो । (बेटर जाता है) वे देख रही हैं इधर !
फिरु अरी, हो गई मन्त्रगाएँ ? इधर ज़रा मेरी ओर भी तो देखो !—(ऊपर से दीवान तथा प्रकाश आते हैं—दूसरी ओर से मालिक आता है ।) हो गई सब की मन्त्रगाएँ ?

दीवान—जाइए—वह लिफाफा सम्भाल कर रखिए । पुलिस की टकड़ी साथ ले लीजिए । यह आर्डर दिखाते ही सुपरिटेण्डेन्ट सारी व्यवस्था कर देगा—

मालिक—इस आर्डर की कापी रखनी है ?

दीवान—कोई ज़रूरत नहीं । डेमी ऑफिशियल काम है ! (प्रभास और मालिक एक दूसरे को संकेत करते हैं) जाइए । (प्रकाश सलाम करके जाता है) (मालिक से) आप भी जाइए अब । घर जाइए—समझे ?—घर जाइए ।

प्रभास—और मैं भी जाऊँ ? (दीवान उसकी ओर देखता भग्न रहता है—
प्रभास पानी पीता पीता चला जाता है)

[दीवान टहलने लगता है, तभी फिरोज़ और मणि सामने आती हैं]

दीवान—इस परीक्षा में मैं कैसे सफल हूँगा—बेटियो ?—विश्वास भी किस पर करूँ ? कुछ कहने तक की चोरी है ! युद्ध की राजनीति भी इसके सामने फीकी लगती है ! जाल फैला रहे हैं चारों ओर—अभी तक गुप्त व्यवहार बन्द नहीं हुए ! कौन कौन शामिल होगा इस षड्यन्त्र में ?—

(मरिण से) बड़ा समझदार है प्रकाश । हर काम सोच विचार कर करता है । यों ही बक बक नहीं करता औरों की भांति । (फिरोज से) मुझे काफी विश्वास हो गया है—पर उस विश्वास के कारण ही हिम्मत हारने लगा हूँ मैं । क्या होगा ?—क्या होगा ?—क्या अमरीका की पुनरावृत्ति होगी !—

फिरोज—नहीं—

दीवान—थैक्स !

फिरोज—यह हिन्दुस्तान है । यूरोप के शराबियों की बस्ती नहीं !

दीवान—शाबास—(कुर्सी पर बैठता है) इतना ही धीरज चाहिए मुझे ! एक धीरज का शब्द—यदि वह मिल जाए तो भीम के बल से लड़ूँगा ससार के साथ ! कर लेने दो विश्वासघात !—उसकी भी कोई सीमा होती है ।—फिरू, इधर आओ—यहाँ बैठो—मरिण, तुम यहाँ बैठो !—(दोनों कुर्सी के दोनों हत्थों पर बैठती हैं) कितना धीरज बन्धा है मुझे !—इन दो तोमों के बल पर सारा संसार जीत लूँगा !—मरिण, बेटा, मुँह खोलो और एक गाना सुनाओ—पालने में झुल्लाए हुए बच्चे को चुप करने के लिए जिस प्रकार माँ गुनगुनाती है, कुछ वैसा गाओ—फिरोज—(दीवान के माथे पर हाथ रखकर) कितना गरम हो रहा है माथा !

[मरिण गाने लगती है । गाने के आखिर में दीवान की आँखें झपतीं हैं ।
वे दोनों उसकी ओर निहार कर देखती हैं तभी परदा गिरता है ।]

तीसरा अंक

पहला दृश्य

[मणि के घर का दिखाई देने वाला भाग । दरवाजा—दोनों ओर बन्द खिड़कियाँ—सामने छः सीढ़ियाँ—उनके दोनों ओर कठड़े—कठड़ों के दोनों ओर फूलों के गमले—सामने बायाँ और कम्पाऊंड का आभास पैदा करने वाली रचना ।]

[परदा उठते समय वहाँ कोई नहीं है । बाईं ओर से प्रभास प्रवेश करता है । सीढ़ियाँ चढ़ता है—दरवाजा खड़खड़ाने के लिए हाथ बढ़ाता है—तभी उसका ध्यान फूलों के गमलों की ओर जाता है—वह एक फूल तोड़ लेता है, सूँघने लगता है—तभी द्वार खुलता है तथा प्रकाश बाहर आता है ।]

प्रकाश—ऐं ! कौन ? आप ?

प्रभास—इसमें इतने आश्चर्य की क्या बात हुई ? क्या मुझे यहाँ आने का अधिकार नहीं है ?—या इसके पहले कभी आया नहीं था यहाँ ?—या मैं कोई चोर डाकू हूँ ?—क्या समझे ?

प्रकाश—यों ही मुँह से निकल गया, उसका इस प्रकार उल्टा अर्थ क्यों लगा रहे हैं ?—किसने कहा कि आप यहाँ न आइये ?—पत्र देखा जाय तो मैं भी कभी कभी आता हूँ । इसीलिए हम लोगों की पहले कभी भेंट नहीं हो पाई—

प्रभास—तो फिर बिना मेल जोल के इतना प्रेम ?

प्रकाश—मणि ही आया करती थी मेरे घर ।

प्रभास—हूँ ! बार बार ?

प्रकाश—उसके पिताजी जब ठीक थे तब उन्होंने मेरा यहाँ आना बन्द किया हुआ था । उसी की आदत पड़ गई—इसीलिए नहीं आया करता था कभी ।

प्रभास—इस लिबास में आप बहुत जँचते हैं मि० प्रकाश !—नजर न लग जाय मेरी—अच्छा ! और क्या हाल है ?

प्रकाश—हाल क्या है ?—अन्दर आइए न ?—मरिण नहीं आई है अभी इसीलिए वापिस जा रहा था । क्या बाहर ही बातें करते रहें ?

प्रभास—है नहीं न वह ?—(सीढ़ी पर बैठ जाता है—प्रकाश नीचे उतरते समय आखिरी सीढ़ी पर ठिठक जाता है) जा रहे थे शायद ! कहीं सुराग लगाना है ?—शाबास !—दहशत बैठी है सारे शराब वालों को ! फिरोज नहीं मानती थी—पर मेरी पहचान गलत नहीं हो सकती । हँसिए नहीं—मैं मुँह देख कर तारीफ़ नहीं करता—पर पिताजी अब कितने खुश हैं !—

प्रकाश—मैं अपना कर्तव्य कर रहा हूँ । क्या सचमुच साहब सन्तुष्ट हैं ?

प्रभास—बैठिए, बैठ जाइए इस कठड़े पर । मरिण आई जाती है अभी हाल !—

प्रकाश—ऐसा कोई खास काम नहीं । यों ही चला आया था—अपने अनुभव बताने के लिए !

प्रभास—हूँ ! डेस्डिमोना को अथेलो यूँ ही अपने अनुभव बताया करता था, क्यों ?

प्रकाश—मैं उसका ममेरा भाई हूँ ।

प्रभास—भाई नहीं—मामा का बेटा—‘भाई’ शब्द बहुत बुरा है । ऐसी जगह नहीं जोड़ना चाहिए यह शब्द !

प्रकाश—मैं ‘दीदी’ पुकारता हूँ उसे ।

प्रभास—मैं भी उसे मरिण दीदी कहता—पर वही पसन्द नहीं करती—

प्रकाश—पर मेरा वहना पसन्द करती है ।—जाता हूँ मैं—

प्रभास—क्यों ? डर गए मुझ से ?

प्रकाश—मि० प्रभास, मैं एक सीधा साधा सिपाही हूँ । टेढ़े मार्ग मैं नहीं जानता । मैं सफेद को सफेद और काले को काला कहता हूँ । सफेद को काला बनाकर पचा जाने का मुझ में हाँसला नहीं । मैं वहन को ‘दीदी’ कहता हूँ—

पड़ोसिन को 'दीदी' कहने का औपचारिक प्रघात मैं नहीं जानता और जानना भी नहीं चाहता। समझे ?

प्रभास—बड़े नाराज़ हो गए !

प्रकाश—जा सकता हूँ मैं ?

प्रभास—अब कहाँ जाओगे ? आ ही जो गई मणि—(मणि पुलिस वेश में आती है) आओ—ये चले जा रहे थे; इन्हें रोके रक्खा मैंने । सोचा इतने रोज़ में अतिथि आया है, निराश होकर न चला जाय ।

मणि—चलिए न अन्दर ।

प्रभास—मुझे अन्दर बन्द होना नहीं भाता । बैठो न यहीं—बैठिए जी ! अच्छा रहने दीजिए—वर्दी खराब हो जायगी आपकी । बड़ा रोबीला दिखाई देता है यह पोशाक, क्यों ?

जणि—मुन लो प्रकाश । इनका भी यही मत है । देख लो ।

प्रकाश—मै जाता हूँ । फिर आऊँगा ।

प्रभास—(उठकर) नहीं—नहीं—आपकी होने दीजिए मंत्रणाएँ । मुझे ऐसा कोई खास काम नहीं ।

मणि—(प्रकाश से) बैठो न—(प्रभास से) बैठिए भी !—मुझे भी इस प्रकार खुले में बैठना अच्छा लगता है । घर में सचमुच दम-सा घुटने लगता है । और घर में बैठ कर भी क्या किया जाय ? किससे बातें करू ? दीवाल से—या महाराजिन से ?—

प्रभास—या नौकर लोगों से ?—सच है तुम्हारा कहना—पर गुप्त बातें करने के लिए बाहर बैठना खतरे मे खाली नहीं ।

मणि—हमारी बातें कहाँ ऐसी गुप्त होती हैं ?—

प्रभास—शराबबन्दी की—पकड़ने पकड़ने की—छापे—तलाशी—मुकदमें—सजाएँ—बड़ा उधम मचा रक्खा है इन्होंने । ऐसी खबरें अपनी लाडली 'दीदी' को जो बतानी होती हैं इन्हें ! विवाह हुआ होता तो गुप्त बातों की हिस्सेदार घर ही में होती । विवाह नहीं हुआ है न आपका ?

प्रकाश—इस एक ही ध्येय पर न्योछावर कर दिया है मैंने अपने आप को ।

मणि—कहता है शराबबन्दी से विवाह हुआ है !

प्रभास—विवाह-सा ही यह ध्येय भी पीछा नहीं छोड़ेगा आपका । सारा जीवन व्यतीत करना पड़ेगा इस ध्येय के लिए ।

प्रकाश—यह तो बिल्कुल ठीक है ।

प्रभास—(जोर से हँसता है) यानी ? जिन्दगी भर शराबबन्दी कीजिएगा ? जिन्दगी भर गिरफ्तारियाँ कीजिएगा ? खात्मा नहीं होगा इस विष का ? फिर क्यों की शराबबन्दी ?

मणि—यदि एकदम खात्मा हो जाय शराब का तो मैं समझती हूँ, प्रकाश को अच्छा न लगेगा, यदि पूरी शराबबन्दी हो जाय तो इसके लिए क्या काम रह जायगा ?—ऐसे होते हैं ये पगले !—गुनाह खोज निकालने की हवस होती है इसलिए चाहते हैं कि गुनाह होते रहें । कैसी मज्जेदार बात है, क्यों ?

प्रभास—ऐसे लोग हैं इसीलिए दुनियाँ में गुनाह होते रहते हैं । जितना सख्त कानून होगा उतने ही अधिक गुनाह होंगे—और उतने ही अधिक इन्स्पेक्टर !

मणि—क्यों भई, बोलते क्यों नहीं ?

प्रकाश—भरे दिमाग में यह बात नहीं आई थी ।

प्रभास—इसी को कहने हैं शिकारी कुत्ते का सूँघना ! अपने को तो कुत्ता बनने की अपेक्षा शिकार बनना अधिक पसन्द होगा । कम से कम भाग तो सकता हूँ । पीछा करने के लिए अकल की ज़रूरत होती है—भागने के लिए केवल पैरों में ताकत होनी चाहिए, बस !

प्रकाश—अनुभव वास्तव में ऐसे ही आता है । आज मैंने एक दृष्टि पाई । इसी प्रकार सावधान करते रहिए मुझे । बहुत आभारी हूँगा ।

प्रभास—कभी मेल-मलाकात हो तभी तो कुछ बताऊँ ? आज यों सीढ़ियों पर मुलाकात हो गई इसलिए बोल पड़ा । पिताजी के यहाँ आते ही आप खुफिया पुलिस होते हैं । वहाँ कौन मिला सकता है आपकी आँख से आँख ?

प्रकाश—अब मिला करूँगा बार बार ! अब जा सकता हूँ ?

प्रभास—जाइए (प्रकाश जाता है) बड़ा नेक आदमी है ! लाखों में एक है ! कैंसी धाक जमा रक्खी है पट्ठे ने ! मैं शराब वाला होता तो इसके डर से जान ही दे देता । बैठो न यहाँ—यहाँ—यहाँ बिल्कुल मेरे निकट ।

मणि—लोग गुजर रहे हैं न उधर से ?

प्रभास—लोग हों या जानवर—क्योंकर किसी से डरा जाय ? यह शराब-बन्दी न चल पड़नी तो आज तुम हमारे घर में बन्द पड़ी होतीं !

मणि—बन्द पड़ी होती !—

प्रभास—हाँ ! मैं ज़रा भी न छोड़ता तुम्हें—और मैं भी कहीं बाहर न जाता—पर तुम्हें तो यह भटकना भाता है ! मैं तो एक काव्यमय जीव हूँ । चाहता हूँ कहीं नल्लीन रहूँ । अकेलापन नहीं भाता—

मणि—मुझे भी नहीं भाता एकाकीपन—

प्रभास—इसीलिए जाती हो पुलिस का काम करने । पर मैं वैसी भीड़ नहीं चाहता—मैं चाहता हूँ—क्या चाहता हूँ मैं ?

मणि—अच्छा काव्य हो रहा है !

प्रभास—क्या चाहता हूँ मैं ? मैं कुछ ऐसा चाहता हूँ, जिसमें मैं डूबा रहूँ—सुधबुध भूल जाऊँ—अपनापन खो दूँ—एकदम अपने आप को मिटा दूँ—बिल्कुल खो जाऊँ, कुछ ऐसा चाहता हूँ ।

मणि—शराबी भी ऐसा ही कुछ कहता है ।

प्रभास—समझ लो कि मैं शराबी हूँ—

मणि—रहने भी दीजिए ! उलटी सीधी बातें न कीजिए !

प्रभास—यदि मैं शराबी होता, तो तुम क्या कर लेतीं ?

मणि—तत्काल घर-बार बराती—विवाह करके ! जो मेरी माँ से न बन पड़ा वह मैं करके दिखाती । अपने प्रेम के प्याले भर भर कर पिलाती और फिर देखती कि आपकी शराब कैसे नहीं छूटती !

प्रभास—(जोर से हँसता है) पगली हो !

मणि—तुम क्या जानो शराबियों की सायकॉलाजी ? जीवन भर वही देख रही हूँ मैं, बराबर विचार करती रही हूँ ! माँ की तेज मिजाजी ने पिताजी

की शराब किस प्रकार बढ़ाई है, यह मैंने देखा है । सहन करना ठीक नहीं और न चिड़ जाना योग्य है । बड़ा संतुलित रखना पड़ता है मन—बराबर ध्यान रखना पड़ता है ।

प्रभास—तो था तो मैं शराबी ।

मणि—होते रहें, पर अब शराब कहाँ है ?

प्रभास—हाँ, यह भी सच है—पर प्रकाश तो अभी पकड़ ही रहा है ऐसे लोगों को । कहीं न कहीं शराबखोरी चल रही है—

मणि—और कितने दिन ?—

प्रभास—यही देखना है ! पर इस शराब का क्या किया जाय ?

मणि—किस शराब का ?

प्रभास—प्रेम की शराब का ! मदिरा स्वीकार है—पर मदिराक्षि बड़ी विकट वस्तु है !

मणि—दोनों एक ही जैसी विकट हैं !—इसी बल पर तो आन्हाहन कर रही हूँ ?

प्रभास—ठीक ! तो अब जरूर शराब पीऊँगा । चोरी, छुपके जहाँ भी मिले, प्राप्त करूँगा—इसलिए कि तुम बराबर ध्यान रखोगी !

मणि—इस बात के लिए शराब ही पीने की क्या जरूरत है ?

प्रभास—तुम्हारी नज़र तो आजकल शराब पर है । न जाने कहाँ कहाँ से शराब खोज निकालने का शौक लगा है तुम्हें आजकल—इसीलिए न इस प्रकाश को लाई हो ? इसीलिए न आजकल उसका इतना ध्यान रख रही हो ?—

मणि—वह काम ही खतरनाक है—कब क्या होगा कोई भरोसा नहीं ।

प्रभास—पर मेरी जो उपेक्षा हो रही है इस कारण ? मैं क्या करूँ ? तुम्हारे इस सामाजिक काम में मेरा मन नहीं लगता । ऐसी बात न होती तो बराबर घूमा करता तुम्हारे साथ । और फिर तुम लोगों ने ये साड़ी पलटन बनाई है—इसीलिए तो मैंने छोड़ दिया वह सब ? कब खत्म होगी यह शराब-बन्दी ?

मणि—खत्म नहीं—पूरी होगी । शराबबन्दी पूर्ण होते ही—

प्रभास—होते ही गृहस्थी बसाएँगे—विवाह करके ! और तब मैं समझता हूँ पिताजी भी छोड़ देंगे दीवानी—सब लोग मजे उड़ाएँगे एक जगह—

मणि—और फिरोज चली गई तो ?

प्रभास—कहाँ ?

मणि—जिस प्रकार मैं आऊँगी उसी प्रकार वह चली जाय तो ?

प्रभास—मैं नहीं समझता कि वह कही जायगी । हँसो मत—मैं उसे अच्छी तरह से पहचानता हूँ—

मणि—धोखा है !

प्रभास—कैसा ?

मणि—शराबबन्दी पूर्ण होते ही उसके लिए कौन-सा काम रह जाएगा ?

प्रभास—क्यों ? मैं जो शुरू करने वाला हूँ एक दूसरा आन्दोलन !

मणि—काहे का ?

प्रभास—शराब-सा ही अनर्थ पैदा करने वाली है न एक और बात ?

मणि—शराब-सी ?

प्रभास—शराब से भी भयंकर—

मणि—शराब से भी भयंकर ?

प्रभास—हाँ—प्रेम ! प्रेम-बन्दी का आन्दोलन शुरू करूँगा मैं । अधिक प्रयत्न नहीं करना पड़ेगा उसके लिए । यह व्यसन केवल हम पढ़े लिखे लोगों में है । कुनबी माली केवल विवाह करते हैं—पर शराब की ही भाँति विलायत से आया हुआ यह प्रेम—

मणि—विलायत से आया हुआ ?

प्रभास—हाँ, पहले कहाँ था यह प्रेम ? संस्कृत काव्य देखो—नाटक देखो—है कहीं उनमें प्रेम ? उस समय केवल मदन बाधा थी । महादेवजी की पार्वती हो—दुष्यंत की शकुन्तला हो—या पुण्डरीक महाश्वेता और चन्द्रापीड कादम्बरी हों—सभी को एक-सी मदन बाधा हुआ करती थी । कोई प्रेम नहीं करता था किसी से !

मणि—ऊट पटाँग बातें न करो !

प्रभास—पढ़कर देख लो। बेकार की बातें न करो। यह विलायती प्रेम हम पढ़े लिखे लोगों को भ्रष्ट किए हुए है। इसी लिए मैं प्रेम-बन्दी विषयक बिल पेश करने वाला हूँ कौन्सिल में—इतना सपोर्ट मिलेगा किसानों-मजदूरों से कि—

मरिण—बहुत हुआ मजाक !

प्रभास—तुम इसे मजाक समझती हो ? पिताजी ने जिस समय शराब-बन्दी की बात शुरू की, उस समय सब लोग इसी प्रकार मजाक उड़ाने लगे थे—पर अब हो गया या नहीं वह बिल पास ?

मरिण—पर प्रेम की बात कुछ और है। 'प्रेम परमेश्वर स्वयं परधाम' !

प्रभास—शराबी भी यही कहा करते हैं। हरेक का अपना प्रिय अस्त्र होता है। हर व्यक्ति अपने व्यसन की तरफदारी किया करता है।

मरिण—पर प्रेम क्या कोई व्यसन है ? प्रेम पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाए तो मैं पागल हो जाऊँगी।

प्रभास—शराबी भी इसी प्रकार कहते हैं।

मरिण—और आपका कहना क्या है ?

प्रभास—मेरा कहाँ है अपना निजी मत। मैं हो गया हूँ सर्वथा तुम्हारे अधीन। तुम बताया करो और मैं उस पर अमल किया करूँ—तुम केवल मेरी ओर देखा करो और मैं जीवित रहूँ—तुम सूत्रधार और मैं तुम्हारे हाथ की कठपुतली बनकर—

मरिण—यह प्रेम नहीं है शायद ?

प्रभास—नहीं।

मरिण—तो क्या है ? मदन बाधा ?

प्रभास—ना, बिल्कुल नहीं।

मरिण—फिर क्या है ?

प्रभास—यही सोच रहा हूँ। कुछ तय नहीं कर पा रहा हूँ। पूछना पड़ेगा किसी से—सोचता हूँ तुम्हारे उस प्रकाश से एक बार पूछ देखूँ—

मरिण—वह बिचारा यह सब नहीं समझेगा। वह एकदम खानदानी

नौकर है ।

प्रभास—अच्छा ? प्रेम नहीं जानता वह ? इसका मतलब वह निरा जानवर है ।

मणि—जो प्रेम करना नहीं जानता क्या वह जानवर होता है ?

प्रभास—तो और क्या ?

मणि—क्या आप जानते हैं प्रेम करना ?

प्रभास—तुम क्या समझती हो ?

मणि—मैं समझती हूँ, आप अटल प्रेमी हैं—

प्रभास—अटल शराबी की भाँति—

मणि—वह उदाहरण न दीजिए—

प्रभास—और प्रकाश ? उसे सिखाओ न एक बार प्रेम !

मणि—रहने भी दीजिए !

प्रभास—क्यों ? अपने राम को कोई आपत्ति नहीं । अपना प्रेम निर्मल होना चाहिए, फिर ईर्ष्या छू भी नहीं सकती ।

मणि—वह फिरोज़ की श्रेणी में आता है । कर्तव्य के सामने उसे प्रेम की कदर नहीं ।

प्रभास—दुत्कार दिया है शायद किसी ने उसे ?

मणि—मौका ही नहीं आया ऐसा ।

प्रभास—इसीलिए कह रहा हूँ, एक बार प्रयत्न करके देखो—

मणि—कह रही हूँ—ऐसी बातें करोगे तो मैं रुठ कर चली जाऊँगी ।

प्रभास—हैं—हैं—जरा धीरे से—वह देखो कोई देख रहा है हमारी ओर ।

मणि—अरे, सचमुच ! (वह फौरन उठ खड़ी होती है । वह हाथ पकड़ कर उसे बँठाता है)

प्रभास—हमें दुनिया की क्या परवाह ! किसी की चोरी है ? तुम राज़ी हो, मैं राज़ी हूँ, तुम्हारे पिताजी कुछ कहेंगे नहीं—मेरे पिताजी तैयार हैं; फिर किसी से क्यों डरें ? क्यों किसी से शर्माएँ ? देखेंगे ही तो ? देख लेने दो ! नाटक नहीं देखते ? पैसे खर्च करके जो बनावटी नाटक देखते हैं उसकी अपेक्षा

यह ज्वलंत सत्य देख लेने दो !

मणि—आपने तो सब मर्यादा ही छोड़ रखी है ।

प्रभास—हाँ, मैं एकदम बेताल हूँ—ताल की पर्वाह तुम्हें है—गाती हो न तुम ?—सचमुच, जिस प्रकार पिताजी को सुनाया 'करती हो वैसा ही गाओ न एक गाना । शराबबन्दी का नहीं, समझीं !—वह हुड़दंग मुझे पसन्द नहीं ! हाँ गाओ—(वह अनुरोध करता है—मणि धीरे-धीरे गाने लगती है । गाना समाप्त होते समय एक ओर से फिरोज़ आती है—उन्हें देखकर ठिठकती है । उन्हें तल्लीन देखकर जाने लगती है तभी परदा गिरता है)

दूसरा दृश्य

[तहखाने में का बॉर—रचना अधिकतर प्रथम अंक की दुकान की ही भाँति है। काउंटर नहीं है—सीटें चाय की दुकान भाँति—दरवाज़ा कहीं भी नहीं दिखाई पड़ता—जब दरवाज़ा खुलता है तो कल से—ऊपर से उतरने या चढ़ने के लिए एक कोने में छोटा-सा जीना है। पर वह कहाँ तक पहुँचा हुआ है यह नहीं दिखाई देता। आरम्भ में केवल दो तीन बेटर शीशे के बर्तन साफ करते हुए दिखाई देते हैं, सभी बेटर आता है।]

बेटर—वयों जी, कोई नहीं आया अभी तक ? अच्छी तरह होशियार रहना, समझे। आवाज़ न होने पाए किसी चीज़ की। नहीं तो गिलास बोतलें बजाते बैठोगे। हँ ! गिलास के ताल पर नाचने के दिन बीत गए !—मुँह छिपाए दिन व्यतीत करने पड़ते हैं अब। कब तक चलेगी यह आँख-मिचौनी ?—सुन लिया, खूब चौकन्ने रहना। बिना पास के कोई भी अन्दर न आने पाए। वैसे बाहर पहरेदार विश्वसनीय है ही। रोज़ का परवल बदल दिया गया है। आज का परवल मिल गया न ? ठीक। जाओ, अब अपना काम देखो। ठहरो—आज के भाव मालूम है न ? बढ़ा दिए हैं न ठीक से ?—लिखित—मुँह से न कहना। केवल कार्ड दिखाना। ऐं ? यह नया आदमी कौन आया है आज ?

दूसरा—मालिक ने भेजा है मुझे।

बेटर—कान में बताओ परवल ? (वह कान में बताता है) ठीक है। करो अपना काम। हूँ—डाक्टर साहब आए हैं ? अच्छा ? ठीक। और भीतरी कमरा ? ठीक तरह से नशा उतरे बिना किसी को न जाने देना यहाँ से ! पहले ज्यादा दो ही मत किसी को ? कोई और मांगने लगे तो साफ मना कर दो। उसका या अपना (जेब को हाथ लगा कर) कुछ भी लिहाज़ न करना। एक-दम कठोर बनने की ज़रूरत है। गर्दन पकड़ कर बाहर निकाल दो—समझे ? गर्दन पकड़ कर ! छोटा बड़ा—अमीर गरीब—कुछ न देखना। यहाँ सब बराबर

हैं। पैसे की लालच दिखाएँगे—लालच में न आ जाना। क्षणिक फायदे के लिए हमेशा के लिए रोटी खो बैठोगे ! अपनी—हमारी—सभी की। शैतान है वह—जरा भी तरस नहीं खायगा। पता है परसों उस होर्मसजी को क्या दण्ड दिया ? सात साल—सात साल, समझे ? खून के बराबर बन बैठा है यह गुनाह !—गर्दन पर छुरी चमचमा रही है ! जी चाहता है, छोड़ो इस भंभट को—(ऊपर से मालिक आता है—दूसरे बेटर दूर हट जाते हैं) आज तक तो सब ठीक है !

मालिक—रोज दिन गिनते रहो ! थक गए हैं प्राण ! लगता है, सब बन्द करके चुपचाप बैठ जाऊँ—

बेटर—पर अभिमान ?

मालिक—अभिमान !—कैसा अभिमान ? किस बात का ? काम धन्धे का ? संसार में क्या दूसरा काम धन्धा है ही नहीं ? नहीं भैया अभिमान के लिए कौन इतना मरता है ! बैक एकाउण्ट देखा अपना ?—और मेरा भी ?

बेटर—अपना एकाउण्ट मैं नहीं देखता, देख लूँ तो घर बैठने की नीयत होगी मेरी, केवल काम करता जा रहा हूँ—

मालिक—प्रकलमन्द हो ! मुझ जैसे लालची नहीं ! रोज आँकड़े देखता रहता हूँ मैं—रकम दुगनी होते ही चौगुनी होने की हवस पैदा होती है।—कब तक चलेगा यह सब ? रोज कलेजा मुँह में थामे रहना पड़ता है। उधर उस शैतान से पाला पड़ा है—हर एक शब्द सोच समझ कर बोलना पड़ता है। दोनों वाजू सम्भालते सम्भालते जान परेशान है !—और फिर वह एक नया टॉरभूत आया है। बड़ा डर लगता है उससे, कितने लोगों को जेल करवा दी उसने आज तक ! आज तक की बात ठीक थी। कौन कहाँ जायगा इस बात का, एक कार्यकर्ता के नाते, मुझे पता लगता रहता था—पर अब सभी अधिकार उसे दे दिए गए हैं, उसी का मुझे डर है।

बेटर—उसकी चिन्ता न कीजिए। मेरे आदमियों ने अच्छी तरह उस पर नज़र रक्खी है। परछाईं से उसके पीछे पीछे घूमते रहते हैं। आदमी भी ईमानदार हैं। उन्हें खिलाया भी है ढीले हाथों से वक्त बेवक्त जेल जाने के लिए भी

तैयार हूँ ।

मालिक—आज ऐसे ही आदमियों की आवश्यकता है हमें । जब तक जीना है तब तक बलि चढ़ाने के किए दूसरे आदमियों की आवश्यकता है । अभी स्वयं बलि चढ़ने का मौका नहीं । अभी कितने लोग बाकी हैं ? कम से कम उतनों को ही बनाए रखना चाहिए । मं जाता हूँ अब । उधर हाज़िर रहना है मुझे । यदि ज़रूरी हुआ तो फोन कर दूँगा तुम्हें—(जाने लगता है, लौट कर) ऊपर का इन्तज़ाम ठीक है ? गोदाम तो भरा हुआ है न ?

वेटर—कल ही आया है ताज़ा माल । लाखों की कमाई है ।

मालिक—लालच बुरी बला है ।

वेटर—मौका है तब तक कमा लेना चाहिए । किस समय हाथ से बाण छूट जायगा क्या कहा जा सकता है ? (भीतर से घण्टी बजाने की आवाज़ आती है) शायद हो गई शुरूआत ?

मालिक—तो अब मुझे जाना चाहिए । मन जैसे पीछे पीछे खिंच रहा है । जाऊँ ?

[जिस मार्ग से आया था, जाता है]

[वेटर दीवाल के पास जाता है, बटन दबाता है । दरवाज़ा खुलता है । एक सज्जन आते हैं । दरवाज़ा बन्द हो जाता है । सज्जन टेबुल के पास बैठ जाते हैं, दूसरा वेटर आकर कार्ड आगे बढ़ाता है । वह अँगुली के इशारे से बताता है । सर्विस शुरू हो जाती है । फिर से घण्टी बजती है, दरवाज़ा खोल कर वेटर एक ड्राइवर को अन्दर लेता है । ड्राइवर उन सज्जन के सामने आकर बैठ जाता है]

१ सज्जन—तुम ?

ड्राइवर—हाँ मैं ।

१ सज्जन—उधर बैठो—उस ओर ।

ड्राइवर—क्यों ?

१ सज्जन—क्यों ! मैं तुम्हारा मालिक जो हूँ ? तुम नौकर हो मेरे । यहाँ बैठने का तुम्हें अधिकार नहीं । (ड्राइवर हँसता है । वेटर उसके हाथ में

काई देता है । वह अँगुली से इशारा करके बताता है । वेटर जाता है) हंस क्या रहे हो ! उधर बैठो ।

डाइवर—यहाँ मालिक नौकर का भेदभाव नहीं सेठ साहब । सब एक लेवल में आ जाते हैं यहाँ आने के बाद । मालिक होने के कारण कोई यहाँ आपसे अधिक पैसे नहीं लेता—या नौकर होने के कारण मुझसे कम पैसे नहीं लेता ! मालिक होने के कारण आपको दो पेग ज्यादा नहीं मिलेंगे—या नौकर होने के नाते कोई मेरी खुराक कम नहीं करेगा । (वेटर गिलास लिए आता है । डाइवर पीने लगता है)

१ सज्जन—(वेटर जाते समय वेटर से) बॉय, एक और पेग ।

दू० वेटर—अब नहीं ।

१ सज्जन—(उसे इशारा करते हुए) लाओ भी ।

वेटर—(जो यह सब देख रहा होता है, आगे आकर) अब उठिए सेठ साहब, यहाँ रिश्वन-विश्वत नहीं चलेगी ।

१ सज्जन—ऐसी भी क्या बात है, एक ही—केवल एक !

वेटर—ऊँ-हूँ !—उठिए ।

१ सज्जन—क्या समझते हो मुझे ? पहचाना नहीं ?

वेटर—यहाँ आने वाले हरेक आदमी को मैं पहचानता हूँ । लखपति और भिखारी—हमारे लिए सभी एक है । आप होंगे मालिक किसी कारखाने के—पर आपकी तकदीर का मालिक मैं हूँ—उठिए, जाइए ।

१ सज्जन—और मैं शोर मचा दूँ तो ?

वेटर—(केवल हँसता है) बहुत हुआ ! जाइए अब ।

[डाइवर जोर से हँसता है]

१ सज्जन—मेरे डाइवर के सामने मेरा अपमान कर रहे हो ? यह तो बैठ ही गया है मेरी गोदी में और तुम बैठना चाहते हो मेरे सिर पर ? तुम समझते क्या हो ? बेशक मुझे और न मिले, पर इस की सूचना मैं सरकार को दूँगा । मटियामेट कर दूँगा इस दुकान को । (वेटर और डाइवर दोनों हँसते हैं) ऐसा क्या करते हो ? मैं पैरों पड़ता हूँ तुम्हारे । एक ही—केवल

एक ही—दुगना दूँगा । आंधे अपनी जेब में डालो । एक ही—महज एक ही ।

वेटर—(डाँटकर) चल उठ । जगह खाली कर । (उसे उठाकर दरवाजे के बाहर निकालता है ।)

[उक्त संवाद चलते समय घंटी बजाकर एक के बाद दूसरा व्यक्ति आता रहता है और वेटर शराब देते रहते हैं । एक तोंदिल लाला आकर धीरे-धीरे पीता रहता है ।]

डाइवर—बहुत अच्छा हुआ । अच्छा घमंड चूर हुआ वच्चा का । पग पग पर मूके ठुकराया करता है ! तुम्हारे पैरों पड़ा मेरे सामने । मैं तो समझता हूँ मेरे ही पैरों पड़ा । हम और तुम क्या दो हैं ? बड़ा मज्जा आया । अब देखो कैसे पैसा ऐंठता हूँ उससे । वचन खत्म होने जा रही थी । अब हाथ लगते ही खनाखन् ! हाथ लगाते ही खनाखन् ! अब नहीं होगा बन्द यहाँ का अभिप्रेत !

वेटर—खत्म नहीं हुआ अभी ?

डाइवर—मैं भुखड़ नहीं हूँ उस जैसा । एक एक चम्मच पी रहा हूँ । तलव भी तो मिटनी चाहिए । आप ज्यादा तो देने से रहे !

वेटर—चलो, जल्दी निबट लो । किसी का अँगुली उठाना ठीक नहीं ।

डाइवर—यही नहीं हो सकता । जल्दी करने के लिए न कहो भाई । एक ही प्याले से तो तसल्ली कर लेनी है ? बीत गए वे दिन ! पूरी बोतल खत्म कर देता था एक बैठक में । अच्छा हुआ जो ठर्रा छोड़कर यह पीने लगा—नहीं तो मरने पर नौबत आ जाती । बड़े लोगों की सोहबत का प्रताप है—वर्ना ताड़ी में सड़ता रहता और आज प्यासा मर जाता । देखो तुम्हारे पैरों, पड़ता हूँ, ज़रा धीरे धीरे पी लेने दो ।

भाटिया—ए ! शुः ! ज़रा इधर तो आओ । (वेटर उसके पास आता है) और नहीं है कोई दूसरी ?

वेटर—कैसी दूसरी ?

भाटिया—ज़रा हल्की ।

‘ वेटर—हल्की यानी कीमती, क्यों ? शॉम्पेन ? है । (वेटर कार्ड दिखाता है) मंजूर है ?

भाटिया—हूँ ! लाओ—ज़रा-सा सोडा डाल दो ।

वेटर—क्यों ?

भाटिया—तबीयत ठीक नहीं है आज । ये ले जाओ ।

डाइवर—(भाटिया के पास जाकर) मुझे दे दीजिए न—बेकार जाएगी—

वेटर—भटपट खत्म करके चले तो जाओ । (भाटिया के सामने के गिलास उठाकर ले जाता है । डाइवर अपनी जगह जाकर बैठ जाता है)

वेटर—(गिलास लाकर भाटिया के सामने रखते हुए) कीमत में तेज़ है पर पीने में एकदम हल्की है ।

डाइवर—न खुद खाओगे और न किसी को खाने दोगे । तुमने भी पी ! नहीं न ? फेंक दी होगी । इससे तो मैं ही पी लेता ! भिखमंगे कहीं के ।

वेटर—(हर व्यक्ति के पास जाकर) हूँ ! आस्ते, आस्ते, गिलास न बजाइए ।

भाटिया—ऐसी वयों लग रही है ? कुछ भी मज़ा नहीं आ रहा है । और कोई ले आओ ।

डाइवर—अब तो दे दीजिए मुझे ।

[वेटर उसके सामने से गिलास उठाकर ले जाता है और वापस आता है ।]

वेटर—तबीयत ठीक न हो तो घर जाइए ।

भाटिया—कैसे जाऊँ ! जी जो जल रहा है अन्दर से—धधक रहा बराबर । पीना चाहता हूँ पर पी नहीं पाता और नहीं पीता तो जान छटपटाती है ।

वेटर—क्या लाऊँ ?

भाटिया—ज़रा-सी—कोई माइल्ड—एक चम्मच—और ज़रा-सा सोडा—समझे ? बिल जितना मर्ज़ी लो । उसमें कोई रूकावट नहीं ।

[एक मजदूर आता है]

मजदूर—अरे कौन हे यहाँ का मालिक ?

[बैठे हुए सभी लोग उससे धीरे से बोलने के लिए कहते हैं]

मजदूर—क्यों धीरे बोलूँ ! चोरी है किसी की ?

बेटर—हाँ—सरकार की ।

मजदूर—जमीन में इतना बड़ा तहखाना खोद डाला और फिर भी आवाज सुनाई ही देगी ?

बेटर—यहाँ का कायदा है । जहाँ तक बन पड़े बोलना नहीं । कोई बोले भी तो धीरे बोले—कानाफूसी करे ।

मजदूर—फिर पीए ही क्यों ?

बेटर—महज तलब मिटाने के लिए !—चिल्लाने के लिए नहीं—गाली गलोच करने के लिए नहीं—मारपीट करने के लिए नहीं—

मजदूर—तो फिर पीए ही क्यों ?

बेटर—महज तलब मिटाने के लिए ।

मजदूर—भूमे बिना भी क्या तलब मिटा करती है । भूमना जरूरी है—लड़खड़ाना जरूरी है—लुढ़कना जरूरी है—गिरना जरूरी है—तब कहीं तलब मिटा करती है । चुपचाप पीकर बिस्तर में सो रहने के लिए क्या मैं कोई सफेदपोश हूँ ? आसमान का परिंदा हूँ मैं ! तैरता हुआ जाऊँगा, पंख हिलाता ! लाओ ताड़ी—पहले माहुआ ले आओ । नमकीन चनों का डिब्बा कहाँ है ?

बेटर—ताड़ी नहीं मिलती यहाँ ।

मजदूर—तो क्या मिलता है यहाँ ? शरबत ? बरफ़ का पानी ?

बेटर—(कांड दिखाकर) ये देखो ।

मजदूर—मैं अंग्रेजी नहीं जानता ।

बेटर—(कांड उलट कर दिखाता है) यह देखो, क्या चाहिए इसमें से ?

मजदूर—तुम क्या समझते हो जी, मैं सफेदपोश हूँ ? साहब हूँ ? यह झुत्की और बरानडी मेरे मुँह पर मार रहे हो ? ताड़ी चाहिए है मुझे, ठर्राँ

वर्ग, कुछ भी लाओ पर देसी लाओ ।

बेटर—ताड़ी खतम हो गई ।

मजदूर—कब से ?

बेटर—जब से शराबबन्दी हुई है ।

मजदूर—और यह क्या हो रहा है ?

बेटर—(कार्ड दिखाकर) यह है हुस्की बरानडी ! भाव देख लिया ?

मजदूर—दाम उतना ही दूँगा—पर ठर्रा दो । बीड़ी पीने वाले को सिगरेट दे रहा है कमबख्त । चम्मच भर बाराब और बोतल भर सोडा—पीएँ सफेदपोश—गोरे अनाड़ी साहब लोग ! चुटकी भर तम्बाखू और मुट्ठी भर गोभी के पत्ते—ऐसी सिगरेट मुझे नहीं चाहिए । मुझे बीड़ी चाहिए—एकदम खालिस । ठर्रा, पौवा, बोतल, बोतल न हो तो अद्धा ही सही—पर देसी चाहिए । (सब लोग हँसते हैं) हँसते क्या हो जी, क्या मैं तुम जैसा सफेदपोश हूँ ? कुर्सी से सोफे पर और सोफे से कुर्सी पर ! दस घण्टे मिल में खपना पड़ता है । भरारं भरारं घरघरं होती रहती है । नाक मुँह में कपास की धूल जाती रहती है, और मुझसे कहता है हुस्की पी । हुस्की, बरांडी पीने के लिए मैं कोई नामर्द हूँ ? ठर्रा लाओ—अभी के अभी—ठर्रा ।

डाइवर—धक्का मार कर निकाल दो बाहर, ठर्रा माँगता है कमबख्त !

मजदूर—कौन ? तुम ? अरे तुम कब से सफेदपोश बन गए ? ठर्रा पीया करते थे या नहीं हमारे साथ ? अब अमीरों के डाइवर बन गए, सेठ लोगों के साथ सरकार बैठने लगे, तो क्या ठर्रे को भूल बैठे ? असलियत नहीं भूलना चाहिए भाई—असलियत नहीं भूलना चाहिए । याद रखो, सेठ लोगों के साथ बैठने पर भी तुम कुनवी के कुनवी ही रहोगे ।

भाटिया—ठीक है । गाड़ी में भी बैठते हैं लोग एक दूसरे से सटकर पर उससे अमीर गरीब नहीं होता और न गरीब अमीर बनता है ।

डाइवर—पर आप अमीरों की अमीर जान हमारे ही हाथ में होती है ! एक टक्कर देते ही स्वर्ग दिखाई देता है ।

मजदूर—हाँ, दोनों को । मौत के लिए न कोई अमीर है और न गरीब ।

मैं समझता था वही बात यहाँ भी है। पर यहाँ हुस्की है—ठर्रा नहीं है न ? (वेटर नकारात्मक सिर हिलाता है) अमीरों का इन्तजाम करते हैं सब। यह सब कानून बनाया, शराब बन्द की, पर जिसकी जेब गरम है वह पी ही रहा है ! रुपये की जगह पच्चीस भी देने पड़ें तो किसे परवाह है उसकी ! किसके बाप का पैसा ! खून सूख रहा है हमारा और मुटिया रहे हैं ये लोग। जैसे हम लोगों को यह दो पैरो वाली जोंक चिपक गई हों। पेट भरे बिना नहीं छूटतीं। और ये चोर ?

वेटर—कौन, हम ? हम चोर हैं ?

मजदूर—खाली चोर ही नहीं, डाक ! ज़मीन में सुरंग खोद कर हुस्की की बूँद बूँद से रुपये की खान जो खोद रहे हो ! हंसते हो ? जेल जाने पर नहीं हँसोगे।

भाटिया—बकवास बन्द करो। न पीना हो तो चले जाओ यहाँ से।

मजदूर—शायद तुम मालिक हो यहाँ के ?

भाटिया—मैं कोई भी हूँ, तुम्हें उससे मतलब ?

वेटर—चुप रहो दोनों।

मजदूर—तुम दोगे या नहीं मुझे ठर्रा ?

वेटर—यहाँ ठर्रा नहीं। यहाँ ठर्रा बन्द हो गया है। इतनी सी बात नहीं जानते बेबकूफ, ठर्रा यहाँ बनता है—यह विलायत से आती है। ये विलायती काम हो रहा है यहाँ—देसी को यहाँ जगह नहीं।

झाड़वर—सुन लिया बेटा, यहाँ देसी के लिए जगह नहीं।

भाटिया—धक्का देकर निकालो तो बाहर इन दोनों को। आराम से पीने भी नहीं देते—

मजदूर—पर आप भी कहाँ हमें आराम से रोटी खाने देते हैं ?

भाटिया—चुप रहो।

मजदूर—(आस्तीन चढ़ाकर) तुम कौन होते हो जी मुझे डाँटने वाले ?

वेटर—हैं, हैं !—अपना रास्ता तो नापो ज़रा। किसने भेजा तुम्हें यहाँ ?

मजदूर—उस हेड मिस्त्री ने मुझे धोखा दिया। वह पीता है हुस्की। बड़े

सेठ का चहेता है न वह ? अपने सा ही मुझे समझता है—जान चली जाय पर हुस्की नहीं पीऊँगा । ठर्रा न मिला तो तड़पता रहूँगा—लाओ ठर्रा, लाओ ।

[वेटर उसे पकड़कर दरवाजे की ओर ले जाता है । वह हाथापाई करने लगता है । भाटिया आगे बढ़ता है । मजदूर उसे घूँसा मारता है, भाटिया लड़खड़ाकर गिर पड़ता है । सब लोग जोर से हँसते हैं । भाटिया आस्तीनों चढ़ाकर मजदूर पर आक्रमण करने ही वाला है तभी वेटर बीच में आता है । ड्राइवर वेटर को पीछे खींचता है । भाटिया का घूँसा ड्राइवर को लगता है, ड्राइवर चिढ़कर उस पर आक्रमण करता है । भाटिया भागने लगता है तभी मजदूर सीटी बजाता है । बाहर से एकदम सीटियों पर सीटियाँ सुनाई पड़ने लगती हैं । जोर जोर से घण्टा बजने लगता है । सब लोग घबरा जाते हैं । उस गड़बड़ी में वेटर गायब हो जाता है । दरवाजा खटखटाने की आवाज आती है । मजदूर दरवाजा खोलता है और पुलिस जल्दी जल्दी अन्दर आती है । घबराए हुए अन्य वेटरों को पुलिस पकड़ लेती है । कोने के एक दरवाजे से पिस्तौल ताने कुछ मवाली बाहर आते हैं । फॉयर होने लगते हैं । भाटिया घबराकर इधर उधर भागने लगता है । पुलिस मवालियों को पकड़ लेती है । भाटिया घबराकर मवालियों से लिपट जाता है इसीलिए न पकड़े जाते हैं । बाहर फिर से सीटियाँ बजने लगती हैं । मजदूर दरवाजा खोलता है तथा फिरोज और मणि स्वयंसेविकाओं सहित प्रवेश करती हैं ।]

फिरोज—ले जाओ सबको पकड़कर—देने वाले, पीने वाले और मारपीट करने वाले—सभी को थाने ले चलो ।

भाटिया—अरे देवी जी, मुझे क्यों नाहक ? मैंने तो पी भी नहीं है ।

फिरोज—पर आए थे न यहाँ ?

भाटिया—यह ठीक है—पर घर पर बीबी बच्चे इन्तज़ार कर रहे होंगे मेरा ।

फिरोज—ले जाओ इसे । (लिफाही उसे पकड़ कर ले जाते हैं । वेटरों को भी ले जाने लगते हैं)

मजदूर—ठहरो । उस वेटर को न ले जाओ ।

फिरोज—क्यों ?

मजदूर—वह मेरा आदमी है । (दूसरे वेटर को छुड़ा लेता है । बाकी जाते हैं) इसका उपयोग है कैप्टन । इसे सब पता है यहाँ का ।

फिरोज—अच्छा ? तो ठीक है । आज आपने बहुत बड़ा काम किया है । सचमुच आपने मिल मजदूर का नाम रख लिया । अब तलाशी लीजिए सारी । यह वेटर स्थान दिखाएगा—ये भी—(मजदूर की ओर संकेत करके) आएँगे तुम्हारे साथ । आँखें खोलकर सावधान रहो । कब और कैसा आक्रमण हो, कुछ भी नहीं कहा जा सकता ।

[मरिण के अतिरिक्त सब अलग अलग दरवाजे खोलकर जाते हैं । निम्न-लिखित संवाद होते समय, पेटियाँ, बक्से इकट्ठा करके बाहर ले जाए जा रहे हैं ।]

फिरोज—सबसे बड़ा गोशम आज हाथ लगा । कितने दिनों से ताक में थे पर ठीक ठीक पता नहीं लग रहा था । आज इस मजदूर ने मिफत कर दिखाई । कब तक यों ही चलता रहेगा ?

मरिण—कौन कह सकता है ? अमरीका का उदाहरण है न आँखों के सामने ?—

फिरोज—उसी का डर है । क्या उपाय किया जाय इसके लिए ? कोई खास उपाय किए बिना सारे कानून व्यर्थ हो जाएँगे । क्या मरते दम तक यों ही ताक लगाए बैठे रहें ?

मरिण—जब तक अमीरी है तब तक शराबबाज़ी ऐसी ही रहेगी । ज़मीन में मुँह छिपाए ही क्यों न रहे—पर रहेगी अवश्य । उनके पास रुपया है—विलायत वालों का आधार है । उनका मुख्य व्यापार है न यह ? अमरीका पर कुठाराघात करने वाले भी तो वे ही हैं ?—वे चुपचाप बैठेंगे नहीं और हमारे शराबी भी उनमें शामिल हुए बिना नहीं रहेंगे ।

फिरोज—सर्वनाश किसका किया जाय ? शराबियों का या पैसै वालों का ? किसे सम्भाला जाय ?—पिताजी का क्या होगा ?—कैसे पागल से हो रहे हैं पिताजी । रोज़ नये नये पड़्यन्त्रकारी मिलते हैं, रोज़ उन्हें जेल भिजवाते हैं और रोज़ फिर से नये—या कौन जाने पुराने ही हों !—रोज़ पकड़े जाते

? क्या होगा ? आगे क्या होने वाला है ?

मणि—उसकी चिन्ता हम क्यों करें ? हम लोगों को अपना काम करना चाहिए ।

फिरोज़—उसकी चिन्ता मैं नहीं करती मणि, मुझे पिताजी की चिन्ता है । पिताजी क्या करेंगे इसका विचार कर रही हूँ । अपनी ड्यूटी हम कर रहे हैं स्वयंसेविकाओं के नाते । मुझे किसी भी बात की फिकर नहीं—मैं तड़प रही हूँ दीवान जी की बेटी होने के नाते—उनकी रक्षक होने के कारण ! यह सब कैसे निपटेगा ? कौन इसका सर्वनाश करेगा ?

मजदूर—(आकर) सारा माल बटोर कर थाने भेज दिया है । कोना-कोना ढूँढ कर माल निकाला है । खूब इकट्ठा कर रखी थी पट्टों ने—लाखों रुपये की कमाई डूब गई उनकी ।

मणि—पर परिवार कितने सुखी होंगे ?

फिरोज़—बुरा इतना ही लगता है कि इतने रुपये पर पानी फिर जायगा । अमीरों की जेब से निकला हुआ रुपया ही क्यों न हो पर था इस गरीब हिन्दुस्तान का—पहले ही विलायत पहुँच गया था । यहाँ वह किसी के भी काम नहीं आया इसी बात का मुझे दुख है । जाने दो, अब कोई अन्दर तो नहीं है ? नहीं तो कोई लुका-छिपा बैठा होगा ।

मजदूर—उम वेटर ने सारे स्थान दिखा दिए हैं हमें । वहाँ तो कोई न था ।

फिरोज़—अब सारी स्वयंसेविकाओं को ले जाओ । दीवान साहब के आने तक मुझे यहाँ पहरा देना जरूरी है ।

मजदूर—आप अकेली रहेंगी यहाँ ?

फिरोज़—यह जो है ?

मजदूर—पर आप दोनों ही—(सकता है)

फिरोज़—औरतें हैं ! यही न कहना है आपको ? जाइए अब । दीवान साहब को फोन पर खबर दीजिए । इंस्पेक्टर साहब को भी सूचित कीजिए । जाइए । (मजदूर सलाम करके जाता है) इन्हें कहते हैं ईमानदार लोग ! नौकर नहीं, ताबेदार नहीं—हुकुम के पाबन्द—गुलाम नहीं—फिर भी ईमानदारी से

काम कर रहे हैं—किस लिए ?—वे जानते हैं कि शराबबन्दी से उनका भला हुआ है—उनके घरों में सुख शान्ति रहने लगी है—बाल बच्चों के चेहरों पर रौनक आ गई है—मुट्ठी भर अनाज घरों में बचने लगा है । और इन्हीं को हम छोटा कहते हैं ! तो बड़े कौन हैं ? तहखानों में जो बोर खोले बैठे हैं वे ! ये अन्याय पहले दूर होना चाहिए ।

मरिण—कौन दूर करेगा ?

फिरोज—जो इस बात को मानते हैं । शराबबन्दी को अच्छा समझते हैं इसीलिए तो ये मजदूर सरकार की मदद कर रहे हैं ?—अब हमें यह जान लेना चाहिए ? हमें इस अन्याय को मिटा देना चाहिए । (घंटी बजती है । दरवाजा खोल कर दीवान, प्रकाश और सिपाही आते हैं ।)

दीवान—शाबास !

फिरोज—शाबास उस मजदूर की है । हमने तो खाली सिपाहियों का काम किया है ।

दीवान—मैं समझता हूँ यह स्थान आखिरी है ।

फिरोज—क्या पता ?

दीवान—कितनी सशयी हो तुम !

फिरोज—जिम्मेदारी जो है मुझपर ।

दीवान—मुझे कुछ भी फिकर नहीं है ?

फिरोज—मैंने यह कब कहा ?

दीवान—अच्छा, प्रकाश, क्या रिपोर्ट दी है उसने ?

प्रकाश—मेरा समाधान नहीं हुआ, जो मिलना चाहिए था वही नहीं मिला, नौकर चाकर पकड़ लिए, माल जप्त कर लिया, पीने वालों को पकड़ लिया पर जब तक पिलाने वाला फरार है तब तक मुझे सन्तोष नहीं होगा । (सिपाहियों से) अपना काम करो ।

फिरोज—वह सब कुछ हो चुका है । कुछ भी अब शेष नहीं यहाँ ।

दीवान—सुरग तैयार है ?—तलाशी बन्द करो । अब बाहर चलो और उड़ा दो इस तहखाने को एकदम ! नाम निशान भी न रहने पाए

इस जगह का ! यदि कोई छुपा बैठा होगा तो उड़ जाएगा इस सुरंग के साथ !

मणि—हाय राम !

फिरोज—मन को कठोर बनाना चाहिए मणि । ये लड़ाई है । लाखों की भलाई के लिए दो बार मर मिटें तो उगका दुख क्यों माना जाय ?

प्रकाश—(चोंक कर) काहे की आवाज हुई ?—नहीं सुनी किसी ने ?—देखो जी देखो ठीक से ? (तिपाही देखने लगते हैं ।)

दीवान—केवल संदेह ! कितना घबरा जाते हो तुम प्रकाश ?

फिरोज—दया करना है यहाँ रह कर ?

दीवान—शपथें मन की तसल्ली कर लेनी हैं मुझे ।

फिरोज—यानी, आपको भी संदेह है ?

दीवान—संदेह नहीं—मुझे विश्वास है । मुझे विश्वास है कि बिप का बीज अभी जमा हुआ है । नष्ट हो जाना चाहिए वह बीज । ज़रा-सा—ज़रा-सा बीज भी बच जाय तो उगमे से बड़ा भारी पेड़ फूट निकलेगा । नहीं—मेरी तसल्ली नहीं होगी । सुरंग लगाने में सब मर जायेंगे—जीवित पकड़े जाने चाहिए जो भी हो !—मि० प्रकाश, तलाशी लीजिए—

प्रकाश—यहाँ है क्या ?

फिरोज—सब कुछ शान्त है यहाँ !

दीवान—नहीं—तलाशी लीजिए—कह जो रहा हूँ तलाशी लीजिए ! (स्वयं दीवालें ठोंककर देखने लगता है) मजदूर कहाँ है वह ? अब ले आओ उसे यहाँ—और उम बेटर को भी ! सबकी तलाशी लूँगा मैं ! (सभी ठोंक-ठोंक कर देखने लगते हैं । फिरोज और मणि देखती रहती हैं)

मणि—बड़े वोखला गए हैं दीवान साहब ! क्यों ?

फिरोज—आवाज आई ज़रूर है किसी चीज़ की !

[तलाशी लेते समय उनकी पीठ होते ही फौरन एक चोर-बरदाज़ा खोल कर एक मवाली पिस्तौल ताने आता है—फिरोज और मणि भागती हैं । फिरोज 'पिताजी' कहकर चीख पड़ती है और, उस मवाली की ओर दौड़ती

हुई जाकर उसे धक्का दे ही रही है तभी वह फायर करता है, दीवान मुड़ कर देखता है । सिपाही उसे पकड़ लेते हैं—एक सिपाही गोली लगने से गिर पड़ता है—दीवान तथा प्रकाश सामने आते हैं)

दीवान—पैसे के लिए स्वीकार कर लिया यह काम ?

मवाली—नहीं ।

दीवान—तो फिर ?

मवाली—शराब के लिए ।

दीवान—अच्छा ? तुम समझते क्या हो ? मुझे मारने से, शराब चालू हो जायगी ? (सिपाहियों से) छोड़ दो जी उसे । अकेले ही हो ?—बोलो—या और कोई साथी है ? नहीं है ?—किसने दी शराब तुम्हें ? किसने तुम्हें यह काम सौंपा ?

मवाली—शराब ने ।

दीवान—ठीक ठीक बताओ ।

मवाली—शराब देने वाले ने ।

दीवान—कौन है वह ?

मवाली—जो शराब देता है ।

दीवान—वह कौन है ? क्या नाम है उसका ?

मवाली—मैं नहीं जानता ।

दीवान—तुम दोनों की मुलाकात कैसे हुई ?

मवाली—औरों की ही भान्ति—औरों के साथ—

दीवान—रोज आते हो यहाँ ?

मवाली—हाँ ।

दीवान—पिस्तौल लिए ? नहीं ? फिर आज ही यह क्यों लाए ?

मवाली—आज ही दिया उसने । उसे पता लगा—पहले मेरा काम ही यह था !

दीवान—और कौन-कौन है ?

मवाली—सब पकड़े गए—मैं बच निकला था ।

दीवान—छोड़ दो जी उसे ।

प्रकाश—यह क्या दीवान साहब ?

दीवान—आप हैं न यहाँ ? धीरे रखिए—भागने न दीजिए । हाँ छोड़ दो अब ।

फिरोज—पिताजी !—

दीवान—चुप रहो !—छोड़ दो उसे—(सिपाही उसे छोड़ते हैं) कहाँ है वह पिस्तौल ? अच्छा ! इधर दो—इधर दो—(मवाली से) यह लो—पकड़ो ! देखते क्या हो ? लो यह पिस्तौल । यों सामने आओ—हाथ काँप रहा है तुम्हारा ? उस समय तो नहीं काँपा था ?—लो निशाना !—

मवाली—कहाँ ?

दीवान—(अपने सीने को हाथ लगाकर) यहाँ ।

फिरोज—पिताजी !

दीवान—चुप रहो ! (मवाली से) लगाओ निशाना ।

फिरोज—मि० प्रकाश, पकड़िए उसे । पीछे खींचिए ।

दीवान—मि० प्रकाश, पकड़िए इसे—पीछे खींचिए । यहाँ मैं दीवान हूँ—मेरे रहते हुए किसी भी दूसरे को हुक्म देने का अधिकार नहीं । (मवाली से) चलो आओ सामने—निशाना साधो और चलाओ पिस्तौल । बेवकूफ ! डरते हो ? तुम मारना चाहते हो न मुझे ? मैं खड़ा हूँ यहाँ—तुम्हें हुक्म दे रहा हूँ—गोली चलाओ ! गरीबों को क्यों मारते हो ? तुम लोगों का गिला तो मुझमें है ?—तो मैं खड़ा जो हूँ यहाँ—सामने गोली नहीं चलाई जाती ?—छिपकर चलाना चाहते हो ?—तो लो मैं पीठ करता हूँ—चलाओ अब गोली !—मेरे गिर पड़ने तक—मरते दम तक गोलियाँ चलाओ । कोई भी तुम्हें न रोकेगा । हट जाओ जी दूर—दूर—दूर—गोली खाकर मेरे मर जाने तक कोई भी सामने न आए—(रुककर फिर से मुड़कर देखता है) अभी भी हाथ काँप रहा है तुम्हारा ?—चलो, हाथ उठाओ—उठाओ—निशाना लो—तुम समझते हो न कि मेरे मर जाने से शराबबन्दी न रहेगी ?

—तो चलाओ गोली ! ओ बेवकूफ, किसने तुमसे यह कहा ? शराबबन्दी किसने की ? मैंने ?—जिस तरह तुम शराब वाले के गुलाम हो उसी तरह मैं हूँ !—हुकुम का ताबेदार ! सारे हिन्दुस्तान ने मुझे हुकम दिया—उसी हिन्दुस्तान के हुकुम का मैं पालन कर रहा हूँ । मेरे मर जाने में हिन्दुस्तान नहीं मरेगा । मैं मर जाऊँगा तो दूसरा कोई आएगा—तोपखाने का सिपाही मरते ही पिछला सिपाही आगे बढ़ता है—उसी तरह और कोई आ जाएगा । मेरी ज़िन्दगी में जो काम पूरा नहीं हो रहा है वह मेरे मरने से आसान हो जाएगा । विरोध करने वाले भी जाग जाएँगे । मेरे ब्रिखरे हुए खून से उनकी आँखों का पर्दा हट जाएगा । देख क्या रहे हो ? चलाओ गोली !—मेरे खून का छिड़काव इस तहखाने में होने से यहाँ के ईंट पत्थर भी हड़बड़ा कर जाग उठेंगे । (उसके हाथ से पिस्तौल गिर पड़ता है) तुम्हारा यही पेशा है न ? फिर भी इतना घबरा रहे हो ? उठाओ वह पिस्तौल ! समझते क्या हो ? समझते हो कि मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा हूँ ? नहीं—मैं मरना चाहता हूँ—इसी काम के लिए दुश्मन के हाथों मरना चाहता हूँ । मेरी ऐसी मौत से ही यह काम पूरा होगा—मेरी ऐसी मौत से ही विरोध का बीज नष्ट होगा—मेरी इस मौत से ही शराबबन्दी की राह के काँटे दूर होंगे । मेरे जीते जी जिन्हें मेरी बातें नहीं जँची वे मेरे मरने के बाद मेरी ही भाषा में बोलने लगेंगे । मुझे विश्वास है—मुझे आत्मविश्वास है—यह धाक नहीं—नाटकीय दिखावा नहीं—तुम्हारे मन पर प्रभाव डालने के लिए—तुम्हें शान्त करने के लिए यह कोई चाल नहीं—दोस्त, सचमुच मैं मरना चाहता हूँ—शराबबन्दी के लिए मरना चाहता हूँ, यह देखो, मैं तैयार हूँ—उठाओ—उठाओ वह पिस्तौल—निशाना साधो—हाँ—काँपो नहीं !—हाँ, रक्खो घोड़े पर अँगुली ! हाँ ! देख लो, मैंने आँखें भी बन्द नहीं की । खुली आँखों मरना चाहता हूँ मैं । मेरे मर जाने के बाद दुनिया क्या करती है, देखना चाहता हूँ । चलाओ गोली—(मवाली स्वयं अपने पर गोली चला लेता है और गिर पड़ता है) दगाबाज़ !—मूर्ख, तूने अपने को धोखा दिया और मुझे भी धोखा दिया !—

[दीवान बँठ जाता है । सिपाही और प्रकाश मवाली की ओर जाते हैं ।

फिरोज जाकर दीवान से लिपट जाती है । मणि भी निकट जाती है ।]

दीवान—देख लिया बेटियो, शराबबन्दी का विरोध अभी समाप्त नहीं हुआ है । अब भी मेरा संदेशा संसार तक नहीं पहुँच पाता ।

[धीरे धीरे परदा गिरता है]

चौथा अंक

[तीन—दूसरे अंक की ही भाँति । परदा उठते समय एक ओर से बेटर और दूसरी ओर से मालिक प्रवेश करता है ।]

मालिक—तब से तुम्हें नहीं मिल सका । कोई है तो नहीं घर में ? अच्छा हुआ जो वह प्रसंग टल गया नहीं तो वह छोकरी तुम्हें देख लेती—और देख लेती तो—

बेटर—आ ही गई थी शामत ! मैं जो सोच रहा हूँ वह यही कि इस बात का पता किसे चला ?—कौन था वह मजदूर ?—कभी भी नहीं देखा था—उसका क्या सम्बन्ध था ? यहाँ कभी भी नहीं आया था—फिर उसकी और उस लड़की की भेंट कैसे हुई ?—और असल बात तो यह है, कि अब वह है कहाँ ?—

मालिक—क्या करना है पता करके । ये लोग अब जगह जान गए हैं—जगह हाथ से जाती रही—

बेटर—सुरंग लगाकर उड़ाएँगे कहते ही मैं भाग खड़ा हुआ—ऐसी जान सूखी जा रही थी मेरी ! सोचा, किसी ने दरवाजा डूँढ लिया तो ! पर बच गया—और सुरंग भी नहीं लगाई किसी ने । रास्ते चुन दिए हैं शायद !

मालिक—अब न उधर जाओ और न देखो । अब कोई दूसरी जगह तैयार करो । यहाँ का माल अभी काफी है । तीन महीने का इन्तजाम है । और माल आने ही वाला है—

बेटर—मेरे विचार में अब तक जो हुआ सो बहुत हुआ ।

मालिक—थक गए इतने में ? अजी, अभी कितने साल काटने हैं ? कितने आँकड़े बढ़ाने हैं ? तुम्हीं थक जाओ तो मैं अकेला क्या करूँगा ?—हम दोनों के अतिरिक्त कोई तीसरा न आने पाए इस काम में । नौकर तुम्हारे भरोसे के होते हैं—फिर क्योंकर पीछे हटा जाय ?

वेटर—मुझे डर लग रहा है उस लड़की का । कौन था वह मजदूर ?—कुछ दिमाग काम नहीं करता मेरा ।

मालिक—डरने से कैसे काम चलेगा । वह डरती है ?—फिर हम ही क्यों डरें ? जिसकी अपने ध्येय पर दृष्टि है वह किसी के बाप से भी नहीं डरता । हमें अपना ध्येय सामने रखना चाहिए—उस ध्येय के लिए संघर्ष करना चाहिए ।

वेटर—आगे क्या हुआ कुछ भी पता नहीं चलता । यहाँ भी कोई कुछ नहीं करता । खामोशी छाई है उस दिन से । वह प्रभास ज़रूर वडबड़ाता रहता है—पर वह कुछ भी नहीं जानता । शायद उसे भी मणि ने कुछ नहीं बताया है ।

मालिक—उसे खुश रखो । उसकी खुशी पर हमारा जीवन निर्भर है । एक के स्वार्थ पर हज़ारों का चरितार्थ चलेगा । यह घर चला जाय तो माल रखने के लिए दूसरा मुरझित स्थान नहीं मिल सकेगा ! (चौककर) कौन आया ? वह टॉरभन तो नहीं—यह काँटा निकाल फेंकना होगा ।

वेटर—मैं उससे नहीं डरता । यह छोकरी ही अधिक खतरनाक है—वह शैतान मन्ज़ूर है—पर यह छोकरी—कौन आया ?—(देखने लगता है) कोई आया है अवश्य !—

मालिक—तो मैं जाता हूँ—(अन्दर जाता है)

[वेटर चारों ओर देखता है—जीने पर भाँक कर देख आता है—दरवाजे में से अन्दर देखता है । कुर्सी के पास क्षणभर रुकता है—और एकदम जिस दरवाजे से आया था, उसी से अन्दर चला जाता है । प्रकाश आता है—दरवाजे की ओर देखता रहता है ।]

प्रकाश—(बाहर दरवाजे की ओर देखते हुए) आ जाओ । कोई नहीं है यहाँ ।

मणि—(प्रवेश करके) यहाँ किसी की चोरी थोड़ी ही है । बाँय़ कहाँ गया वह ?

प्रकाश—उधर भी गए हैं साहब । मेरे ख्याल में फ़िरोज़ भी वहीं गई है ।

शायद प्रभास ऊपर है ? (वेटर आता है) प्रभास बाबू कहाँ हैं ?

वेटर—कोई भी नहीं है घर में ।

मणि—फिरोज़ कब बाहर गई है ?

वेटर—मुझे मालूम नहीं ।

मणि—दीवान साहब कब आए थे ?

वेटर—यह बात न बताने का मुझे हुकुम मिला है ।

प्रकाश—और सेक्रेटरी ?

वेटर—जी सेक्रेटरी ?—(रुकता है)

प्रकाश—हाँ—हाँ—सेक्रेटरी ! उन्होंने भी शायद दीवान साहब की भाँति हुकुम दिया है ?

वेटर—आपने ठीक पहचाना !

प्रकाश—अच्छी नकल कर रहा है साहब की ।

वेटर—जी हाँ ।

प्रकाश—और तुम किसकी नकल कर रहे हो ?

वेटर—वैसा कोई नमूना नहीं मेरे सामने ।

प्रकाश—मेरी नकल किया करो । हँस क्या रहे हो ?

वेटर—मुश्किल होगा मेरे लिए । सेक्रेटरी की क्षमता मुझ में नहीं है ।

मणि—बैठो न । इन्तज़ार तो करना ही होगा किसी के आने तक—

वेटर—चाय लाऊँ ? या कॉफी ?

प्रकाश—संत्रे का रस क्यों नहीं ले आते ?

वेटर—बहुत अच्छा । (जाता है) ।

मणि—फिरोज़ जो कहा करती थी वह मैं अब समझ रही हूँ । सारा वातावरण जैसे बोझिल-सा हो गया है । चारों ओर संदेह ही संदेह दिखाई पड़ रहा है । दिल से उद्गार उठते हैं पर मुँह से निकालते हुए डर लगता है । उस दिन वह प्रसंग देखा और तभी से—

प्रकाश—हूँ—बस करो—उसकी चर्चा न करो ।

मणि—यह कैसी ज़र्बदस्ती है ? चर्चा तक न करें उसकी ?—

प्रकाश—नहीं ।

मणि—क्यों ?

प्रकाश—जीवान साहब के लिए ! किसी को विश्वास न होगा ! नाहक गलतफैमी अवश्य फैलेगी । यह समय बड़ा खतरनाक है । किसी को ज़रा-सी भी गलतफैमी होना ठीक नहीं !

मणि—तो अब क्या बात करूँ ?

प्रकाश—कुछ भी न करो । बिना बोले चुपचाप बैठना सीखना चाहिए । यह भी एक साधना है—बड़ी कठिन साधना है । जब ऐसे अद्वितीय प्रसंग आते हैं तभी ज़वान काबू में रखनी पड़ती है—

मणि—फिरोज़ क्यों नहीं आई अब तक ?

प्रकाश—तुम्हारा ध्यान नहीं मेरी बातों की ओर—

मणि—नहीं ।

प्रकाश—क्यों ?

मणि—मुझे वह उपदेश नहीं सुनना है—मुझे ऐसी आदत नहीं !

प्रकाश—आदत डालनी चाहिए । (वेटर रस का गिलास तथा चाय ले कर आता है । दोनों के सामने एक तियाई रखकर उस पर रखता है और खड़ा रहता है) जाओ तुम (जी कहकर वेटर जाता है । प्रकाश गिलास हाथ में लिए कहने लगता है) लगता है, कि यह दाँव आखिरी है—पर कौन कह सकता है—(वह गिलास होठों तक ले जाता है)

मणि—रखो वह गिलास नीचे ।

प्रकाश—क्यों ?

मणि—उसके मुँह की ओर देखा था ? साक्षात् राक्षसी मुख-मुद्रा हो रही थी उसकी । मैं तो डर ही गई थी । कौन कह सकता है—शायद—

प्रकाश—बाँय्—बाँय्—(वेटर आता है) ले जाओ यह ।

वेटर—क्यों ? अच्छा नहीं बना ? और कुछ ले आऊँ ?

प्रकाश—नहीं—कुछ नहीं । यह रंग ही मुझे पसन्द नहीं है ।

वेटर—और यह चाय ?

प्रकाश—वह भी ले जाओ—कुछ भी नहीं चाहिए अब । (बेटर बर्तन ले जाता है) सचमुच अब कुछ नहीं चाहिए । (Pause) क्यों ? चुपचाप-सी बैठ गई ?

मरिण—बोलना नहीं है न ? जो बोलना चाहती हूँ वह बोल नहीं सकती फिर क्यों बेकार मुँह थकाऊँ ?

प्रकाश—जिस समय कोई खास बात नहीं करनी होती है उस समय फालतू बकवास करनी पड़ती है । चुपचाप बैठना बड़ा सन्देहजनक होता है ।

मरिण—मैं नहीं चाहती ये दाँवपेंच !

प्रकाश—शराबवन्दी पूरी करनी है न ? करनी है न ? फिर ये दाँवपेंच छोड़ने से काम नहीं चलेगा । (Pause) (बेटर आता है ।)

बेटर—मुझे आवाज दी ? (प्रकाश उसकी ओर देखता भर रहता है) मुझे बुलाया ?

प्रकाश—हाँ । (बेटर चौंकता है) अभी तक कोई भी क्यों नहीं आया ?—सेक्रेटरी से भेंट हो जाती तो उन्हीं से संदेसा कह कर चला जाता । मझे दूसरा काम है—उसके सिवा इसे घर पहुँचाना है । (बिना कुछ बोले बेटर दूसरे दरवाजे से जाता है) (मरिण से) देखा उसके चेहरे की ओर ?

मरिण—चलो—अब चलें । हो सका तो फिर आ जायेंगे—मुझे डर लगने लगा है यहाँ ।

प्रकाश—ज़रा ठहरो । सेक्रेटरी को आ जाने दो ।

मरिण—और वह घर में न हो तो ?

प्रकाश—तो वह जाता नहीं—हूँ—ठहरो—(मालिक आता है) आइए—बड़ी देर हो गई मुझे । और कितना इन्तज़ार करूँ ? साहब से केवल इतना कह दीजिए कि एक बहुत बड़े स्टॉक का पता चला है—बिल्कुल निकट है—उस पर कब्जा करने की तैयारी करके अभी-अभी आता हूँ ।

मालिक—अभी आए जाते हैं साहब । ज़रा ठहरिए न !

मरिण—नहीं, चलो चलें—

प्रकाश—अच्छा, तो मैं जाता हूँ । साहब से कह दीजिए । (दोनों जाते)

हैं । मालिक टहलने लगता है । वेटर आता है ।)

मालिक—सुन लिया ?

वेटर—हाँ ।

मालिक—तो अब ?

वेटर—और होगा कोई !

मालिक—फिर यहाँ आने के लिए क्यों कहा उसने ?

वेटर—साहब को ले जाने के लिए—रोज़ की भाँति—

मालिक—मेरा ख्याल नहीं !

वेटर—हूँ—भूठा डर ! कौन बताएगा उसे ?

मालिक—आज तक किसने बताया उसे ?

वेटर—वह तो बाहर ही—

मालिक—हाँ—यह ठीक है । तो तुम्हारा कहना है इन्तज़ार किया जाय ?

वेटर—आड़े समय के लिए पूरी तैयारी है । वैसा देखा, तो—

मालिक—ठीक है । जाओ तुम—

वेटर—अच्छी तरह ध्यान रखिए । मैं कभी कभी गड़बड़ा जाता हूँ । चाय पानी देना पड़ता है न ?—उतने समय के लिए भी कोई आँखों से ओझल न होने पाए । (वेटर जाता है । फिरोज़ आती है ।)

फिरोज़—कौन आया था यहाँ ?

मालिक—जी, इन्स्पेक्टर प्रकाश और मणि बहन ।

फिरोज़—कब गए ?

मालिक—अभी अभी । रास्ते में नहीं मिले ?

फिरोज़—कोई सन्देश ?

मालिक—साहब के लिए—

फिरोज़—अच्छा । जाइए ! (मालिक जाता है । वह इधर उधर देखती रहती है तभी वेटर आता है)

वेटर—चाय लाऊँ ?

फिरोज़—नहीं । कितनी देर थे वे यहाँ ? . '

बेटर—कौन ?

फिरोज—प्रकाश और मणि ?

बेटर—काफी समय—दस—पन्द्रह मिनट—शायद कम हों—या ज्यादा भी हो सकते हैं—

फिरोज—वता देना मैं ऊपर हूँ यदि कोई आए तो । (जीने की ओर जाती है । बेटर उसकी ओर देखता रहता है—उसके ऊपर जाकर ओझल होने तक देखता रहता है तथा उसके बाद बाहरी दरवाजे में से भाँकता है और चौंककर पीछे हटता है—प्रकाश प्रवेश करता है ।)

प्रकाश—मिस फिरोज आ गई ?

[बेटर केवल सकारात्मक सिर हिलाकर जीने की ओर जाता है । तभी ऊपर से 'कौन है ?' कहकर फिरोज पूछती है । जब बेटर चिल्लाकर 'इन्स्पेक्टर साहब' कहता है तब फिरोज दौड़ती हुई नीचे आने लगती है—आखिरी सिढ़ियों पर आते ही वह धीरे-धीरे आने लगती है । बेटर जाता है ।]

फिरोज—(प्रकाश से) क्या है ?

प्रकाश—कोई खास बात नहीं ।

फिरोज—उस दिन आप पहले नहीं थे ?—कौन था वह मजदूर ?

प्रकाश—कौन-सा मजदूर ?

फिरोज—जिसने मुझे वह स्थान दिखाया वह ? बड़ा भला आदमी जान पड़ता था । पहले मुझे शक हुआ था—पर धीरज रक्खा, गई और काम हो गया । पर उसके बाद उसका पता नहीं । आया नहीं, मिला नहीं और न ही ईनाम माँगा ।

प्रकाश—ऐसे ही लोग हैं वे । उन्हें पहचाना नहीं जा सकता—और भी बहुत से हैं ऐसे । किसी समय वे शराबी थे—शराबबन्दी से फायदा हुआ है इस बात का उन्हें विश्वास हो गया है, इसी लिए अब वे यह काम कर रहे हैं । शराब का खातमा करेंगे तो एक समय के ये शराबी ही ।

फिरोज—उस दिन की प्राद आते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं ! कितनी बड़ी हिम्मत का काम था वह ?—(सिहर कर) और वह गोली चला देता तो !

प्रकाश—इसी को कहते हैं आत्मविश्वास !

फिरोज़—नहीं—आप नहीं समझे । सचमुच वे वही चाहते हैं । वही बात कहते रहते हैं बार बार ! इसी लिए मैं डरती रहती हूँ ।

प्रकाश—छोड़िए वे बातें !

फिरोज़—क्यों ?—डर लगता है ?

प्रकाश—नहीं । वे बातें करने के लिए यह जगह ठीक नहीं ।

फिरोज़—आप भूलते हैं ! यह हमारा घर है ।

प्रकाश—(बड़बड़ाता-सा) कौन जाने !

फिरोज़—यानी ?

प्रकाश—(बिल्कुल धीरे से) ज़रा तसल्ली रखिए—थोड़ी देर—अन्तिम फैसले का समय बिल्कुल नज़दीक आ गया है—बेटर एक ओर से दूसरी ओर जाता है) देखिए !

फिरोज़—बहुत हो चुका यह ! अब पिताजी से कहे बिना दूसरा उपाय नहीं । इन लोगों को जाना चाहिए यहाँ से !—अभी तक पिताजी कैसे नहीं आए ? आजकल ऐसी हालत हो रही है मेरी—ज़रा देर होते ही मेरा प्राण छटापटाने लगता है !—

प्रकाश—सच भी है !—पर इसका ध्यान तो उन्हें रखना चाहिए ।

फिरोज़—उन्हें याद कहाँ है हमारी ? यह प्रत्यक्ष देखते हुए भी कि अपने को एक लड़की है—एक लड़का है, उन्हें याद नहीं रहती । यह ऐसा अकेला घर—दादा वैसे भटकता फिरता है—इसीलिए लगता है घर जाऊँ ही नहीं—सारा दिन किसी पक्षी की भाँति भटकती फिरूँ—और रात आऊँ घोंसल में !—पर मन नहीं मानता—कौन उनकी देखभाल करेगा ? (प्रभास आता है) और यह है एक ! इसे भी तो सम्भालना पड़ता है न ? (प्रभास के पीछे पीछे मरिण आती है) ऐं ! तुम आ गई ? उन्होंने तो तुम्हें घर पहुँचाया था न ?

प्रभास—मैं ही ले आया हूँ उसे अपने साथ—वह आ कब रही थी ?—गर्व जो हो रहा है तुम लड़कियों को ! शराबवन्दी शुरू की है न ? और सफलता मिल रही है औरतों को—पुरुषों को नहीं !—हूँ—कोई हर्ज तो नहीं हुआ

हमारे आने से ?

फिरोज़—किस बात का हर्ज होता ? हमारा ऐसा कौन-सा रहस्य है ?

प्रभास—नहीं—सोचा कहीं तुम्हारी राजनीति न चल रही हो ! हाँ—मैं किसी और बात का सन्देह नहीं करूँगा ! और कोई होता तो वैसा ही कोई आरोप लगाता—पर तुम राजनीतिक लोग सर्वथा कर्तव्य के लिए तत्पर, इस-लिए—

फिरोज़—दादा, जाओगे भी ?—मणि, तुम जाओ तो घर—

प्रभास—इतना भी नहीं देखा जाता ? इस तुम्हारी राजनीति के कारण हमारा विवाह रुका पड़ा है—हम लोग क्षण भर एक जगह खाली बैठें भी नहीं तब तक ?

प्रकाश—साहब आए नहीं अभी ?

प्रभास—चलो मणि हम लोग अन्दर चलें—अभी तुम्हें तो नहीं है कोई राजनीतिक काम ? यह तो मुझे कुछ भी नहीं बताती—चलो तुम्हीं बताओ मुझे वह सारी हकीकत !—

फिरोज़—कैसी, हकीकत ? (बिना कुछ उत्तर दिए प्रभास मणि को खींच कर ले जाता है।) ये हो रहा है ! किसे बताऊँ ? कौन है मेरा ?

प्रकाश—मुझे बताइए न ! (फिरोज़ चौंककर देखती है) मैं केवल सुनूँगा—उत्तर नहीं दूँगा—बिना पूछे कुछ भी नहीं बोलूँगा । (Pause) यह दम-घुटन बुरी वला है ! हृदय के उद्वेग जब पिघलने लगते हैं तो उन्हें किसी न किसी तरह व्यक्त करना जरूरी होता है—माफ कीजिए, यों ही मन में आया इसलिए कह बैठा—

फिरोज़—सच है—पर मैं मजबूर हूँ । अकेले ही मरना है मुझे ! परसों से मेरा मन ठिकाने पर नहीं है । सिद्धान्त की प्रस्थापना के लिए कठिन परीक्षा देने का अविचार यदि पिताजी कर बैठे तो—तो मुझे भी वंसा ही करना होगा ।

प्रकाश—क्या वह अविचार होगा ?

फिरोज़—मेरे सामने भी यही प्रश्न है (Long Pause)

फिरोज़—पिताजी क्यों नहीं आ रहे हैं अभी तक ? (बेटर आता है)

बेटर—जी ! क्या चाहिए ।

फिरोज़—(क्षण भर उसकी ओर देखकर) दादा को कुछ चाय कॉफी चाहिए हो तो देखो !—

बेटर—यहाँ क्या लाऊँ ?

फिरोज़—कुछ नहीं—(बेटर जाता है) यों टोह रखता है ! क्यों ? क्यों-कर ?? क्योंकर ???—जी ऊब-सा उठता है !

प्रकाश—(धीरे से) ज़रा धीरज रखिए !—कुछ विचार न कीजिए । विचार करने से केवल परेशानी ही होती है !

फिरोज़—क्यों इस प्रकार उदास उदास-सा लग रहा है मुझे ? आने वाले संकट के कही ये आसार तो नहीं हैं ?

प्रकाश—यह शान्ति के पूर्व का तूफान है !

फिरोज़—यह कह कर अपने मन को समझा लेना है ! एक बार सोचती हूँ—(मालिक आता है) क्या है ?

मालिक—फोन आया है साहब के लिए ?

फिरोज़—किसका ? (यह कहती हुई उत्तर का इन्तज़ार किए बिना ही चली जाती है)

मालिक—साहब के आने तक ठहरिएगा ?

प्रकाश—जी हाँ !—क्यों ?

मालिक—नहीं, यों ही पूछा !—मुझे बताने लायक कोई बात नहीं ?

प्रकाश—माफ़ कीजिए—मुझे ऐसा हुकुम नहीं है ।

मालिक—यह अविश्वास किसका है ? साहब का या आपका ?

प्रकाश—यह मैं कैसे कहूँ ! मैं हुकुम का ताबेदार हूँ ।

मालिक—कहाँ मिला है यह स्टॉक ?

प्रकाश—बिल्कुल नज़दीक ।

मालिक—अच्छा ? नज़दीक यानी कहाँ ?

प्रकाश—यह बताने के बजाय दिखा ही दूँगा ।

मालिक—कब ?

प्रकाश—समय आते ही !

मालिक—मैं कुछ मदद कर सकता हूँ ?

प्रकाश—कुछ नहीं कहा जा सकता—(फिरोज आती है) कौन था ?

फिरोज—कोई भी नहीं—लगा कोई बोल रहा है, पर एकदम बन्द हो गया बोलना । और कौन क्या बोला कुछ भी समझ में नहीं आया ।

मालिक—मुझे भी किसी ने नाम नहीं बताया ।

प्रकाश—यह तो होता ही रहता है । जहाँ टेलीफोन होगा वहाँ ऐसी शरारतें होती ही रहेंगी !

मालिक—उस दिन तो साहब ने कमाल ही कर दिखाया !

फिरोज—आपसे किसने कहा ?

मालिक—एक सिपाही ने ।

फिरोज—वह कहाँ मिला आपको ?

मालिक—काम के लिए आया था ।

प्रकाश—आवकारी सिपाही ? क्यों ? उसका नम्बर क्या है ?

मालिक—मैंने उसका नम्बर नहीं देखा ।

प्रकाश—क्यों ?

मालिक—क्या जरूरत थी ?

प्रकाश—अच्छा ? आवकारी सिपाही आपके पास क्यों आया ?

मालिक—मैं भी तो उसी विभाग में हूँ ?

प्रकाश—पर काम क्या था ?

मालिक—यह पूछने का अधिकार साहब को है ।

फिरोज—मैं पूछ रही हूँ—क्यों आया था वह ?

मालिक—यह पूछने का अधिकार साहब को है । (जाने लगता है)

फिरोज—ठहरिए—(मालिक जाता है)—हं ! यह दूसरा नमूना है !

प्रकाश—वह मुझ से अन्दाज लेना चाहता था ।

फिरोज—अब तो कमाल हो गई !—जो होना हो हो—आज पिताजी को बताऊँगी, यह आदमी यहाँ से निकलना ही चाहिए ।

प्रकाश—मेरी एक प्रार्थना है—

फिरोज़—क्या ?

प्रकाश—आज के दिन और ठहर जाइए—कल वह स्वयं ही चला जाएगा—(वेटर आता है) क्या है ?

वेटर—मरिण वहन बुला रही है बीबी जी को—

फिरोज़—अभी आती हूँ—ठहरिए—(जाती है)

प्रकाश—(वेटर जाने लगता है उससे) बाँय्—जंग इधर आओ—

वेटर—जी—

प्रकाश—कोई आबकारी सिपाही आया था यहाँ ?

वेटर—जी हाँ—सेक्रेटरी साहब के पास ।

प्रकाश—कौन था ?

वेटर—मे उसे नहीं पहचानता—(प्रभास अन्दर से 'बाँय्' कह कर पुकारता है) अभी आया साहब—(कहता हुआ जाता है) •

[प्रकाश कुछ देर चुपचाप बैठा रहता है । मालिक पीछे से आकर देखने लगता है । तभी एक मवाली छरा लेकर उसी दरवाजे से प्रवेश करता है—प्रकाश के पास आने ही वाला है तभी प्रकाश मुड़ कर उसका हाथ पकड़ लेता है और मरोड़ने लगता है । वह नीचे गिर पड़ता है ।]

प्रकाश—(उसकी छाती पर बैठ कर) बोलो—किसने तुम्हें भेजा ? किसने भेजा ? (वह मुँह खोल कर दिखाता है) ज़बान नहीं है ?—गूंगे हो ? लिखना जानते हो ?—नहीं ?—उठो—(मवाली उठता है) हाथ आगे करो—ऊपर उठाओ हाथ—यों ही खड़े रहो—(जेब से पिस्तौल निकाल कर तानता है तथा सीटी बजाता है । मालिक, वेटर, प्रभास, मरिण, फिरोज़ तथा नौकर आते हैं) पकड़ो इसे ।

प्रभास—	{	यह कौन ?
मरिण—		क्या हुआ ?
फिरोज़—		अच्छी तरह से पकड़े रखो उसे
मालिक—		कौन हो जी तुम ?

फिरोज—कहाँ से आया यह ?—क्यों आया ?—कहाँ से आया ? (वह मँह खोलकर दिखाता है ।)

प्रकाश—गूंगा है यह !

प्रभास—चुपचाप घुस आया, क्यों ?—किस पर चला रहा था छुरी ?

प्रकाश—मुझ पर ।

फिरोज—गूंगा है ?—शाबास !—बड़े दूरदर्शी हैं ये लोग !—यहाँ कौन है तुम्हारी जानपहचान का ?—(वह नकारात्मक सिर हिलाता है) तो फिर कैसे आए ?—सिपाही नहीं थे पहरे पर ?—(दीवान आता है) पिताजी !

दीवान—क्या गड़बड़ है ?

प्रकाश—मे अकेला यहाँ आपकी राह देख रहा था । पीछे से आकर इसने छुरी चलाई—मैंने इसे पकड़ लिया—यह गूंगा है—

दीवान—करो इसे पुलिस के हवाले—(उसे ले जाते हैं)—कहाँ से आया यह ?

प्रकाश—इसका पता नहीं चला—पर इन दोनों दरवाजों से नहीं आया इतनी बात सच है ।

दीवान—पीछे से आया ?

प्रकाश—ऐसा ही जान पड़ता है ।

दीवान—(मालिक से) आप कहाँ थे ?

मालिक—भीतर—ऑफिस में—

फिरोज—पिताजी—(प्रकाश उसे आँखों से इशारा करता है । वह कहते कहते रुक जाती है ।)

दीवान—क्या ?

फिरोज—अन्दर से कैसे आ सकता है यह ?

दीवान—मारने वाला भी कभी सामने से आया करता है ? अच्छा,—जाइए आप लोग (मालिक और बेटर जाते हैं) आज स्टेशन कौन गया था फिरोज ?

फिरोज—मैं ।

दीवान—और मरिण ?

मरिण—आज मेरी छुट्टी है ।

दीवान—इसी लिए घूम रही थी इसके साथ ?

प्रभास—जी नहीं—यहीं आई थी—प्रकाश के साथ । मैं फिर से उसे घर से ले आया ।

दीवान—अच्छा ?—(हँसता है)

प्रभास—हँसिए नहीं । बहुत हो गया अब । इसे डिसचार्ज कीजिए पुलिस से । यहाँ दिन दहाड़े घर में कातिल घुसने लगे हैं—यहीं करने दीजिए इसे पुलिस का काम—

दीवान—और थोड़े दिन रह गए हैं—अभी अभी कुछ निश्चित हुआ सा लग रहा है मुझे । एक बार पूरा विश्वास होते ही औरतों की पलटन तोड़ दूँगा—

प्रभास—(निःश्वास लेकर) आखिर कुंवारा ही मरना पड़ेगा मुझे ।

फिरोज—ये बात कहें सीधे सादे लोग । पूर्ण शराबबन्दी होना क्या इतना अशक्य है ?

दीवान—काम करने वाले के लिए संसार में कुछ भी अशक्य नहीं । तुम्हारा क्या विचार है मरिण ?

मरिण—शराबबन्दी पूर्ण हुए बिना मैं कभी भी गृहस्थी के भँभट में नहीं पड़ूँगी ।

दीवान—शाबास !

प्रभास—हाय रे भाग्य !

फिरोज—क्या नाटक कर रहे हो ?

प्रभास—नहीं जी, तुम लोगों जैसा मैं लालची नहीं !

दीवान—आपका क्या विचार है मि० प्रकाश ?

प्रकाश—मैं सिपाही हूँ—भविष्यकाल में भाँकने का जो प्रयत्न करता है वह सिपाही का काम नहीं कर सकता ।

दीवान— { शाबास !

फिरोज— { शाबास !

दीवान— ठहरो प्रकाश । आज यहीं खाना खाओ ।—आज मरिण भी आई हुई है—

प्रभास—हो जाने दीजिए हमारी सगाई के उपलक्ष में दावत !—

[दीवान हँसता है—मरिण की पीठ ठोंकता है और ऊपर चला जाता है]

प्रभास—घर में कातिल घुस आने की तो जैसे इन्हें आदत ही पड़ गई है ! है किसी का ख्याल ? अभी यहाँ खून हो जाता !—और ये दावत देने की बातें कर रहे हैं !—

फिरोज—और तुमने जो अभी सगाई की दावत करने के लिए कहा वह ?

प्रभास—उन्हीं का तो लड़का हूँ मैं ?—पर बात दूसरी है । ये मि० प्रकाश क्या सोचेंगे ?—

प्रकाश—मैं साहब को जानता हूँ !

मरिण—चलिए—अब अन्दर ही बैठे ।

प्रकाश—मुझे यहीं रहना चाहिए ।

प्रभास—क्यों ? मरना तय कर लिया है शायद ? जो भी है मरने की बातें कर रहा है । कहना आसान है—सभी पिताजी नहीं—

प्रकाश—माफ कीजिए—बेकार गलतफ़र्मी न कर लीजिए ।

प्रभास—तो ठीक है—चलो मरिण—चलो फिरोज—

फिरोज—मैं भी यहीं ठहरूँगी—

प्रभास—क्या कहा ?

फिरोज—सुना नहीं ? जाओ तुम दोनों । मैं नहीं आती ।

प्रभास—चलो मरिण, हम भी कब चाहते थे कि ये आँय ? क्या ? हम उधर बैठेंगे—उसी प्रकार ये दोनों यहाँ बैठेंगे !—चलो—

मरिण—उसी प्रकार ?

प्रभास—हाँ—हाँ—उसी प्रकार । चलो (दोनों जाते हैं ।)

फिरोज—दादा की बातों पर ध्यान न दीजिए ।

प्रकाश—अभी और किसी भी बात पर विचार करने के लिए मेरे पास समय नहीं। क्या कल ? अजीब दम घुट रहा है मेरा। जो कहने आया था वह कहने की हिम्मत नहीं हुई—नहीं, लगा कहूँ ही नहीं। वह सेक्रेटरी—जाने दो—यदि वह बताएगा तो देखा जायगा। अब सोचता हूँ व्यर्थ उसे सन्देशा बताया !

फिरोज—क्या सन्देशा बताया ?

प्रकाश—कि एक स्टॉक का पता लगा है।—एक बार लगा कि इतने से ही उसे सन्देह होगा—

फिरोज—काहे का सन्देह ?

प्रकाश—यहाँ अब कुछ भी नहीं—नहीं—ठहर जाओ और जो होगा देख लेना। आज का दिन बड़ा महत्वपूर्ण है। चली हुई चालें काम कर जाय तो—बहुत बड़ा काँटा दूर हो जायगा—पर यदि ज़रा भी भूल हो जाय तो—

फिरोज—कोई भूल नहीं होगी। मन कड़ा करना चाहिए—एकदम मजबूत कर लेना चाहिए फौलाद की भान्ति। यह बात हम औरतों से बन पड़ती है। आप पुरुष बड़े उतावले होते हैं। आगे क्या होगा इस बात का विचार करते बैठते हैं, इसीलिए आप लोग धोखा खाते हैं। हँसे क्यों ?—सच है दूसरे को उपदेश देना आसान होता है। क्यों ?—मैं उपदेश नहीं देती। मैंने जो अनुभव किया है उसकी बानगी दे रही हूँ आपको ! कैसा दम घुट रहा है मेरा ! पर मेरे मन का संतुलन न रहे तो सारा खेल बिगड़ जाय। कितना चौकस रहना पड़ रहा है मुझे इस बात की आपको कल्पना नहीं। न ही हो वह कल्पना ! मेरी परीक्षा मेरे लिए काफी है—उसमें पिताजी को भी मैंने हिस्सेदार नहीं किया। बड़ी मुश्किल हो रही है—चाहती हूँ रुकी हुई साँस कहीं छोड़ूँ—चाहती हूँ ज़रूर, पर कहाँ छोड़ूँ साँस ? लगता है, साँस छोड़ते समय कहीं दम न निकल जाय फौरन !—नहीं—नहीं !—

प्रकाश—(क्षणिक स्तब्धता के बाद) निःश्वास छोड़ने के लिए मनुष्य को कहीं स्थान चाहिए—नहीं कहकर काम गहीं चलाता। अकेलेपन बहुत बुरा होता है—अभिमान होता है अकेलेपन में। अकेले युद्ध करने में बड़ी बहादुरी

होती है—पर ऐसे समय एकाध ढाल भी चाहिए—सभी बार शरीर पर लेना ठीक नहीं । थकान आ जाना ठीक नहीं । निरन्तर लड़ते रहना चाहिए—बिना थके बार करने चाहिए और सहने भी चाहिए ।—इसी लिए ढाल की जरूरत है ।

फिरोज़—(बड़बड़ाती है) ढाल चाहिए !—रक्षा के लिए ?—किस लिए चाहिए ढाल ?

प्रकाश—सुस्ताने के लिए—रक्षा के लिए नहीं ।

फिरोज़—सुस्ताने के लिए ! कब मिलेगा सुस्ताने को ?—कब ? कब ??—

[अन्दर से मणि के गाने की आवाज़ सुनाई पड़ती है । प्रकाश और फिरोज़ का ध्यान एकदम उस ओर जाता है । वे दोनों क्षण भर चुपचाप सुनते रहते हैं । इस विक्षेप की ओर फिरोज़ का ध्यान जाता है पर वह अपनी बात चालू रखती है । अन्दर मणि का गाना जारी है ।]

फिरोज़—अपनी निजी गृहस्थी भुलाकर जब संसार की गृहस्थी में मनुष्य हाथ डालता है तब उसे आराम की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए । ये बात पिताजी बार बार कहा करते हैं । मैं उसे ठीक समझती हूँ—मन को भी जँचता है—पर न जाने क्यों, वास्तविक जीवन में इस उपदेश से लालची मन धोखा नहीं खाता ।—क्या कहा मैंने ? धोखा कहा ?—नहीं समझ पाती, ये कहना था मुझे !—

प्रकाश—कितनी मधुर है मणि की आवाज़ !—क्या गाना गा रही है वह ?—मैंने नहीं सुना था उसका यह गाना !

फिरोज़—(ठंडी साँस लेकर) गाने की ओर ध्यान था शायद ?

प्रकाश—शौक है मुझे गाने का—

फिरोज़—यह बात शायद शराब वाले नहीं जानते ? उनके लिए ये साधन अच्छा रहेगा !—आपको चमका देने के लिए—

प्रकाश—माफ कीजिए । भूल हुई । अपनी इच्छा को किस समय दबाना पड़ता है यह मैं इस समय भूल गया था—

[गाने की आवाज नजदीक नजदीक आने लगती है । प्रभास और मणि एक दूसरे का आलिंगन किए गाते हुए बाहर आते हैं—उन्हें देखते ही फिरोज चट से प्रकाश का हाथ जोर से पकड़ लेती है—इस बात की ओर प्रकाश का ध्यान जाता है पर वह ध्यान नहीं देता । दोनों सुनते रहते हैं । पीछे की ओर से वेटर आकर देखता है और मालिक के कमरे की ओर जाता है । वे दोनों गाते गाते फिरोज के पास आते हैं ।]

प्रभास—सुनो फिरोज—

फिरोज—सुन रही हूँ—

प्रभास—(उसके हाथ की ओर देखकर) अच्छा !

फिरोज—क्या हुआ ? (भट होश में आकर हाथ छोड़ देती है)

प्रभास—हाथ क्यों छोड़ दिया ? इस मणि को मैं यों चिपटाए हुए हूँ । तुम लोगों को सामने देखकर क्या मैंने उसे छोड़ दिया ?

फिरोज—रुक क्यों गई मणि ? गाओ न ।

मणि—तुम्हें अच्छा लगा ?

फिरोज—इन्हें बहुत पसन्द आया । तुम जब गाने लगीं तो इन्हें मेरी बातें भी अनसुनी होने लगीं ! गाओ न—

प्रभास—हाँ, गाओ—करो शुरू—और फिर तुम भी प्रकाश का हाथ मजबूती से पकड़े रखना—

फिरोज—दादा !—

प्रभास—ये गाने का परिणाम है । मैं तुम्हें दोष नहीं देता । गाओ न मणि !

प्रकाश—आप गलत समझ रहे हैं ।

प्रभास—अच्छा ? फिर दूर कीजिए न गलतफैमी !

फिरोज—आदमियत से बोलना तुम्हें कब आएगा दादा ?

प्रभास—हाँ—यह आदमियत से ही बोल रहा हूँ । तुम अतिमानवी बनना चाहती हो इसीलिए मेरा आदमियत से बोलना तुम्हें नहीं भाता । ज़रा आदमियों में आओ—इसी तरह किसी का हाथ पकड़ने का प्रयत्न करो—

(फिरोज एकदम चली जाती है) देखा मणि, फिरु अब आदमियों में आने लगी है !

मणि—ऐसी बातें करना ठीक नहीं । कितना बुरा लगा उन्हें !—
ठहरिए—मैं समझाकर उन्हें ले आती हूँ । (जाती है)

प्रभास—देख लिया ? औरतों की जात जितनी औरतों की ओर खिचती है उतनी ही पुरुष की जात आपस में भगड़ती रहती है । इसीलिए शराबबन्दी के आन्दोलन में ये औरतें पुरुषों को मात कर रही हैं । किस कदर संगठन कर लिया है इन्होंने !

प्रकाश—वही देख रहा हूँ मैं ! वह सामर्थ्य हममें नहीं इसी लिए मुझे दुख होता है । (बेटर मालिक के कमरे से जाकर अन्दर दूसरी ओर जा रहा है) बाँय, इधर आओ ।

बेटर—जी ।

प्रकाश—थोड़ा-सा शरबत ले आओ—गला सूखा जा रहा है ।

बेटर—बहुत अच्छा—(जाता है)

प्रकाश—बड़ा नेक आदमी जान पड़ता है । ऐसे नौकर तकदीर से ही मिलते हैं ।

प्रभास—आपको नहीं मिलता ऐसा नौकर ?

प्रकाश—नौकर रखने की अभी मेरी औकात नहीं है । (बेटर आता है)
एक ही ? इनके लिए नहीं लाए ?

प्रभास—जाओ दूसरा ले आओ (बेटर जाता है)

प्रकाश—अभी तक समझाना नहीं हो पाया है शायद ?

प्रभास—औरतें आपस में मिलते ही पुरुषों को भूल जाती हैं । बैठी होंगी वहीं बातें करती ! हाँ—तब क्या कह रहा था मैं—हम पुरुषों को भी एकता कर लेनी चाहिए—(बेटर आता है) दो —

प्रकाश—ये लीजिए न—वह मैं ले लूँगा—इतना नहीं चाहिए मुझे—
वह थोड़ा दिखाई पड़ता है !—

प्रभास—(भट से गिलास लेकर मुँह से लगा लेता है ।) स्वागत-सत्कार

का मतलब मेहमान का हिस्सा छीन लेना नहीं। (बेटर जाने लगता है) बाँय्, इधर आओ—यहाँ बैठो—हमारे पास बैठो—हँसते क्या हो ? हम लोग पुरुषों का संगठन शुरू करने वाले हैं। बैठो—

प्रकाश—सचमुच—बैठ जाओ—गाड़ी में हम लोग कब ये भेदभाव मानते हैं—(बेटर चौकता है)

बेटर—मैं गरीब आदमी—

प्रकाश—पास पास बैठने से गरीब अमीर नहीं होता और न ही अमीर गरीब होता है—

बेटर—माफ़ कीजिए—(एकदम चला जाता है)

प्रभास—इस प्रकार क्यों चला गया वह ?—बड़ा घबराया-सा जान पड़ा। क्यों ?

प्रकाश—नौकर हैं—मालिक के पास कैसे बैठ सकते हैं ?

प्रभास—तो हममें यह एकता कैसे होगी ?

प्रकाश—यही तो मुश्किल है न ! अभी साहब आ जायें तो उनके सामने बैठने तक की मुझे हिम्मत नहीं होगी।—पास बैठना तो दूर रहा !

प्रभास—हम जब स्वयंसेवक थे तब ये भेदभाव नहीं मानते थे—हमारा वह दल टूटा और भेद पैदा हो गया। इन औरतों ने अपना दल नहीं तोड़ा इसलिए उनमें एकता बनी हुई है—तनखाह लेने वाले नौकरों में भी कभी एकता हुई है ?—कहाँ गई ये ? कहीं भाग तो नहीं गई ? हँस क्या रहे हैं ? इन औरतों का कोई भरोसा नहीं। कब किसके साथ और कैसे भाग जाएँगी कुछ नहीं कहा जा सकता। आइए—आइए उन्हें तलाश करें—(प्रकाश का हाथ पकड़े उसे घसीटता हुआ ले जाता है। क्षण भर वहाँ कोई भी नहीं होता—बाद में एक ओर से बेटर और दूसरी ओर से मालिक आता है)

बेटर—टेढ़ा प्रसंग है !

मालिक—कैसा प्रसंग ?

बेटर—यही है वह। निःसंदेह—ठीक वही वाक्य—ठीक उसी लहजे में कहा—

मालिक—कौन-सा वाक्य ?

बेटर—सेठ बन कर आया था वहाँ—उस दिन—

मालिक—उस दिन ? तहखाने में ? यह ?—मरे !—विश्वास है
मुझे ?—

बेटर—बिल्कुल निःसंदेह—वही है यह—ठीक वही—तभी कहा—मुझे
लगता है उसने जान बूझ कर कहा, मुझे पहचान दिलाने के लिए ।

मालिक—पहचान क्यों दिलाए वह ?

बेटर—वही तो मैं भी नहीं समझ पाता !

मालिक—तो अब ?

बेटर—मेरा ख्याल है, वह चाहता है कि हम लोग भाग जाय ।

मालिक—यह कैसे हो सकता है !

बेटर—इसमें कोई शक नहीं—जान बूझ कर उसने मुझे इशारा किया ।

मालिक—अभिप्राय ?

बेटर—शोर न मच जाय । दीवान जी की बेइज्जती नहीं होगी ?

मालिक—फिर ?

बेटर—फिर क्या ? हाँ—

मालिक—भाग चलें ?

बेटर—नहीं तो क्या करें ?

मालिक—और यह यहाँ का माल ?

बेटर—कृष्णार्पणमस्तु !

मालिक—कलेजा फटा जा रहा है !

बेटर—लालच ठीक नहीं—हड्डी हलक में फँस जाएगी ! मौका है तब
तक भाग लें—(परदे के पीछे प्रभास—बाँय—बाँय—) चलिए—वहाँ—
समझ गए न ?—वहाँ—(दोनों दो ओर से जाते हैं । प्रभास और प्रकाश
जाते हैं)

प्रभास—बाँय !—बाँय !!—बाँय !!! कहाँ गया यह ? देखा ? आपकी
नज़र लग गई !—

प्रकाश—ठीक है। मेरा खयाल है—बाँय् अब नहीं आएगा।

प्रभास—वयों—बाँय् ! बाँय् !! (जोर से चिल्लाता है)

प्रकाश—पहले तसल्ली कर लीजिए। (मणि और फिरोज आती हैं)

फिरोज—चिल्लाने के लिए क्या हो गया ?

प्रभास—बाँय् कहां है ?

फिरोज—होगा भीतर।

प्रभास—फिर जवाब क्यों नहीं देता ? महाराज भी है या नहीं घर में ?
या वह भी भाग गया ?—इन्हें यहाँ खाने के लिए रोक लिया इसलिए—

मणि—क्या इसीलिए भाग गया वह ?

प्रभास—हूँस क्या रही हो ? ये गम्भीर प्रसंग है ! बाँय् !! बाँय् !!!

फिरोज—कितने जोर से चिल्ला रहे हो ? पिताजी सुन लेंगे न ?

प्रभास—बाँय्—बाँय्—बाँय् कहाँ गया ?

फिरोज—क्या सचमुच चला गया ?

प्रकाश—मैने कहा था या नहीं ?

प्रभास—क्या कहा था ?

फिरोज—कि बाँय् और सेक्रेटरी आज अपने आप भाग जाएँगे।

प्रभास—(चिल्लाकर) अरे कौन है वहाँ—चपरासी—(चपरासी आता है) सेक्रेटरी है या नहीं देखो—(चपरासी जाता है) क्यों भाग जाएँगे वे ?

मणि—वे भाग जाएँगे ऐसा कहा था इसने आपसे ?

फिरोज—हाँ—आश्चर्य है !

प्रभास—आश्चर्य नहीं—बेइज्जती है !

फिरोज—किसकी ? क्यों ?

प्रभास—तुम्हारी—मेरी—पिताजी की—सब की बेइज्जती होगी उनके भागने से—आत्महत्या करने की नौबत आ जाएगी मुझ पर !

फिरोज—तुम पर ? क्यों ?

प्रभास—तुम नहीं समझ सकती यह !. (प्रकाश के कोट की कॉलर पकड़कर) भले आदमी बताओ, ये लोग भाग जाएँगे यह तुमने कैसे जाना ?—

और क्या क्या पता लगा तुम्हें ?

प्रकाश—मैं सब कुछ जान गया हूँ—(प्रभास एकदम बैठ जाता है)
इसीलिए मैंने उन्हें भाग जाने दिया—इसलिए की आपकी बेइज्जती न हो ।

प्रभास—बाँय् भागेगा नहीं—कभी नहीं—बाँय् !!!! (दीवान आता है ।
सीढ़ियों पर खड़ा रहता है)

दीवान—क्या गड़बड़ है ?—(चपरासी आता है)

चपरासी—सेक्रेटरी साहब नहीं हैं ।

दीवान—कहाँ गए ?

प्रभास—भाग गए । (दीवान नीचे आता है) क्यों प्रकाश ?

दीवान—प्रकाश, यह क्या माजरा है ? (प्रकाश सीटी बजाता है) प्रकाश,
जवाब दो—(प्रकाश फिर से सीटी बजाता है) वस करो ! यह कहाँ की
तमीज़ है ? मैं पूछ रहा हूँ—

प्रकाश—यह उसका उत्तर है—(स्वयंसेवक अन्दर से पेटियाँ लाकर
रखते हैं ।) यह उसका उत्तर है !—

दीवान—यह काहे की पेटियाँ हैं ? शराब !! मेरे घर में ?—

प्रकाश—जी साहब ।

दीवान—और मुझे पता नहीं ?

प्रकाश—जी साहब ।

दीवान—मैं जानता नहीं और आप को पता लग गया ?

प्रकाश—हाँ साहब—

दीवान—सेक्रेटरी कहाँ है ?

प्रकाश—(स्वयंसेवकों से) ले जाओ ये पेटियाँ । (स्वयंसेवक पेटियाँ ले
जाने लगते हैं तभी दीवान उन्हें रोककर पेटी खोलकर देखता है । बोतल
दिखाई देती हैं । इशारे से जाओ कहता है, वे पेटियाँ ले जाते हैं ।)

दीवान—इतना बड़ा स्टॉक—और वह भी मेरे घर में ! सेक्रेटरी कहाँ
है ? बाँय्—बाँय्—

प्रभास—वह भी भाग गया । कुल मिलाकर ये बात सच है कि पुरुषों में

एकता नहीं होती !

दीवान—चुप रहो !

प्रभास—ठीक है ! मैं यही चाहता था । (जाकर एक ओर बैठ जाता है)

दीवान—(बैठता है) प्रकाश—

प्रकाश—(जेब से कागज़ निकाल कर देता है) यह रिपोर्ट—

[दीवान पढ़ने लगता है—सब चुप हैं—मणि फिरोज़ को एक ओर बुलाती है—वह ना करती है—मणि प्रभास की ओर जाती है, प्रभास उठकर दूसरी ओर जाकर बैठता है—मणि घबरा कर चारों ओर देखती है—प्रकाश उस पर आँखें निकालता है—वह स्तब्ध रहती है ।]

दीवान—प्रभास—प्रभास—

प्रभास—मुझ से चुप बैठने के लिए कहा गया था !

दीवान—उस समय—(कागज़ दिखाकर) अब नहीं । बोलो ।

प्रभास—मैं देख सकता हूँ ?

दीवान—देख लो । (कागज़ देता है)—शाबास प्रकाश ! थैब्यू मणि ! बड़ा योग्य आदमी दिया तुमने मुझे ! फिरोज़, मैं अब निडर हो गया हूँ ।

प्रभास—नहीं—

दीवान—प्रभास, हर बात में मेरा विरोध करने का क्या तुमने निश्चय कर लिया है ?

प्रभास—मुझे पुलिस के हवाले कीजिए—

मणि—क्या हुआ ?—क्या किया आपने ?—

फिरोज़—प्रकाश, ये सब क्या हो रहा है ?

दीवान—ठहरो बेटी—प्रभास, मेरे सवाल का जवाब दो ।

प्रभास—क्या है आपका सवाल ?—आपने कभी भी मुझ से कुछ नहीं पूछा । ठहरिए, आपके न पूछते हुए भी मैं बताऊँगा—

फिरोज़—नहीं दादा—

दीवान—यानी ? तुम यह जानती हो ?

फिरोज़—जो मैं जानती हूँ वह यही है या नहीं यह मैं अभी तक नहीं

जान पाई हूँ । मि० प्रकाश, मरिण को ले जाइएगा ज़रा ?

प्रभास—नहीं—अब मुझे किसी से कुछ भी चुरा कर नहीं रखना है । मैं गुनाहगार हूँ—बिल्कुल निडर होकर कह रहा हूँ कि मैंने गुनाह किया है—पर आप जो समझते हैं वह गुनाह मैंने नहीं किया है । अपने तक ही मैं गुनाहगार हूँ—पर—

फिरोज—मि० प्रकाश, मरिण को ले जाइए न ।

प्रभास—नहीं मरिण, कभी न कभी पता चल ही जाता इसे—अब निराकरण हो रहा है—अच्छा हुआ । फिरोज मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूँ—तुमने आज तक मेरे गुनाहों को छुपाए रक्खा—

दीवान—क्यों फिरोज ?

फिरोज—हाँ पिताजी ? (Pause)

दीवान—मेरी दोनों सन्तान मुझे दगा दें, क्यों ? फिरोज, मैं समझता था कि तुम ईमानदार हो—अपने पिता की भाँति ईमानदार हो—

फिरोज—हाँ पिताजी—

दीवान—फिर भी हाँ कह रही हो ?

फिरोज—हाँ पिताजी ।

दीवान—कैप्टन फिरोज !

फिरोज—जी हाँ दीवान साहब ।

दीवान—इन्स्पेक्टर प्रकाश, इन दोनों को पकड़ लो ।

प्रभास—और शराबबन्दी पर कुठाराघात करो ? जेल से मैं नहीं डरता दीवान साहब, सज़ा से भी नहीं डरता—पर इसका परिणाम क्या होगा यह भी सोचा है आपने ?

दीवान—(बड़बड़ाते हुए) इसका परिणाम—इसका परिणाम—(टहलने लगता है)

फिरोज—हाँ, इसका परिणाम ! किया है विचार इस बात का ? न्याय-निष्ठता अविचार नहीं हुआ करती दीवान साहब ! क्या मिल जाएगा आपको हमें कैद करने से ?

दीवान—यह तुम कह रही हो फिरोज ?

फिरोज—हाँ, दीवान साहब । आप पूरी शराबबन्दी करना चाहते हैं न ?

दीवान—इसलिए तुम लोगों को छोड़ दूँ ?

फिरोज—जी हाँ, इसीलिए । कलेजे के टुकड़े हैं इसलिए नहीं—वंशच्छेद होगा इसलिए नहीं—

दीवान—शराबबन्दी के लिए इस बूटलेंगर्सों को छोड़ दूँ ! हाः हाः हाः (हँसता है)

मणि—बूटलेंगर्स ? —

फिरोज—हाँ मणि ।

मणि—फिरोज—फिरोज —(एकदम बंठ जाती है)

प्रभास—ना मणि, बूटलेगर नहीं—महज एक शराबी—और उसके अपराध पर आवरण डालने वाली यह उसकी छोटी बहन !—नहीं माँ !

दीवान—(कागज दिखाते हुए) फिर यह क्या है ?—पेटियाँ नहीं देखीं अभी ?—कहता है बूटलेगर नहीं ! प्रकाश, उन भागे हुए लोगों के पीछे कोई गया है ?

प्रकाश—नहीं साहब ।

दीवान—क्यों ?

प्रकाश—मैंने उन्हें भाग जाने दिया है ।

दीवान—क्यों ?

प्रकाश—शराबबन्दी के लिए ।

दीवान—सुन लो ! सभी विद्रोही इकट्ठा हुए हैं । मुझे नीचा दिखाने का जैसे सभी ने प्रण कर लिया है ! (बंठता है) (प्रकाश से) क्या मिला उन्हें भागने देने से ?

प्रकाश—मैं उन्हें पकड़ना चाहता हूँ ।

दीवान—तो अभी ही क्यों न पकड़ लिया ?

प्रकाश—बाहर पकड़ना चाहता हूँ—यहाँ नहीं—वे बुपचाप नहीं

बैठेंगे ।

फिरोज—शाबास !

प्रकाश—थैकू !—

प्रभास—वे चुपचाप नहीं बैठेंगे !—सच है—चुपचाप तो मुझे बैठना पड़ेगा अब ! बिना शिकायत किए—बिना शोर मचाए बैठना पड़ेगा मुझे !—

फिरोज—तुम्हे दुख हो रहा है ?

प्रभास—मुझे क्या हो रहा है यह तुम्हें कैसे बताऊँ ?—तुम दोनों ने आज तक मुझ पर बड़े उपकार किए हैं—

फिरोज—दोनों ने ?

प्रभास—हाँ । ज़रा उठिएगा पिताजी (दीवान देखता रहता है) कर्त्तव्य-निष्ठ लोग बड़े दूरदर्शी हुमा करते हैं, इसीलिए उनके हाथों बड़े बड़े काम होते हैं । पर ये दूरदर्शी लोग एक बहुत बड़ी गलती किया करते हैं—सभी बड़े आदमियों के चरित्रों में हमें यही बात दिखाई देती है । ये बड़े लोग जब दूर नज़र फेंकते हैं उस समय नीचे अपने पैरों की ओर नहीं देखते । इसी लिए उनके पैरों के निकट रहने वाले लोगों को उनके पैरों के नीचे मुरंग लगाना सुलभ होता है । ठीक समय पर इन बड़े लोगों को जो मुँह की खानी पड़ती है वह इसी दूरदर्शिता के कारण । ज़रा उठिएगा पिता जी ?—(दीवान अनजाने ही उठ कर दूर हटता है । प्रभास कुर्सी की सीट उठाता है) देखिए—शत्रु के रहने के लिए कितना सुरक्षित स्थान है यह—(बोतलें निकाल कर) ये लीजिए मि० प्रकाश—(सब मौन रहते हैं) प्रकाश पड़ा ?

प्रकाश—हाँ, प्रकाश अच्छी तरह से गिरा ।

प्रभास—अब कीजिए मुझे पुलिस के हवाले ।

प्रकाश—नहीं ।

प्रभास—पिताजी का—दीवान साहब का हुकुम होने पर भी नहीं ?

प्रकाश—नहीं । मैंने उन दोनों को क्यों भागने दिया ? आपको पकड़ना था इसलिए ?

प्रभास—उन्हें मुझ से तो बिछुड़वा ही दिया ?

प्रकाश—बिल्कुल ठीक है। अब किसी भी समय उन्हें रंगे हाथों पकड़ लूँगा।

दीवान—शाबास !

प्रभास—देखा फिरोज़, दीवान साहब में का पुत्रवत्सल पिता जाग पड़ा !

फिरोज़—दादा !

प्रभास—डटो मत। सच बोलने का समय यही है ! मणि, इधर आओ। तुम्हें अब पता लगा—मैं शराबी हूँ—नहीं, था। इसके बाद शराब पाने के मार्ग बन्द हो गए हैं, इसलिए मुझे शराब छोड़नी पड़ेगी। अपनी खुशी से नहीं—तुम्हारी खुशी के लिए भी नहीं—मजबूरी से। जिस प्रकार मजदूरों ने शराब छोड़ी उसी तरह—मजबूरी से। अब ये मजदूर मानने लगे हैं—शराब-बन्दी के काम में अब वे ही मदद करने लगे हैं। कौन कह सकता है, जायद वंसा ही असर मुझ पर भी हो जाय ! शराब की आदत पड़ गई थी उसी प्रकार शराबबन्दी की भी आदत पड़ जाय—सख्ती करनी पड़ती है, बन्दी करनी पड़ती है वह इसीलिए तो।

दीवान—तो मानते हो न तुम यह बात ?

प्रभास—(हँस कर) यह मैं कभी का मान रहा हूँ। पर आपके हाथों जो ये अत्याचार हो रहे हैं—

दीवान—मेरे हाथों अत्याचार ?

प्रभास—जी हाँ। गरीबों का यह पैसा क्यों लुटा रहे हैं ?

दीवान—लुटा रहा हूँ ?

प्रभास—हाँ। गरीबों की शराबबन्द हो गई—वे सुखी हो गए। जिस प्रकार किसी समय अमरीका का भला हुआ था उसी प्रकार लगा कि अब हिन्दु-स्तान का भी होगा—तभी आपको यह दुर्बुद्धि हुई—

दीवान—प्रभास !

प्रभास—जी हाँ—दुर्बुद्धि हुई। अमीरों की शराब बन्द करने के लिए आपने प्रतिज्ञा की अमीरों की। शराब कभी बन्द हुई है? मुझी को देख लीजिए, स्वयं पिता के—कठोर दीवान साहब की आँखों में धूल भोंक कर शराब पीता

रहा । क्यों ? इसलिए कि रुपये खनखना रहे थे । इसलिए की सवा रुपये की जगह पच्चीस रुपये उड़ा सकता था ! जब तक रुपया हैं अमीर लोग शराब पीएँगे । सारे भारत से शराब गायब हुए बिना शराबबन्दी नहीं हो सकती, इसके लिए बाहर से आने वाली शराब पर भी प्रतिबन्ध लगाना ज़रूरी है । एक-एक प्रान्त में शराबबन्दी की बात सोचेंगे तो दूसरे प्रान्तों में शराब चोरी चोरी आएगी, समस्त भारत को शुष्क कीजिए पिताजी !

दीवान—(उसकी पीठ ठोंक कर) शाबास मेरे बेटे, शाबास !

[एक ओर से फिरोज़ आकर प्रभास का हाथ पकड़ती हैं, दूसरी ओर से मणि उससे लिपटती हैं—बाहर स्वयंसेवक 'वन्देमातरम्' गीत गा रहे हैं—सब Attention खड़े रहते हैं ।]

[परदा]

ओम् तत्सत्

विषै-गान (ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.००
स्वप्न-भंग (ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.५०
उद्धार (ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.५०
शपथ (सांस्कृतिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.५०
छाया (सामाजिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.००
शतरंज के खिलाड़ी (ऐतिहासिक)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.५०
समर्पण (सामाजिक)	जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'	१.७५
शक-विजय (ऐतिहासिक)	उदयशंकर भट्ट	१.७५
विश्वामित्र और दो भाव नाट्य	उदयशंकर भट्ट	३.००
उर्मिला (ऐतिहासिक)	पृथ्वीनाथ शर्मा	१.००
सुभद्रा-परिणय (पौराणिक)	वीरेन्द्रकुमार गुप्त	२.००
शक्ति-पूजा (पौराणिक)	बी० मुखर्जी 'गुंजन'	१.२५
शान्ति-दूत (समस्यात्मक पौराणिक)	देवदत्त 'अटल'	१.२५
मानव प्रताप (ऐतिहासिक)	देवराज 'दिनेश'	२.००
यशस्वी भोज (ऐतिहासिक)	देवराज 'दिनेश'	१.५०
हर्षवर्धन (ऐतिहासिक)	वेङ्कटनाथ दुग्गल	१.००
रेडियो-नाटक (विभिन्न प्रकार के नाटक)	हरिश्चन्द्र खन्ना	६.००
पग-ध्वनि (गांधी आदर्शों पर आधारित)	आचार्य चतुरसेन शास्त्री	१.५०
वितस्ता की लहरें (ऐतिहासिक)	लक्ष्मीनारायण मिश्र	१.५०
समाज के स्तम्भ (इब्सन) (सामाजिक)	सीताचरण दीक्षित	२.००
आनन्द का राजपथ	सीताचरण दीक्षित	२.००
गधे (सचित्र बालोपयोगी प्रहसन)	हबीब तनवीर	१.००
भूमि कन्या सीता (ऐतिहासिक)	भा० वि० वरेरकर	१.२५
कला के लिए (कलात्मक)	भा० वि० वरेरकर	१.२५
अ-पूर्व बंगाल (सामाजिक)	भा० वि० वरेरकर	१.२५
कोरी करामात (सामाजिक)	भा० वि० वरेरकर	१.५०
गार्गी के बाल-नाटक	पारितोष गार्गी	१.२५
रेलगाड़ी के डिब्बे (एकांकी-संग्रह)	अरुण एम० ए०	२.००
बादलों के पार (एकांकी)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	३.००
आदिम-युग (एकांकी-संग्रह)	उदयशंकर भट्ट	४.००
सफ़र की साथिन (हास्य रस एकांकी)	रामसरण शर्मा	१.७५
एकांकी समुच्चय	जयनाथ 'नलिन'	३.००
ऐतिहासिक दृश्य (सचित्र)	श्यामलाल	१.५०
मनु तथा अन्य एकांकी	लक्ष्मीनारायण मिश्र	प्रेस में